आँखिमे बसल

अशोक



मोन पड़ली स्ट्राब्लोपोलक
टिना। हुनकर कहल गप मोन
। एक दिन अपन एकेटा संतानकेँ
र्ण दुलार दैत श्रीमती भेलेनटिना
रहथि, 'हमरा सभकेँ दोहरा कर्तव्य
ाइत अछि संतानक प्रति। एक
खूनक तथा दोसर राष्ट्रक। राष्ट्र
दू टा हाथ, श्रम कर'वला हाथ,
करैत छी हम सभ...।' आ गौरवसँ
हुनकर आँखि हम तकिते रहि गेल
बड़ मोहक लागल रहय।



प्रकाशित पोथी :
चक्रव्यूह (कविता-संग्रह)
त्रिकोण (सहयोगी कथा-संग्रह)
ओहि रातिक भोर (कथा-संग्रह)
मातबर (कथा-संग्रह)
मैथिल आँखि (निबन्ध-संग्रह)
कथाक उपन्यास उपन्यासक कथा
(मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक अध्
संवाद (वार्त्ता, सम्पादन)

सम्पर्क :
राधाकृष्ण कुंज
सी.पी. ठाकुर पथ
शिवपुरी (पूरब)
पटना- 800023
मो. नं. 089862 69001

ISBN : 978-81-89450-21-2

आँखिमे बसल

यात्रा-कथा

अशोक

इंडिका इन्फोमीडिया
जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

ISBN : 978-81-89450-21-2

आँखिमे बसल

यात्रा-कथा

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2013

मूल्य : 150 टाका

***आवरण* : इंडिका इन्फोमीडिया**

मुख-पृष्ठ : रेडस्क्वायर

प्रकाशक

इंडिका इन्फोमीडिया

नई दिल्ली

फोनः 93509 51555, 93507 50555

मुद्रक

छाबड़ा फाइनआर्ट प्रेस

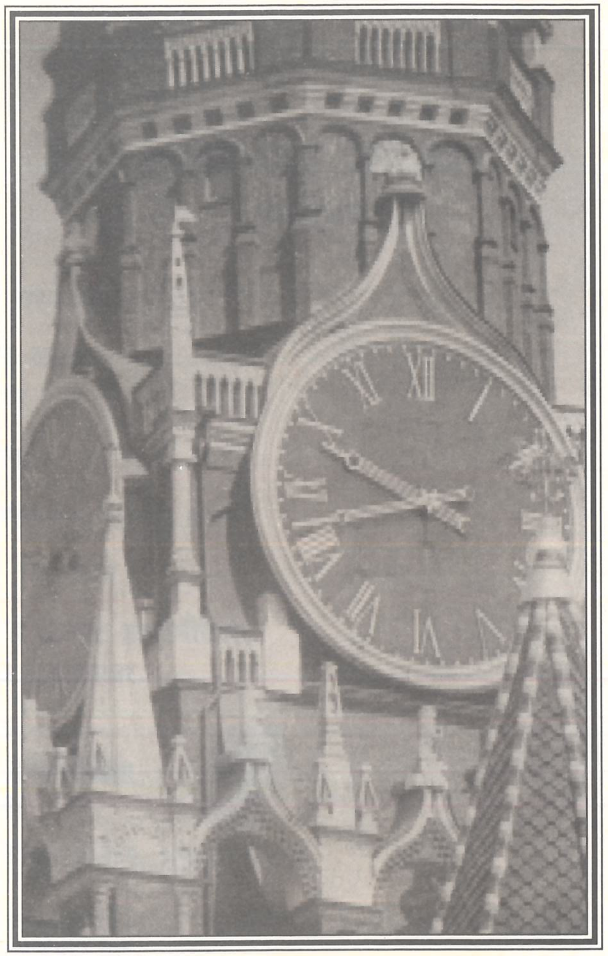
बवाना, नई दिल्ली

AANKHI ME BASAL Yatra-Katha (Travelogue in Maithili)

By Ashok, February 2013, Price : Rs 150/-

माय स्व. नन्दा देवीक

स्मृतिमे



आँखिमे बसल

स्मरण

आइसँ छब्बीस वर्ष पहिने हम रूस गेल रही। मास्कोक उपनगर प्रेलोसकायामे रहलहुँ। ओत' रहिक' तीन मास धरि सहकारिता प्रबन्धनमे प्रशिक्षण प्राप्त केने रही। ओत' घूमल-फिरल रही। मास्कोक अतिरिक्त स्ट्राब्लोपोल तथा लेनिनग्राद (पीटर्सवर्ग) गेलहुँ। ओ तीन मासक जीवन एकदम फराक सन छल। जीवन-यात्रामे एक विलग अनुभूति। ओहिठाम जे देखलहुँ-सुनलहुँ आ पढ़लहुँ-लिखलहुँ तकरा एक डायरीमे टीप लेने रही। चारि-पाँच परिच्छेद लिखने हैब कि तकरबादसँ आलसमे पड़ल रहि गेल। आरम्भिक किछु अंश विभिन्न पत्रिकामे छपबो कयल। मुदा कोनो पत्रिका एहन नहि भेल जे हमरासँ लिखबाक' सम्पूर्ण रूपेँ एहि यात्रा-वृतांत केँ छापि सकितय। ने पत्रिका छापि सकल आ ने हम लिखि सकलहुँ। तथापि जे अंश छपल से हालचाल पत्रिकामे 'आँखि मे बसल सोवियत भूमि' आ 'रूसक नारी एहन होइए' शीर्षकसँ छपल। भाखा टाइम्समे 'जागल आँखिक सपना' शीर्षकसँ छपल। आरम्भक चारि परिच्छेद मैथिली दर्शनमे छपल रहय 'बाटमे' शीर्षकसँ। एहि यात्रा-वृतांतके हम यात्रा-कथा सेहो कहलहुँ। अन्ततः आब ई केहन भेल से त' पाठक रूपमे अहीं सभ कहब। आब जे किछु एतेक दिनमे, एतेक अन्तरालपर लीखि सकलहुँ से पोथीक रूपमे प्रस्तुत अछि।

एहि पोथीक प्रकाशनक समयमे भाइ मोहन भारद्वाज, तारानन्द वियोगी, प्रभात आ शिवशंकर श्रीनिवासक संग अजित कुमार आजाद मोन पड़ि रहल छथि। मोन त' ओ पाठको सभ पड़ि रहल छथि जे एकर छपल किछु अंश पढ़ि प्रसन्नता व्यक्त केने रहथि। मास्कोसँ घुरलाक बाद गाममे

भाइ धीरेन्द्र (मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार) एक आयोजन केने रहथि जाहिमे हम मास्कोक संस्मरण सुनौने रही। डॉ. जयधारी सिंह बेस आबेसँ ओहिठामक गप-सप सुनने रहथि। कतेक गप पर प्रसन्नता आ आश्चर्य व्यक्त केने रहथि। जेठ भाइ सुशील झा सेहो हमरासँ ओतुका गप सभ सुनि बहुत दिन धरि लोककेँ सुनबैत रहैत छलथिन। ओ तीनू आत्मीय लोक आइ नहि छथि मुदा एहि अवसरपर हुनकालोकनिकेँ स्मरण करब आवश्यक बुझैत छी। एहि अवसरपर विजय कुमार मिश्र, नीतिरंजन झा, मंत्रेश्वर झा आ एस.एन. लालक संग अरुण कुमार झा, केशव झा आ महेन्द्र कामति सेहो खूब जोरसँ मोन पड़ि रहल छथि। ई सभ जँ नहि मदति करितथि त' हम मास्को नहि जा सकितहुँ। नीतिरंजन बाबू एहि पोथीक भूमिका लीखि हमर उत्साहवर्धन केलनि अछि। हमरा प्रति हुनक स्नेह आ सद्‌भाव सभ दिन बनल रहल अछि।

पोथीक एहि रूपेँ प्रकाशनमे तारानन्द वियोगी, अजित कुमार आजाद आ प्रभातक योगदान बहुत मूल्यवान रहल अछि। हिनकालोकनिसँ ई अपेक्षा सभ दिन बनल रहत।

अन्तमे, हमरा सभपर दिन विश्वास रखनिहारि धर्मपत्नी पूर्णकला झाक नाम नहि लेब बहुत अनर्गल हैत, किएक त' बिछानो पर पड़ल-पड़ल ओ हमर जिनगीकेँ सम्हारने छथि। हमर कोनो पोथीक प्रकाशनपर हुनकर आँखिमे जे प्रसन्नताक इजोत होइए, से देखबा जोगर होइत अछि।

– अशोक

आमुख

1930 मे, करीब 70 बरखक बएसमे रवीन्द्रनाथ रूस गेल छला। ताहिसँ पूर्व ओ अनेक पश्चिमी तथा पूर्वी उन्नत देश सभक भ्रमण क' चुकल छला। हुनक आकर्षण छलनि अक्तूबर क्रान्तिक बादक रूस, जे ताबत युनाइटेड सोवियत सोसलिस्ट रिपब्लिकक रूपमे परिवर्तित भ' चुकल छल, मे एक नवीन समाज-व्यवस्था वस्तुतः एक नवीन मानवताक सृजन हेतु कएल जाइत प्रयोग सभकेँ देखब आ बूझब। ओहिठाससँ पन्द्रह गोट पत्र ओ अपन परिवारक लोक सभकेँ पठौलनि। से सब पत्र संकलित रूपेँ 'रसियार चिठी' नामसँ प्रकाशित भेल, जकर मैथिली अनुवाद (श्रीमती राजेश्वरी झा द्वारा कएल) 'रूसक चिट्ठी' मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल अछि।

एक पत्रमे रवीन्द्रनाथ कहैत छथि, '...जे किछु देखल, से आश्चर्यक विषय छल। आन कोनो देश जकाँ एकदम नहि लागल। मूलहिमे अन्तर छैक। प्रारम्भसँ अन्त धरि सबकेँ समान रूपेँ जाग्रत करबाक चेष्टा कयने अछि।' रवीन्द्रनाथ चकित छला एक निर्धन, अशिक्षित, शोषित समाज केँ उन्नत, शिक्षित, शोषणविहीन समाज मे परिवर्तित करबा लेल जे प्रयास रूस मे तखन चलि रहल छल, तकरा देखि क'। एना बुझा पड़लनि जे हुनक कल्पनाक समाज रूसमे निर्मित भ' रहल छलैक। तैं ओ लिखने छथि, 'एतय नहि अयलासँ एहि जन्मक तीर्थ-दर्शनक व्रत अपूर्ण रहि जइतैह।'

बुझा पड़ैत अछि जे अशोक सेहो तेहने उत्साह, जिज्ञासा आ मनोभाव ल'क' रूसक यात्रा कयने छला। सृजनरत मुक्त श्रमक क्रांतिकारी प्रयास

देखिक' ओहो तहिना मुग्ध भेला जेना रवीन्द्रनाथ। तैं अपन मित्र कए सम्बोधित करैत ओ कहैत छथि :

एहि देशक विकास की कहियह, दोस!
एहिठाम जेना कलम चलैए
तहिना कोदारियो चलै छै

एहिठाम लोक खूब पढ़ैये
खूब हँसैये, नचैये, गबैये
राति-दिन श्रम करैये।

अपन गामक (अर्थात् अपन देशक) अनेरो माछी मारैत लोक सबके देखि जेना ओ कराहि उठैत छथि :

पसीनासँ उपजल संतोष आ उल्लास
श्रम आ सृजनक सुख
कोना भोगि सकत?
संकल्पक संग चलैत
प्रगति दिस बढ़ैत पगध्वनि
कोना सुनि सकत?
टघरल घामक विश्वास की कहियह दोस!
एहि देशक विकास की कहियह दोस!

रविन्द्रनाथक रूस यात्राक एकटा विशेष उद्देश्य छलनि ओहिठामक शिक्षा-पद्धतिकेँ देखब। शिक्षा-पद्धतिक सम्बन्धमे हुनकर एक खास दृष्टिकोण छलनि, सिद्धान्त छलनि। ओहिठामक शिक्षण-प्रणाली देखिक' ओ 'विशेष विस्मित' भ' गेला। ओ कहैत छथि,

'शिक्षाक प्रभावेँ आठ वर्षक अभ्यन्तरे लोकक मनक स्वरूप बदैल गेलैक अछि। जे सब बौक छल, तकरो सभक बकार आब फूटय लगलैक अछि। जे लोकनि अक्षम छलाह, तनिकहु आत्मशक्ति आब जाग्रत भेल छन्हि। ओ सब समाजक अन्धकूपसँ बाहर आबि समकक्ष स्थानक अधिकारी भेल ठाढ़ अछि। एतेक अधिक संख्याक लोकक एतेक द्रुत गतिसँ भावान्तर होयब कल्पनातीत अछि। एकरा सभक एतेक दिनक मुइल नदी मे एहि रूपक उद्दाम धाराक बाढ़ि देखि मन पुलकित भ' उठल अछि। एकरा सभक नव-नव आशाक कुंज दिगदिगन्तकेँ आलोकित केने अछि। जीवनधारा सर्वत्र वेगवान छैक।'

रवीन्द्रनाथक यात्राक करीब पचपन बरख बादो अशोक रूसमे कर्मक वैह उद्दाम धारा देखि पुलकित भ' उठल छला। तैं लेनिनक जन्मदिन पर जखन सम्पूर्ण देश सामूहिक श्रमदानसँ सफाइ अभियानमे लागि 'सबोतनिक' मना रहल छल, तखन ईहो ओकरामे शामिल भ' 'सामूहिक श्रमक अपूर्व सुख' उठाब' लागल रहथि। श्रममे एतेक सुख छै, से हिनका पहिने बूझल नहि रहनि।

'प्रेस्तोरिका' आ 'ग्लासनोस्त'क बाबजूदो रूस 1985 ई. मे सोवियत व्यवस्था कैं पूर्णरूपेण छोड़ने नहि छल। किंतु रवीन्द्रनाथ जाहि युगांतकारी व्यवस्थाक प्रारम्भिक रूप देखने छला आ रूस आबि ओ जे एकटा 'विराट चित्तक स्पर्श अनुभव केने छला एवं घोषणा केने रहथि, 'ई सब वस्तुतः विश्वकर्मा थीक, ई सब विश्वमना होबय चाहैत अछि।' 1980क दशक अबैत-अबैत रूससँ 'विश्वकर्मा' रूप धूमिल भ' गेल छल। अशोक जखन ओत' पहुँचला त' हुनका जे किछु देखाय पड़लनि ओ समाजवादक दमकैत, कांतिमय रूप नहि छल। स्टालिन युगक सर्वसत्तावादी राज्य अपन आंतरिक विरोधाभासक दबाबमे धीरे-धीरे ओहि खेमामे प्रवेश क' रहल छल जकरा पर साम्राज्यवादी पूंजीवादक आधिपत्य छलैक।

रूस 1985 ई. मे सोबियत व्यवस्थाकैं पूर्णरूपेण त्यागने नहि छल। किन्तु रवीन्द्रनाथ जाहि युगांतकारी व्यवस्थाक प्रारम्भिक रूप देखने छला आ रूस आबि जे एकटा 'विराट चित्तक स्पर्श' अनुभव केने छला एवं घोषणा केने रहथि जे 'ई सब वस्तुतः विश्वकर्मा थीक, ई सब विश्वमना होबय चाहैत अछि।' 1980क दशक अबैत-अबैत रूसक से विश्वकर्मा रूप धूमिल भ' गेल छल। अशोक जखन ओत' पहुँचला त' हुनका जे किछु देखाय पड़लनि ओ समाजवादक प्रछन्न, दमकैत रूप नहि छलैक। तइयो ओ रूप एतेक आकर्षक छलै जे ओ मुग्धभावसँ बाजि उठला, 'एहि देशक

विकास की कहियह दोस!'

अशोकक मनक ई भाव मात्र हुनकेटा नहि छियनि। दुनिया भरि मे जत' जे केओ वर्तमानसँ ऊबल छथि आ एक शोषणविहीन, स्वस्थ, समतावादी समाजक कल्पना सदिखन करैत छथि, ओ लोकनि सोवियत यूनियनक पराभवसँ मर्माहत होइत अशोकक संगे कहय चाहैत छथि, '...रूसक स्थितिमे जेहेन परिवर्तन आयल हो, ओहिठामक समाज जतेक आगू बढ़ि गेल अछि ताहि मे पटरीसँ एकदम नीचाँ उतरि जायब सम्भव नहि थिक।' आमीन!

अशोकक 'आँखिमे बसल' ई यात्रा-कथा सत्ते कोनो पाठकक आँखिमे बसि जेतैक। आँखियेटा मे नहि, मनोमे बसि जेतैक। एतेक रोचक, मन के सम्पूर्ण रूपँ आच्छन्न कर' बला, गुदगुदाबै बला यात्रा-वृत्तांत मैथिली साहित्यमे भेटब प्रायः मुश्किल। पुस्तकमे छोट-छोट घटना सभक एहन मनोरंजक वर्णन अछि, एहन मर्मस्पर्शी भाषामे तकरा सभ के लिखल गेल अछि कि पढ़ैत काल पाठक बेर-बेर कहि उठता–वाह!

रूस सँ विदाकाल मास्को एयरपोर्ट पर उपस्थित कएल दृश्य अशोकक लेखनी कैँ क्लासिकी स्तर पर पहुँचा देने अछि।

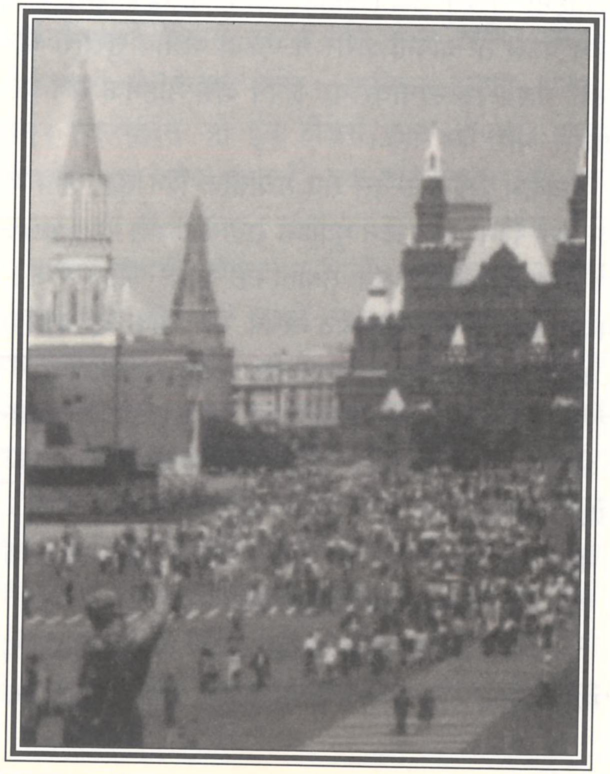
हम विश्वास संगे कहि सकैत छी जे 'आँखिमे बसल' मैथिली साहित्यक रत्नागार मे स्थान पाओत।

नीतिरंजन झा

पटना
18-06-2012

एक

मइ मासक नौ तारीख रहय। रातिक दस बाजि रहल छल। मुदा एखने थोड़े काल पहिने सूर्य अस्त भेल छल। बूझू त' आब ओत' साँझ भ' रहल छल। सुदूर आकासमे लाल टरेस सूर्यक लाली एखनहुँ खतम नहि भेल छलय। मास्को शहर सेहो लाल टरेस लागि रहल छल। ठाम-ठाम ललका



ऐतिहासिक रेडस्क्वायर

बैनर, पताका, झंडा टांगल। सम्पूर्ण सोवियत संघमे फासिस्ट जर्मनी पर विजयक चालीसम वार्षिक समारोह बेश धूमधामसँ मनाओल जा रहल रहय। रंग-विरंगक कपड़ा सभमे सजल लोकक झुंड सड़क पर उमड़ि आयल। नचैत-गबैत...। विजयक उल्लासमे हुर्रा-हुर्राक जयघोष करैत। बूढ़, जवान, बच्चा, स्त्री-पुरुष सभक उत्साह आ उल्लास अपूर्व लागि रहल छल। आतिशबाजी होइत रहल। आकाश रोशनीक मनोहारी दृश्यसँ जगमगाइत रहल। रेड स्क्वायर बिजलीक अनुपम रंग-बिरंगी रोशनीमे अपन सौभाग्यपर मोहित भ' रहल छल। महान ऐतिहासिक स्थलोक अपन ऐश्वर्य होइत छैक। छवि होइत छैक। मास्कोक रेड स्क्वायर दर्शनीय स्थल अछि, ताहिमे ककरो संदेह नहि भ' सकैत अछि। एहीठाम विश्वक महान श्रमिक नेता सोवियत संघक संस्थापक लेनिनक पार्थिव शरीर ओहिना राखल छल। ओहि महान आत्माक शरीरक दर्शन केने रही। मोन पड़ल त' अपनो शरीर मे एकटा अजीव सुरसुरी नीचासँ ऊपर धरि पसरि गेल। रेड स्क्वायर पर अपन दोस-महिमक संग बुलैत-टहलैत गौरवबोधसँ भरि गेल रही।

एक्कैस अप्रैल उन्नैस सए पचासीक दिन छल ओ। ब्लादमीर ई. लेनिनक जन्म दिन। एक दिन पूर्वहिंसँ समारोह चलि रहल छल। आइ छल श्रमदान दिवस। एकरा रूसमे सबोतनिक कहल जाइत छैक। ज्ञात भेल जे श्रमदान दिन सम्पूर्ण सोवियत संघमे सभ लोक जे जत' काज करैत अछि, ओहि दिनुका दरमाहा नहि लैत अछि। दरमाहाक सभटा राशि सरकार लग जमा भ' जाइत छैक। मुदा, लोक ओहि दिन आन सामान्य दिनक अपेक्षा बेसी काज करैत अछि। फैक्टरी सभमे उत्पादन आन दिनसँ बेसी होइत अछि। कृषि फार्म सभमे लोक बेसी काज करैत अछि। श्रम छोड़ैत नहि अछि। देश लेल श्रम करैत अछि। बेसिए काज करैत अछि। श्रमक मात्र औपचारिकताक निर्वाह नहि करैये।

अजुका दिन लोक अपन घर लगक सड़क, फुलवारी, आम ओ खास स्थान सभकेँ सेहो साफ करैत अछि। कूड़ा-करकट हटबैत अछि।

शीत ऋतुमे जमा बर्फ जेँ कि घमि गेल रहैत अछि, तैं ओहि तर दबल खर-पात केँ साफ करब ओहि समयमे जरूरी भ' जाइत छैक। एहि मामिलामे लोक म्युनिसपैलिटी अथवा सरकारी कर्मचारीक भरोसे नहि रहैत अछि। वास्तवमे एहि जरूरी सफाइ अभियानकेँ श्रमदानसँ जोड़ि, एक पर्वक रूप द' श्रमकेँ प्रतिष्ठा देबाक अपूर्व उदाहरण भेटल रहय हमरा सभकेँ। हमहुँ सभ श्रमदान केने रही। होस्टल लगक फुलवारी सभके साफ केने रही। ग्रूप लीडरक आदेशसँ हम सभ पाँच-छह गोटे पहिने तँ अनमन्यस्क भावेँ काज करबा लेल गेलहुँ ओभरकोट आदि पहिरनहि। सोचने रही जे कनेककाल काजक नाटक क' चल आयब। श्रमदानक औपचारिकता पूर्ण भ' जायत। जान बाँचत। मुदा से भेल नहि। पहिने जमल कूड़ा-करकटकेँ कोदारिसँ दू गोटे काटब शुरु केलनि। किछु गोटे ओकरा उठाक' बगलमे ठाढ़ ट्रकमे राखय लगला नहुँए-नहुँए। कोदारिसँ कटनिहारकेँ ठीकसँ काटल नहि होइत रहनि। होस्टलक एक महिला अधिकारी से देखैत रहथि। आबिक' हुनका ठीकसँ काटब सिखौलथिन। तकरबादसँ ओ दूनू ठीकसँ काट' लगला। हमहूँ ठीकसँ लोहाक तगाड़ीमे कूड़ा उठब' लगलहुँ। एक गोटे ट्रकपर चढ़ि गेल रहथि। ओ ट्रकपर कूड़ा आ लोहा-लक्कड़ राख' लगला। आब हमरा सभकेँ जोश आबि गेल रहय। घामसँ लथपथ भ' गेलहुँ। ओभरकोट आ स्वेटर सभ हटाब' पड़ल। मुदा तीन-चारि घंटामे काज खतम कइएक' दम लेलहुँ। पूरा ट्रक भरि देलियैक। थोड़ेक कालक बादे देखने रही जे छबो गोटे एक सामूहिक प्रक्रियासँ काज करब शुरु क' देने छी। दू गोटे कूड़ा काटि रहल छल। तगाड़ीमे राखि रहल छल। तीन गोटा विभिन्न बिन्दुपर ठाढ़ भ' भरल तगाड़ीकेँ एक दोसराक हाथमे द' रहल छलहुँ। ट्रकपर चढ़ल संगी कूड़ाकेँ ट्रकमे फेकि रहल छल। फेर तगाड़ी वापस होइत छल आ कोदारि लग पहुँचैत छल। हाथक सम्मिलित शक्तिसँ। हमरालोकनिकेँ आनन्द आब' लागल। सामूहिक श्रमक अपूर्व सुख उठाब' लागल रही। श्रममे एत्ते सुख छै से बूझल नहि रहय। अन्मन्यस्कता सम्पूर्ण रूपेँ समाप्त छल।

श्रमदानक बाद हमरा सभक उल्लास देखबा जोगर रहय। एहन अनुभव नहिएँ जकाँ छल। अनको यैह हाल रहनि। श्रमदानक बाद कपड़ा आदि साफ कयल। खूब मोनसँ नीक जकाँ स्नान कयल। स्नानक बाद जखन अपन बिछानपर अयलहुँ त' कनीकालक बाद कविता लिखबाक इच्छा भेल रहय। लिख' लागल रही कविता–

एहि देशक विकास की कहियह दोस!
एहि ठाम जेना कलम चलैए
तहिना कोदारियो चलै छै।
कलम चलब' बला हाथ के
कोदारि चलबैत
एक्कोरत्ती लाज नहि होइ छै।
मात्र फोटो छपाब' लेल
कियो श्रम नहि करैए।
एहि ठाम लोक
खूब पढ़ैये
खूब हँसैये, नचैये, गबैये
राति-दिन श्रम करैये।
श्रम एहिठामक खूनमे छैक
आ खून लाल होइत छैक
से तोरा बुझले छह।
लोकक हाथमे जेना
जादू भरल छैक एत'
निर्णयक इतिहास की कहियह दोस!
एहि देशक विकास की कहियह दोस!
मोन पड़ैये गामक चौक
भिनसरसँ साँझ धरि
तमाकू चुनबैत, गप लड़बैत

अखबारक पन्ना पर
राजनीति करैत लोक।
सालमे चारि बेर भोट दैत
भोट द' क' फोंफ कटैत
अजुका काज काल्हि पर टारैत
अनेरे बैसल माछी मारैत लोक।
पसीनासँ उपजल
संतोष आ उल्लास
श्रम आ सृजनक सुख
कोना भोगि सकत?
संकल्पक संग चलैत
प्रगति दिस बढ़ैत पगध्वनि
कोना सुनि सकत?
कोना सुनि सकत दोस?
टघरल घामक विश्वास की कहियह दोस!
एहि देशक विकास की कहियह दोस!

कविता किछु दिनक बाद मित्र विभूति आनन्द के पठा देलियनि। ओ ओहि समय पटनामे मिथिला मिहिरमे काज करैत छला। मिथिला मिहिरमे छपल रहय कविता।

लेनिनक जन्म दिनपर एक सभा आयोजित भेल रहय। आन अनेक देशक लोकक अछैत मात्र भारतकेँ ओहिठाम बजबाक सम्मान देल गेल छल। हमरा सभक ग्रुप लीडर श्री आर. भेलू ओत' बाजल रहथि। भारत-सोवियत मैत्री पर अभिमान केने रहथि। हमरा सभ दू घंटासँ बेसी पंक्तिमे ठाढ़ रहलाक बाद लेनिनक पार्थिव शरीरक दर्शन क' सकल रही। लोक सभ चुपचाप पंक्तिमे ठाढ़ छल। श्रद्धा आ स्नेहसँ अभिभूत सभक मुखमंडल देखि हमरा नेता आ नेतृत्वक महानताक बोध भ' रहल छल। ग्रेफाइट पाथरसँ बनल मूसोलियममे प्रवेशसँ पहिने सजल-धजल दू टा

सैनिककेँ ध्यानसँ देखने रही। दूनू सैनिक द्वारिपर पहरा द' रहल छल। अरे, ई त' जीवित मनुक्ख थिक। दूरसँ त' एकदम पाथरक मूर्ति बुझाइत रहय। पंक्तिमे ठाढ़ हम सभ एक दोसरासँ बाजी लगबैत रही जे दूनू सैनिकक पिपनी खसैत-उठैत छैक कि नहि। हम सभ कोनो संचार नहि देखियैक दूनूक देहमे। एकदम एटेंशनमे पाथर सन। कठोर अनुशासन ओ कर्तव्य भावनाक हार्दिक संस्पर्शक बिना एना कोना संभव छलैक? मोनमे उठैत एही विचारक संग मुसोलियममे प्रवेश क' गेल रही।

एकटा शीशाक ताबूतमे कोट-पैंट-टाइ पहिरने महान लेनिन सूतल छला जेना। चेहरापर एहन भाव जेना गाढ़ निद्रामे होथि। गाढ़ निद्रोमे एकटा मुसकी हुनकर ठोरपर सटल छल। कनियो कोनो तनाओ नहि। सौम्य पसरल रहय चेहरापर। ओह, इएह चारि फूटक मनुक्ख एहेन पैघ काज केलक? अत्याचारी जारक शासनसँ मुक्ति दियौलक। सर्वहाराक राज कायम केलक। हमरा समक्ष पढ़ल-सुनल इतिहास जेना चलचित्र जकाँ चल' लागल। कनेकाल लेल ठकमूड़ी लागि गेल। मुदा बेसीकाल एहि अवस्थामे नहि रहि सकैत छलहुँ। अपन स्थानसँ आगू ससरबाक छल। दर्शनार्थीक बहुत पैघ लाइन लागल रहय। हमरासँ पाछू सेहो लोक प्रतीक्षारत अछि से बोध आ क्रमशः ससरैत रहबाक अनुशासनसँ ध्यान भंग भ' गेल। मूसोलियमसँ बाहर निकलि आयल रही। लेनिनक सौम्य चेहरा बहुत दिन धरि मोनमे घूमैत रहल। दर्शनक ओहि ऐतिहासिक क्षणक स्मृति आइयो रोमांचित करैत अछि।

रेड स्क्वायरेपर क्रेमलिन अछि। जत' सोवियत संघक सर्वोच्च नेता सभक बैसक होइत अछि। जत' विचार जन्म लैत अछि। विकासक कार्यक्रम बनैत अछि। शांतिक लेल शपथ लेल जाइत अछि। एत' अन्य अनेक ऐतिहासिक भवन, कलात्मक मूर्त्ति आदि सेहो लोकक ध्यान आकर्षित करैत रहैये। रेड स्क्वायरक विस्तृत प्रदेशमे कहियो लेनिनक गंभीर आवाज गूंजल होयत। महान क्रांतिक जयघोष आ प्रगति लेल कयल गेल शपथ प्रतिध्वनित भेल होयत।

ओहि दिन सेहो अर्थात् नौ मई के ओहि स्थान पर विभिन्न तरहक सैनिक तथा द्वितीय विश्वयुद्धमे भाग लेनिहार सैनिक ऑफिसरक भव्य परेड भेल छल। विभिन्न अस्त्र-शस्त्रक झाँकी सेहो देखाओल गेल रहय। क्रेमलिन पर अज्ञात वीरगति प्राप्त पुरुष आ ललनाक सम्मानमे अनवरत जरैत ज्योति लग अपन श्रद्धासुमन चढ़ेबाक लेल करीब एक किलोमीटरक लंबा लाइन लागल रहय। देशक वीर सैनिकक लेल बहुत सम्मान अछि एहिठामक लोकमे। वस्तुतः देशेक प्रति अर्पूव निष्ठा आ सम्मान अछि। हमहुँ सभ श्रद्धासुमन चढ़ौने रही।

ओहि देशक लोककेँ मोनसँ एखनहुँ द्वितीय विश्वयुद्धक भयानक छाया नहि हटलैक अछि। जान-मालक बड़ नोकसान भेल रहैक ओहि युद्धमे। करीब दू करोड़ लोक शहीद भेल रहय। सत्तरि हजारसँ बेसी गाम पूर्णतः अथवा अंशतः समाप्त क' देल गेल छल फासिस्ट जर्मनी द्वारा। करोड़ो टाकाक नोकसान भेल रहय। मुदा सम्पूर्ण राष्ट्र एक भ' हिम्मति नहि हारने छल। अन्तमे सोवियत संघक विजय भेल रहैक। एही कारणसँ रूसक लोक ओहि युद्धकेँ महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध (Great Patriotic War) कहैत अछि। वास्तवमे जर्मनीक सेना त' युद्धक प्रारम्भमे प्रदेशपर प्रदेश जीतैत चल गेल। बहुत स्थानपर अपन कब्जा क' लेने छल। मास्को दिस बढ़ैत चल आयल रहय। मुदा अन्तमे पासा पलटि गेल रहैक। अनेक लोक भेटल रहय जे ओहि युद्धमे भाग लेने रहय। हम सभ देखने रही अनेक भूतपूर्व सैनिक सभकेँ। छातीपर दर्जनो मेडल टंगने गौरवसँ इतराइत घूमैत-झूमैत...। अपनाकेँ गौरवान्वित अनुभव करैत। हमरा सभक इन्स्टिच्यूटमे सेहो एक प्रोफेसर रहथि जे ओहि युद्धमे भाग लेने छला। ओहि युद्धमे गोली लगलासँ हुनक एक हाथ कटि गेल रहनि। अपन जुआनीक फोटो सभ देखबैत हुनकर चेहरापर जे गौरवबोध उपजल रहय से आइयो मोन पड़ैत अछि। मिस्टर भेलारिन नाम रहनि हुनकर। हम भारतीय सभ सेहो ओहि दिन नौ मईकेँ एक भव्य परेडमे भाग लेने रही। हमर सभक ग्रूप लीडर आर. भेलू एक नीक भाषण देने

रहथि ओहि अवसरपर। श्री भेलू बादमे सरकारी सेवासँ अवकाश प्राप्तिक बाद सांसद भेला। केन्द्रमे मंत्रियो बनला। रेलमंत्री श्री लालू प्रसादक संग रेल राज्यमंत्री।

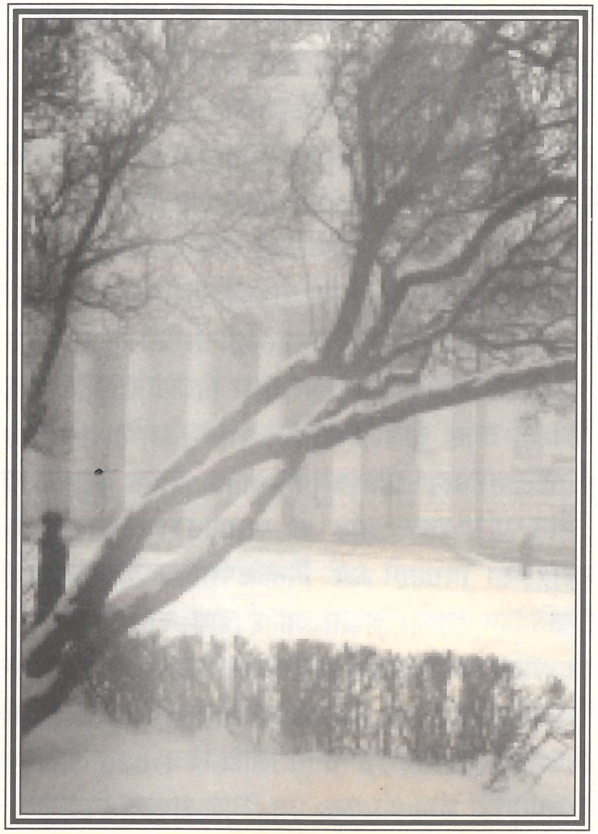
ओहि महान देशभक्तिपूर्ण युद्धक त' आब बरसो बीति गेल अछि। सोवियत संघो आब नहि रहल। मुदा तैयो ओहिठामक लोक ओहि युद्धकेँ बिसरल नहि हैत। ओ युद्ध सदैव रूसक लोककेँ शांति लेल प्रेरित करैत रहतैक। आबो नौ मईकेँ ओहिना समारोह होइते हेतैक। रंग-बिरंगक कपड़ा पहीरि सजल-धजल लोकक झुंडक-झुंड सड़कपर उमड़िते होयत। नचैत-गबैत। विजयक उल्लासमे हुर्रा...हुर्रा...क जयघोष करैत। ओहि दिनक जयघोष आइयो हमरा कानमे ओहिना गूंजि रहल अछि। आइयो सोवियत भूमि हमर आँखिमे ओहिना बसल अछि।



रेड स्क्वायर पर ललन सिंह आ दलसिंहरायक संग

दू

फगुआक छुट्टीक बाद गामसँ पटना आयल रही। हमर दोसर बालक प्रभातक जन्म भ' गेल रहनि। चारिये मासक रहथि ओ। बच्चा छोट रहबाक कारणे ओहि खेप कनियाँ संग नहि आयल छली। ओहि समयमे



मास्कोक वसंत

बिहार स्टेट हाउसिंग कोऑपरेटिव फेडरेशनमे पदस्थापित छलहुँ। एगारह मार्च उन्नैस सय पच्चासीकेँ ऑफिस पहुँचतहिं एक टेलीग्राम टेबुलपर राखल भेटल। भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ, दिल्ली द्वारा मास्कोमे प्रशिक्षणमे जेबाक हेतु तेरह मार्च धरि दिल्ली पहुँचबाक निर्देश छल। सहकारिता प्रबंधनक प्रशिक्षण। डिप्लोमा कोर्स। तीन मासक। जेबाक लेल दू दिन हाथमे। कोना जा सकब? कोना सभ कागज-पत्र तैयार भ' सकत, नहि सोचि पाबि सकल रही। श्री विजय बाबू (श्री विजय कुमार मिश्र, अध्यक्ष, हाउसिंग फेडरेशन) जहिना कहलनि तहिना हमर चयन त' प्रशिक्षण लेल करा देलनि, मुदा आब जेबासँ पूर्वक औपचारिकताकेँ पूर्ण करब हमरा कठिन बुझा रहल छल। हम बेस सुस्त लोक छी। अजुका काज काल्हिपर टारैत चलि जायब हमर पुरान हिस्सक अछि। बूझल रहय जे कहियो, कखनो बजाहटि आबि जायत। मुदा तैयो कोनो कागज-पत्र तैयार नहि केने रही। सभ काज, जेना पासपोर्ट, स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रमाण-पत्र, सरकारक अनुमति आदि करबाक रहय। ई सभ विदेशयात्रा लेल जरूरी छल। ताहिपरसँ एतेक कम समय। हड़बड़ा गेल रही। सभसँ पहिने त' दिल्ली फोन क' एक सप्ताहक समय प्राप्त केलहुँ। बहुत दिक्कतसँ समय भेटल। ई एक सप्ताह कोना बितेलहुँ से लिखल नहि जा सकैये। कहल नहि जा सकैये। आशा आ निराशामे झुलैत कोना हम एक सप्ताह कटलहुँ तकर साक्षी किछु बन्धु, मित्र छथि।

ओहि सप्ताह भरिक समयमे अनेक रोचक अनुभव भेल। एकटा गप जे मोन पड़ि रहल अछि से पासपोर्ट लेल सरकारक अनापत्ति प्रमाण-पत्र रहय। विभागमे एक दिन उपसचिव कहलनि जे निगरानीक स्वच्छता प्रतिवेदन चाही। जखन ओ ई बात कहलनि तखन पाँच बाजि गेल छल। ऑफिसक बन्द होयबाक बेर भ' रहल छल। हमरा भेल जे फेर आइ काज नहि भेल। हम नेहोरा-मिनती केलहुँ जे एकटा चर्या टिप्पणी संयुक्त निबन्धक (निगरानी)क नामसँ लिखि दिअ'। हम ओहीपर निगरानीसँ लिखाक' आनि दैत छी। श्री एस. एन. लाल संयुक्त निबन्धक (निगरानी) छला। ओ हमरा जनैत रहथि। हम चर्या टिप्पणी ल' हुनका लग गेलहुँ।

सभटा बात कहलियनि। ओ मास्को जेबाक बात सुनि प्रसन्न भेला। मुदा कहलनि जे प्रशाखा पदाधिकारीसँ लिखाक' आनि दिअ'। तखन ओहि आधारपर हमहुँ लीखि देब। प्रशाखा पदाधिकारी ऑफिसमे नहि रहथि। भरिसक डेरा चलि गेल रहथि। आब हम फेर पराभवमे पड़लहुँ। फेर लाल साहेबकेँ नेहोरा केलहुँ। कहलियनि जे 'हमरा विरुद्ध निगरानीमे किछु नहि अछि। कोनो फाइल नहि चलि रहल अछि। तैं अहाँ सोझे से बात लिखि दिऔक। हिनका विरुद्ध किछु नहि अछि। प्रतिवेदन शून्य अछि।' ओ कनेकाल असमंजसमे पड़ल रहला। फेर अकस्मात कहलनि जे 'अपन दहिना हाथ देखाउ त'।' हम अपन दहिना हाथ हुनका आगू पसारि देलहुँ। ओ हमर हाथ अपन हाथमे लेलनि। उनटा-पुनटाक' देखलनि। हाथ महक कोनो रेखापर जेना नजरि पड़लनि। ओ प्रसन्न भ' उठला। हमर हाथकेँ दबबैत बजला, 'अहाँकेँ के रोकि सकैत अछि? हाथमे विदेश-भ्रमण स्पष्ट लिखल अछि।' ओ लगले चर्या टिप्पणीपर लिखलनि, 'हिनक विरुद्ध प्रतिवेदन शून्य अछि।' ओ अपन हस्ताक्षर क' टिप्पणीक कागज हमरा हाथमे द' देलनि। हमरा बहुत प्रसन्नता भेल। कहलियनि, 'धन्यवाद सर! अहाँ यदि जोतखी नहि रहितहुँ त' आइ स्वच्छता प्रतिवेदन कोना भेटितय?' ओ भभाक' हँसला। हम चर्या टिप्पणीकेँ ल' जा क' उपसचिवकेँ द' देलियनि। ओ तकरा फाइलमे लगाक' आगू बढ़ा देलनि।

तकरबाद पासपोर्ट बनल। पासपोर्ट लेल हमर सहकर्मी रमानुज बाबू बहुत मेहनति केलनि। हाथे-हाथ सभटा काज कराक' दू दिनमे पासपोर्ट हमरा द' देलनि।

बीस मार्चकेँ पटनासँ दिल्ली लेल प्रस्थान क' सकल रही। दिल्लीमे सेहो तीन दिन लागल। यदि ओहि दिन नहि पहुँचितहुँ त' हमर जेबाक कार्यक्रम स्थगित क' देल जाइत। मुदा संयोग नीक छल। अंतिम समयमे पहुँचि गेल रही। भारतसँ विभिन्न प्रान्तक पच्चीस गोटे ओत' गेल रही। बाइस गोटे हमरासँ पहिनहि पहुँचि चुकल छला। तीन गोटे, हम, अशरद जमाल आ मीना घटगे, तेइस मार्चक रातिमे करीब सबा एगारह बजे विश्वक एक महान शक्तिशाली आ भारतकेँ विपत्तिमे संग दिअ'

बला मित्र देश लेल हवाइ जहाजसँ प्रस्थान केने छलहुँ। हम तहिया धरि दिल्लियो नहि गेल रही। हवाइ जहाजपर चढ़बाक अवसर सेहो दिल्ली यात्रासँ पूर्व नहि भेटल रहय। जहाज उड़ब शुरु केलक त' एक विचित्र प्रकारक मिश्रित भाव मोनमे उमड़ि आयल। अपन देशसँ बढ़ि, अपन लोकसँ बढ़ि आर की होइत छैक? एक अनजान अपरिचित दिशामे बढ़ैत हमर मोन कोनादन कर' लागल। परिचित नजदीकी लोक सभ मोन पड़' लागल। माय, जे एत्ते दूर जेबाक नाम सुनिते डेरा गेल रहथि, नेहोरा-मिनती कर' लागल रहथि जे नहि जाउ यौ...। बूढ़ बाप, चारि मासक छोटका बेटा, चारि बरसक जेठका, कनियाँ आ जेठ भाइक चेहरा बेर-बेर आँखिमे हुलुक-बुलुक कर' लागल। नोर आँखिमे आबि गेल रहय। नोरेक संग अरुणजी, केशव, महेन्द्रा सेहो चलि आयल रहथि। विजय बाबू, नीतिरंजन बाबू, मंत्रेश्वर बाबू मोन पड़ि रहल छला। अयबासँ पूर्व मानसिक तनाओमे झुलैत मोनकेँ आशा आ विश्वास देनिहारकेँ कोना बिसरल जा सकैये? जखन सभ दिन साँझमे शून्य लेने घुरैत रही डेरापर त' संगमे अरुणजी रहल करथि। विश्वास दिअबैत। धैर्य दैत। डेरापर केशव रहथि सदिखन किछु करबा लेल उद्यत। महेन्द्रा रहय मोनकेँ गमैत। कोना बिसरि सकैत रही सभकेँ? कोना बिसरि सकैत छलहुँ विजय बाबूक उदारताकेँ? एस. एन. लालक विश्वासकेँ? नीतिरंजन बाबू द्वारा प्रदान कयल आन्तरिक बलकेँ? मंत्रेश्वर बाबूक सहयोग आ ज्ञानकेँ? कोना बिसरि सकैत छलहुँ?

अयबाक हड़बड़ीमे गामो नहि जा सकलहुँ। बिदा हेबा काल ककरोसँ भेंटो नहि भ' सकल। लागल नोर आब खसि पड़त। कियो देखि नहि लिअय। नोरकेँ चोराक' रूमाल सँ पोछि लेने रही। खिड़कीसँ बाहर देखबाक प्रयास कर' लगलहुँ। आब हवाइ अड्डाक नियोन लाइट सभ पाछू छूटि गेल छल। बाहर सौंसे अन्हार भ' गेल छल। किछु नहि देखाइत रहय। हम फेर भीतर घुरलहुँ। क्रमशः तमाम चिंता-फिकिर, तनाओ पिघलि रहल छल। एक नब कौतूहल, नब उल्लासक जन्म भ' रहल छल। केहेन होयत रूस? केहेन होयत ओहिठामक लोक? बहुत किछु सुनने रही,

पढ़ने रही ओहि देसक मादे। विश्वक प्रथम समाजवादी देशमे तीन मास बितेबाक उल्लास आ सुनल-पढ़ल ज्ञान जखन करिया-झुमरि खेलाय लागल त' नीन कत' उड़ि गेल से नहि जानि। सुतबाक त' इच्छे नहि भेल। जहाजमे भोजन देल गेल। भोजनक संग वाइन (एक प्रकारक शराब) देल गेल। वाइन कने अम्मत लागल। पहिल बेर पीने रही। एहिसँ पूर्व कोनो शराब नहिएँ जकाँ पीने रही। जहाज बीचमे एक घंटा ताशकन्दमे ठहरल। बाहर भ' जखन सोवियत संघक धरतीपर पैर देलहुँ त' नब पैर भेल नेना जकाँ दौड़बाक इच्छा कर' लागल। ताशकन्दमे ओहि समय 10 डिग्री से. तापमान रहैक। बहुत जाड़क अनुभव नहि भेल। बरदास्त क' लेने रही। मुदा जखन मास्को हवाइ अड्डासँ बाहर निकलल रही त' ततेक ठंडाक अनुभव भेल जे सिहरि उठलहुँ। अपना भरि गरम कपड़ा पूरा पहिरने रही। लेकिन कपड़ा जेना एक क्षणमे पानिमे भीजि गेल। पानि भ' गेल। मास्को हवाइ अड्डापर हमरा सभकेँ ल' जेबाक हेतु मिस्टर एलेक्जेंडर सबारीक संग आयल रहथि। इन्स्टीच्यूटक एक पदाधिकारी छला ओ। सबारीमे बिदा भेल रही इन्स्टीच्यूटक अन्तर्राष्ट्रीय होस्टल दिस। रस्तामे चारूकात बर्फे-बर्फ देखाइ पड़ि रहल छल। मिस्टर एलेक्जेंडर कहने रहथि, आब एहिठामक बसंत प्रारम्भ भ' गेल अछि। बर्फ पिघल' लागल छैक। मुदा तखनो तापमान शून्यसँ सात डिग्री नीच्चे रहैक। मास्कोक तापमान त' जाड़मे शून्यसँ चालीस डिग्री धरि नीचाँ चलि जाइत छैक। एअर कण्डीशण्ड कारक बंद शीशासँ आँखि पसारि कौतूहलसँ श्रमजीवी लोकनिक धरती देख' लागल रही। बर्फक अम्बार रस्ता कातमे चारूभर पसरल छल। गाछ सभ जेना बौक भेल ठाढ़ रहय। जंगले-जंगल देखाइ दैत छल। मुदा पत्रहीन नग्न गाछ। फूल-पातक कतहु पता नहि। सभकेँ फूल-पातक प्रतीक्षा रहैक जेना।

होस्टल पहुँचि गेल रही। तीनू गोटेकेँ ठहरबाक व्यवस्था कयल गेल। हमरा जाहि कोठलीमे सीट भेटल ओहिमे तीनटा ओछाओन रहैक। हमर अलाबे एक नाइजीरिया आ दोसर श्रीलंकाक छात्र रहय। बादमे परिचय-पात भेल। श्रीलंकाक छात्रक नाम अनिल अलबेदा आ नाइजीरियाक

बेंजामिन रहैक। सामान सभ सरियाक' हम अपन भारतीय मित्र सभसँ भेंट करबाक लेल होस्टलमे घूम' लागल रही। किछु गोटेसँ त' दिल्लीयेमे भेंट भ' गेल रहय। मुदा बेसी लोकसँ मास्कोयेमे परिचय भेल। अपन देशक लोक सभसँ विदेशमे परिचय एक नव आत्मीयता उत्पन्न केने रहय। ओहि दिन रबि रहैक तैं भरि दिन खूब सुतलहुँ। दोसर दिन भिनसरसँ कार्यक्रम सभ शुरु भ' गेल छल। पहिल दिन क्लासमे नीक अनुभव भेल। बिना कोनो खास सांसारिक जिम्मेदारीकेँ स्वच्छन्द जीवन। फेरसँ अपन विद्यार्थी जीवन मोन पड़ि आयल। विभिन्न विषयक अध्ययन केलहुँ हमरालोकनि।

होस्टल आ इन्स्टीच्यूट एक्केठाम छल। एकहि मकानमे नीचाँ पढ़नाइ आ ऊपरमे रहनाइ। पहिल दिन होस्टलमे अजीब गन्धसँ आक्रान्त रहलहुँ भरि दिन। भनसाघर सभसँ उठैत गन्ध। ज्ञात भेल जे बीफ रन्हबाक कारणे ई विशेष गन्ध लागि रहल अछि। कोनो भनसाघर लगसँ निकलनाइ मुश्किल। माँस, भोजनमे गोमांस ओतुका प्रिय आ मुख्य भोजन छल। विभिन्न प्रकार ओ स्वरूपमे खाइत देखलियै लोककेँ। खम्हाउरक चक्का जकाँ छानल बेसी काल देखियैक। बेसीठाम देखियैक। चारि-पाँच दिन धरि ई गंध बेस बेचैनी देलक। कोठलीमे बंद रहलोपर तंग करय। ओभरकोट नहि रहबाक कारणे बाहर निकलनाइ मुश्किल रहय। कोटक व्यवस्थामे करीब एक सप्ताह लागि गेल। तैं सदिखन होस्टलेमे रहबाक विवशता छल। एक-दू बेर अपन सभ गरम कपड़ा पहीरिक' निकलबो केलहुँ त' हालत पश्त भ' गेल। फुल स्वेटर, कोट आदिक कोनो असरि नहि। ओहिठामक लोको सभ डराबय। शुभेच्छुक जकाँ सुझाव दिअय। एना चेष्टा क' कँ रस्तामे देखाबय जे एहि कपड़ामे नहि निकलू। अकड़ि जायब। रूसी भाषामे कहय। मुदा हमरालोकनि भाषा नहि बुझियैक। केवल चेष्टा आ इशारासँ बात बुझियैक। भाव बुझियैक। रूसक लोकमे संवेदनाक एहि तरहेँ पहिल झलक भेटल छल।

बादमे होस्टलक गंधसँ अभ्यस्त भ' गेलहुँ। हमहुँ सभ भनसाघरमे खेनाइ बनब' लगलहुँ। प्रत्येक महलपर तीन-चारि कोठलीक बाद एक

भनसाघर रहैक। जाहिमे दू-तीनटा चूल्हा। चूल्हामे गैसक सप्लाइ पाइपसँ होइत छलैक। जेना अपना सभकेँ बिजली आ पानि भेटैत अछि पाइप लाइनसँ, तहिना ओत' प्रत्येक घरमे कुकिंग गैसक सेहो पाइपसँ आर्पूर्ति कयल जाइत छलैक। सिलिडंरक कोनो झंझटि नहि। भानसमे हमरा सभक पाँच गोटेक एक ग्रूप रहय। तीनटा बिहारक, चारिम उड़ीसाक आ पाँचम दिल्लीक। बिहारी भाइ भोजपुरक। ललन सिंह आ श्रीकान्त सिंह। पटनामे कोऑपरेटिव ट्रेनिंग कॉलेजमे तहिया शिक्षक रहथि। कॉलेज आब रिजनल कोऑपरेटिव इन्स्टीच्यूट भ' गेल अछि। ओ लोकनि भानस करबामे बेस निपुण छला। स्वाभाविक रूपसँ भोजनक प्रेमी सेहो। सम्पूर्ण भारतीय टीममे यैह दूनू भारतसँ आँटा अनने रहथि। पाँच-पाँच किलो गहूमक आँटा। ओत' आँटा नहि भेटै। तैं भारतीय मित्रलोकनि भात अथवा पावरोटी खेबापर विवश छला। मुदा हम, दूनू भोजपुरिया बन्धुक प्रसादात लिट्टी खाइ। लिट्टीक मकुनी मसल्लाक नीक इंतजाम रखने छला ओ सभ। सतुआ भरिक' सूर्यमूखी तेलमे छानल लिट्टी बेस सुअदगर होइक। दक्षिण भारतीय मित्र सभकेँ सेहो बेस नीक लगनि। जहियाक' लिट्टी बनय, संगी सभ टेस्टो करैत दस-बीसटा पार क' देथि। बादमे हम सभ टेस्टक डरेँ नुकाक' बनाबी। चुपचाप...। लिट्टी खाइत बिसरि जाइ जे अपन देशसँ एतेक दूर दोसर देशमे छी। हुअए जे बक्सरक प्रखंड इटाढ़ीमे बैसल छी। मित्र प्रखंड विकास पदाधिकारी भोगेन्द्रजीक संग लिट्टी खा रहलहुँ अछि सुआदि-सुआदिक'। सोवियत संघमे भोजपुरक सुगन्धि अनबाक श्रेय एहि दूनू सिंह बन्धुकेँ जाइत छनि। बेसी काल हमसभ भात दालि आ आलूक तरकारी खाइ। दालि, मसल्ला, अँचार आदि संग अनने रही। ओहिठाम ई सभ नहि भेटैत रहैक। खाली चाउर आ आलू-प्याज भेटय। चाहक पत्ती सेहो ल' गेल रही भारतसँ। रूसीलोकनिकेँ भारतीय चाह बड़ पसिन्न। बहुत आह्लादसँ सुआदि-सुआदिक' पीबथि ओ सभ भारतीय चाह, इंदीयन ची...।

दूध खूब सस्त भेटैत छल। सोलह कोपेकमे एक लीटर। एक रूबलमे छह लीटर दूध। दही सेहो बढ़ियाँ। दहीमे क्रीमक विभिन्न

प्रतिशत। बेसी क्रीमबला दही जे एकदम पेस्ट सन रहय तकरा स्मिताना कहैक लोक। से एकदम कोशी कातक दही सन लागय। पावरोटी संगे वा ओहिना चीनी मिलाक' बड़ नीक लागय खयबामे। कैफेरमे क्रीमक मात्रा कम। कैफेर मट्ठा सनक वस्तु मुदा गाढ़ बेस। क्रीम निकालल रहैक। पेट ठीक करबाक लेल हमरालोकनि पीबी। तरकारी सभक बड़ टान रहैक ओत'। हरियर तरकारी नहियेँ सन भेटय। आलू आ प्याज पर्याप्त मात्रामे भेटैत छल। आलू दस कोपेकमे किलो भरि ताहि दिन। पता नहि आब कतबामे दैत हेतैक? बादमे पतकोबी सेहो भेट' लागल रहय। गाजर भेटय। टमाटर सेहो भेट' लागल मुदा बड़ महग। चारि रूबलसँ बेसी एक किलोक दाम।



होस्टलक भनसाघरमे

भानस क' केँ खयबामे बड़ अकच्छ लागय। मुदा आन कोनो उपाइयो नहि छल। होटलमे बीफ आदिक डरेँ खेबाक साहस नहि हुअय। दोसर अपना सनकेँ वस्तुओ नहि। संगहि किछु खा लेलासँ त' हमरा सभकेँ काजो नहि चलैत अछि। खेनाइ-पिनाइक हिसाबेँ एहि लोककेँ रूस मे बड़ कष्ट। भारतीय त' ओहुनो जिहुलाह होइत अछि। चटगर भोजन नीक लगै छै। ताहिपरसँ मैथिल। तीनियें मासमे अकच्छ भ' गेलहुँ।

ओ त' धन्य रहथि भोजपुरक सिंह बंधु। यथासंभव राशि-राशिक विन्यासक इंतजाम करथि अन्यथा बड़ दिक्कत होइतय। रूसमे कोनो मसल्ला नहि खाइये लोक। सोवियत संघक एशियन भागमे त' मसल्ला खायल जाइत छैक, मुदा यूरोपीय भागमे एकदम नहि। मास्कोमे कतहु कोनो मसल्ला नहि देखलियैक। उसनल-पुसनल बस्तु खयबाक अभ्यासी अछि लोकसभ। नोन-मरीच वा कोनो प्रकारक सौस काफी होइक। हमर अन्य भारतीय मित्रलोकनि सेहो चारि-पाँचक समूहमे बँटिक' भानस करथि। मुदा कियो हमरासभ सन विन्यास नहि करथि। एहि विन्यासमे दुपहरिया आ रातिक बेस समय चलि जाय। भानस आ बरतन-बासन मँजैमे बहुत समय लागय। क्रमशः ई क्रम मोनकेँ अकच्छ कर' लागल। घुमबा-टहलबामे, देखबा-सुनबामे बाधा हुअय। मुदा समूहसँ फराक नहि भ' सकलहुँ। द्वंद्व बनल रहल।

अगल-बगलक कोठलीसँ छात्रालोकनि सेहो चलि आबथि अपन-अपन भानस करबा लेल। होस्टलमे पुरुष आ स्त्री दूनूक संगहि रहबाक व्यवस्था छल।

सोवियत संघक अतिरिक्त आन देशक छात्रा सभ सेहो रहथि। अफगानिस्तान आ लेबनानक बेसी। अफगानिस्तानी सभ सेहो भोजनक प्रेमी। ओहो सभ खूब विन्यास करथि। बहुत नीक सुगन्धित चाउर आनथि कीनिक'। दोकानमे बेसीठाम नीक चाउर नहि भेटैक। एक्के रंगक सामान्य चाउर सभठाम उपलब्ध हुअय। सैह हमसभ खाइ। हमरो सभकेँ इच्छा हुअय नीक चाउर कीनबाक। मुदा सुगन्धित चाउर कत्तहु नहि भेटय। अफगानी सभसँ पूछिक' पता-ठेकान ल' क' जाइ। मुदा जाबत पहुँची, चाउर खतम भ' जाइ। निपत्ता। ओ सभ पँच बरखा कोर्समे आयल रहथि। कमसँ कम दस मासक कोर्समे। हुनका सभकेँ दोकान-दौरी बेसी बूझल-गमल रहनि। रूसी भाषा सेहो ओ सभ सीखने रहथि। हमरालोकनि त' मात्र खरासो-खरासोमे रहि गेलहुँ। दस-बीसटा शब्द जे आवश्यक छल, अवश्य सीखने होयब। तीनियें मास लेल कत्ते मेहनति करितहुँ। प्रारम्भमे हमसभ रूसी भाषा सीखबाक लेल फराक कक्षाक इंतजाम केलहुँ। मुदा

क्लास चलि नहि सकल। किछु दिनक बाद बन्द क' देल गेल। सभ उत्साहक संग ओहिमे भाग नहि ल' सकला।

मुदा भाषा ज्ञानक अभावमे बेस दिक्कत हुअय। ककरोसँ गप्प करबामे, कोनो वस्तु खरीदबामे बेस झंझटि। एक बेर सूर्यमुखी तेल खरीदबाक छल। बहुत परेशानी भेल रहय। भेल ई रहैक जे ओहि दिन तेल दोकानक काउन्टरपर नहि राखल छल। जखन कि ओत' सभ वस्तु पैकेटमे वजनक हिसाबसँ सैंतिक' राखल भेटय। लगभग सभ उपभोक्ता दोकान स्वयं सेवा व्यवस्था (सेल्फ सर्भिस सिस्टम)मे चलैत छल। तैं भाषाक ज्ञानक अभावोमे काज चल जाय। अपनेसँ जे समान लेबाक हो, उठाक' ट्रालीमे राखि काउन्टर लग चलि जाउ। ओत' सभ सामानक पाइ क्षणहिमे कम्प्यूटरसँ जोड़िक' बिल भेटि जाइत रहय। पाइ चुकताक' सामान ल' चल जाउ। मुदा ओहि दिन सूर्यमुखी तेल आगूमे राखल नहि रहय। हमरा सभ विक्रेताकेँ जे एक युवती छली, बुझाक' हारि गेलहुँ। इशारासँ सूर्यमुखी फूलक चित्र बनाक' देखौलियनि। तेल आ भानसक सम्बन्ध जोड़िक' बुझौलियनि। मुदा ओ बड़ी काल धरि बुझबे नहि केलनि। खूब अभिरुचि ल' क' बुझबाक कोशिश करथि। कोनो प्रकारक लापरवाही वा अवज्ञाक भाव नहि रहय हुनकामे। अपना मने सम्पूर्ण प्रयाससँ हमरा लोकनिक बेगरता बुझबाक प्रयास केलनि। अन्ततः ओही युवतीकेँ धन्यवाद जे इशारेसँ बूझि गेली। जखन बुझलनि त' बड़ हँसली। हँसिक' भीतर राखल सूर्यमुखीक टिन आनिक' देखौलनि। हमहुँ सभ सफलतापर प्रसन्न भेलहुँ। खूब हँसलहुँ सभ गोटे। जानमे जान आयल। बेगरता शांत भेल। सूर्यमुखी तेल बेसाहि अनलहुँ।

खरीद-बेसाहमे त' कहुना काज चलि जाय। मुदा, सभसँ बेसी कष्ट हुअय कोनो नीक मुँह, आँखिवाली सुन्दरी युवतीसँ गप्प नहि क' पयबाक विवशतामे। चाही जे गप्प होइते। मुदा...? भनसाघरमे भात लारैत खाली सभकेँ अबैत-जाइत देखैत रहि जाइ। किछु गप करबाक अवसर हुअय त' 'नी पानिमायो...।' हम किछु नहि बुझलहुँ, सैह टा बाजि सकी। ई अभाव अन्त धरि दुख दैत रहल...।

तीन

अपन लजकोटर स्वभावक कारणे बेसी प्रयासो नहि क' सकल रही युवती सभसँ गप करबाक। मेल-जोलक कथे कोन? मोन पड़ैये घूमिक' पटना अयलापर एक सज्जन पुछने रहथि 'की अशोक बाबू! किछु भेलैक की नहि? आ कि ओहिना घुरिक' चलि अयलहुँ?' हम हुनकर आशय बूझि



गाछ-वृक्ष सँ भरल मास्को

उत्तर देने रहियनि, 'की हेतै? रुपैया बनै लेल कमसँ कम चौअन्नी रहब जरूरी होइ छै?' वस्तुतः ई सत्य हमरा रूस जाक' बुझायल रहय। उन्मुक्त वातावरणोमे नीक-अधलाहक संस्कार खतम नहि होइ छै। एहि सभ काजक भारतोमे किछु अनुभव रहितय, प्रवृत्ति रहितय त' रूसमे मौका पाबि विकसित होइतहुँ। मुदा हमर आन कतेक भारतीय मित्रलोकनि एहि दिशामे खूब प्रयास केलनि। रुपैया बनबाक चेष्टामे लगला। क्लासक बाद एहने काज सभमे लागथि। लागल रहय जेना बान्हल-छेकल जिम्मेदारीसँ दबल नोकरिहारा संगी सभ अनुकूल वातावरण पाबि उन्मुक्त होयबाक प्रयास क' रहल छथि। स्वच्छन्द जीवन जीबाक लालसा खूब जोरसँ प्रवेश क' गेल छलनि कतेककेँ। बयसक सीमा कोनो अवरोध उत्पन्न नहि क' रहल छल। किछु दिनक बाद एक गोटा हिन्दी-रसियन डिक्शनरीसँ अपन आवश्यकतानुसार शब्द आ वाक्य सभ छाँटि क' घोख' लगला। हुनका बड़ सख छौंड़ी सभसँ मेल-जोलक। प्रयासो केलनि मुदा हिम्मति जवाब द' देलकनि। लूरि, मुँह आ पाइ तीनू आवश्यक तत्वमे अन्ततः लसकि गेला। ओना गाहे-बगाहे प्रयास जारी रखनहि रहला। एहने एकटा दक्षिण भारतीय पचाससँ अधिक बयसक एक मित्रकेँ एहि दिशामे प्रयासरत देखि पुछने रहियनि त' कहने रहथि, 'सभ दिन त' बान्हले-छेकल रहलहुँ। अपन मोनसँ कहाँ जीबि सकलहुँ कहियो। एत' के देखनिहार अछि? के रोकनिहार अछि? मोनसँ किछु दिन त' जीब' दिअ झाजी।' हमरा हँसी लागल रहय। मुदा कतहु कोनो कोनमे करुणा सेहो हुलकी मारने छल।

एहि सभ प्रसंगमे आगू निकलि गेल दिल्लीक अनिल। हमरा सभमे सभसँ कम बयसक अनिले छल। थोड़बे दिनमे ओ काज चलब' जोकर नीक रसियन भाषा बाज' लागल रहय। गप-सपक लूरियो रहैक। एक्टिंग कर' खूब अबैत रहैक। कने-मने गाबियो लैत छल। नाच नीक करैत रहय। थोड़े दिनक बादसँ होस्टलमे चर्चित हुअ' लागल। ओकरा तकबाक लेल, खोज-पुछारी करबाक लेल युवती सभ आब' लागल रहैक। कत' अछि अनिल? कतेक चिन्हार-अनचिन्हार युवती हमरा सभसँ पूछय। हरदम मस्त रहय अनिल। कहियो कोनो युवतीकेँ साड़ी पहिरा दैक।

टिकुली साटि दैक। साड़ी-ताड़ी पहिराक' हमरा सभक लग नमस्ते कहबाब' लेल अनै। साड़ी पहिरने बेस प्रसन्न बुझाय ओ सभ। हमरो सभ केँ नीक लागय। उज्जर दपदप गोर मुखमंडलपर टिकुली सटने, साड़ी पहिरने कोनो रसियन युवती बड़ नीक लागय। हम सभ अनिलक कबिलतीक मोने मोन खूब प्रशंसा करी।

एहिना अनिलक क्रम बढ़ैत गेलैक। एहि क्रममे अकस्मात् नीनाक प्रति ओ बेसी सीरियस बुझाय लागल। नीना हमर भनसाघर लगक कोठरीमे रहैत छल। सोलह-सत्तरह बरखक एक गंभीर ओ भावुक स्वभाव वाली किशोरी रहय ओ। ककरोसँ गप करैत ओकरा कमे देखियैक। बहुत सौम्य आ भावप्रवण चेहरा रहैक ओकर। लागय जेना छल-कपटसँ कोसो दूर अछि ओ। दिल्लीक हमर उड़ाँत अनिल ओकर चारूकात घुरिआय लागल छल। एक दोसराक प्रति आकर्षण बढ़ि रहलैक अछि से अनिलक गपसँ बुझाय लागल छल। लागल रहय जेना नीनाक प्रति प्रेमक अंकुरण भ' गेल छैक। विलासी अनिलक उद्धत मोनपर जेना कोनो शीतल जलक बुन्न टपक' लागल होइ। अनिलक प्रकृतिमे परिवर्तनक पहिल संकेत एक घटनासँ भेटल रहय। एक साँझ ओ शराबक निशामे धुत्त सिगरेटपर सिगरेट फुँकने जा रहल छल। हमरा सभकेँ दिल्लीक गप सुनबैत रहय। अपन बिताओल स्वच्छन्द जीवन। विभिन्न होटलक विलास। डांसक गप। राशि-राशिक शराबक गप...। मास्कोक गप सेहो सुनब' लागल। हमरालोकनि अनिलक भोग-पुराणमे डूबि गेल रही। अकस्मात् नीना केबाड़ लग देखाइ पड़लै ओकरा। ओ झटसँ उठि दोसर दिसक खिड़कीसँ सिगरेट फेंकि देलक। केबाड़ लग जा नीनासँ गप कर' लागल रहय। अनिलक सिगरेट फेंकबाक एक्शनसँ हम चौंकि गेल रही। नीनाकेँ देखि किए सिगरेट फेंकि देलक ओ? अनिल त' 'चेन स्मोकर' अछि। लगले नीनाक गेलाक बाद हम अनिलसँ एहि सम्बन्धमे पूछि देने रहियै। पुछलापर ओ कहने रहय जे नीना के ओकर सिगरेट पीयब नीक नहि लगैत छै। ओ मना केने रहैक। कहने रहय जे ओकर सिगरेट पीयब जल्दी नहि छुटतैक। मुदा नीनाक आगूमे आब ओ नहि पियैत अछि। हमरा लागल रहय नीना आब ओकरा असरि

क’ रहलैये। जहिना-जहिना अनिल आ नीनाक बीच रागात्मक सम्बन्ध बढ़ैत गेलैक तहिना दूनूक प्रति हमर रुचियो बढ़ैत गेल रहय। दूनूक बढ़ैत अनुबन्ध-सम्बन्ध हमरा आब आकर्षित कर’ लागल रहय।

होस्टलमे हमरा सभकेँ रातिमे बेस अबेर भ’ जाइत छल। लगभग सभ दिन सुतबामे रातिक एक-दू बाजि जाय। खा-पीबिक’ कतहु कोनो कोठलीमे गोष्ठी जमैत छलैक। संगहि चलि पड़ैत रहैक भोजपुरी, मराठी, हिन्दी, तेलगू, कन्नड़, मलयालममे गीतक कार्यक्रम। सभकेँ किछु ने किछु गाब’ पड़िते रहैक। हमहुँ मैथिलीमे गीतसभ सुनबैत रहियैक। दक्षिण भारतीय मित्रलोकनिकेँ बेस पसिन्न पड़ैत छलनि मैथिली गीत। विद्यापतिक नाम ओ सभ सुनने रहथि। तैं विद्यापति गीतक फरमाइस सेहो होइत छल। हमहीं सभ नहि, पूरा होस्टल मध्य राति धरि जगले रहैत छल। कतेक उत्साही आ स्नेही युगल सभकेँ त’ भरि-भरि राति बरामदाक कोनो खिड़कीपर बैसल देखैत रहियनि। लेबनानी आ अफगानी विद्यार्थी सभ एहिमे बेसी आगू बुझाइत रहथि। किछु अफ्रीकन सभ सेहो। जखन क’ नीन टूटय आ बाहर निकली त’ कतहु ने कतहु, कियो ने कियो अवश्य देखाइ पड़ि जाइत छल। खिड़कीपर बैसल चोंचमे चोंच मिलबैत। बतियाइत...।

हमरा सभक क्लास भिनसर साढ़े आठ बजेसँ होइत रहय। समयक बेस पाबंदी रहैक, साढ़े आठ त’ साढ़े आठ। रातिमे देरीसँ सुतबाक कारणे भिनसरमे धड़फड़ी भ’ जाइत रहय सभ दिन। शुरुमे समयक अभावेँ स्नान नहि क’ पाबी भिनसरमे। ओना गरम आ ठंडा दुनू पानिक व्यवस्था रहैक। दुनू पानि फराक-फराक कलसँ आबय। फेर एकमे मीलि जाय। जतबा तप्पत पानिसँ नहेबाक हो, नहा सकैत छी। ई अपन इच्छापर निर्भर करैत अछि। तैं भिनसुरका जाड़ कोनो समस्या नहि रहय। ओहिनो पूरा होस्टल केन्द्रीय रूपसँ गरम (सेंट्रली हीटेड) छल। बहुत जाड़ नहि हुअय। भिनसरमे नहा नहि पाबी त’ रातिमे नहाइ। ओहिठामक लोक रातिये क’ नहाइत छल। सुतबासँ पूर्व नहायब आवश्यक बुझैये। रातिमे नहा लेलापर नीक नीन्न अबैत छैक से ओहिठामक लोकक विचार छै। भरि

दिनक थाकल देह, मोनकेँ रातिमे हल्लुक आ फ्रेश बनबैत अछि ओ सभ। फेर भिनसरसँ अपन दिनचर्या शुरु करैये। मेहनतिक नब दिन। नब उत्साह, ताजगीसँ। मुदा हमरा सभकेँ त’ भिनसरमे नहेबाक हिस्सक अछि, तैं नहि नहयलापर अनसोंहात सन लागय। पैखाना आ स्नानमे बड़ झंझटि बुझाय। पैखानामे पानिक कोनो व्यवस्था नहि रहैक। ओहिठामक लोक कागजक उपयोग करैये। आनोठाम सैह चलै छै। आब त’ भारतोमे रहरहाँ भ’ गेलैक अछि। हम सभ बोतलमे पानि भरिक’ जाइ। कोठलीसँ बोतल ल’ पानि भरि पैखाना जेबामे सभक पछुअबैत नजरि कोनादन लागय। मुदा उपाय की छल? अपन हिस्सक छोड़ि नहि सकैत छलहुँ। मोने प्रपन्न नहि होइते। पछुअबैत नजरिसँ बचबाक लेल बोतलकेँ पैखानामे राखि देलियैक। मुदा सफाइ बेरमे करमचारी हटा देलक। मुश्किल भेल। तैं कोठलीयेमे बोतल रखबाक विवशता छल। कोठलीसँ सभ दिन बोतल ल’ बिदा होइ। बरमदा पार क’ पैखाना तक आबी। बोतलमे पानि भरी। सुसुम पानि। निवृत्तिक बाद पुनः बोतल झुलबैत कोठली आबी। शुरुमे ई सभ बात असुविधाजनक लागय। मुदा बादमे त’ अभ्यास भ’ गेल। एहीमे आनन्द लिअ’ लगलहुँ।

तहिना स्नान सेहो तंग केलक। स्नान करबाक लेल बाथहॉल बनल रहैक। बाथरूम नहि। लाइनसँ पाँच-छहटा कल। गरम-ठंडा पानिक व्यवस्था। स्नानागारमे प्रवेश द्वारक बाद एक कोठली रहैक। जाहिमे कपड़ा आदि रखबाक व्यवस्था छल। खूंटी सभ बनल रहैक। तकरबाद एक पैघ सन के हॉलमे लाइनसँ पाँच-छहटा कल। प्रत्येक कल दू दिससँ देवालसँ घेरल मुदा आगूसँ खूजल। तैं लोककेँ नहाइत अहाँ देखि सकैत छी। एहि व्यवस्थामे एकटा बात बेस दिक्कत केलक शुरुमे। एहिठामक लोक सभ नंगटे नहाय। अफगानी-अफ्रीकन सभ नंगटे नहाय। नंग-धड़ंग। गुप्त स्थानमे त’ नांगट भेल जा सकैत अछि। मुदा, सभक लग? ओकरा सभकेँ कोनो लाज नहि होइ। फटाफट कपड़ा खोलि एकदम नग्न भ’ नहेबाक लेल चल आबय। हमरा सभकेँ एतेक लोकक बीच नग्न नहेबाक अभ्यास नहि रहय। कदाचित संस्कार सेहो बाधा देलक। एकटा जंघिया

धरि अवश्य रखलहुँ डाँड़मे। हमर दक्षिण भारतीय किछु मित्र एहिमे अफगानी-अफ्रीकन लोकनिक संग देलनि। ओ सभ एहि मादे हमरा सभसँ चौल करथि। डेरबुक कहथि। मुदा हमसभ अपन जंघिया नहि उतारि सकलहुँ।

पुरुष आ स्त्रीक लेल फराक-फराक बाथहॉलक व्यवस्था रहैक। मुदा कहियोक' कोनो स्नानागार खराब भ' जाइ त' एक्केमे नहाय पड़य। संग-संग नहि। फराक-फराक। पार बान्हिक'। टाइम-टेबुल बना देल जाइक। जेना भिनसर सातसँ आठ धरि पुरुष त' आठसँ नौ धरि स्त्री... । ई क्रम लगभग भरि दिन चलैत रहैक...। कहियो टूटियो जाइत छलैक। एहिमे मजाको सभ चलय। झगड़ो होइ। एही नहेबामे हमरा संग एक घटना घटि गेल। हम क्लास खतम क' सोचलहुँ जे नहा ली। तौलिया, साबुन आदि ल' क' विदा भेलहुँ। बाथहॉल लग कोनो चहल-पहल नहि रहैक। कारण, ई नहेबाक कोनो टाइमो नहि छल। हम सूचना पटपर सेहो कोनो ध्यान नहि देलहुँ। सोझे हॉल लग पहुँचि गेलहुँ।

ककरो चाल-चूल नहि भेटल। एकदम सुनसान। केबाड़ ठेलि हालमे घुसि गेलहुँ। भीतर गेलापर पानि चलबाक आवाज बुझायल पहिने। ताबत एकटा खूंटीपर कपड़ा टांगल सेहो देखायल। पुरुष आ स्त्रीक कपड़ामे कोनो खास फरक त' रहैत नहि छैक। हम सोचियो नहि सकलहुँ जे ई स्त्रीक कपड़ा थिक! जल्दी-जल्दी पैजामा-कुर्ता खोलि जंघिया पहिरने स्नानागारमे प्रवेश क' गेलहुँ। नहेबाक लेल। आहि रे बा, एकटा युवती नहा रहल छल सामनेमे। एकदम नग्न...। ओकरो नजरि हमरापर पड़लै। ओ चिचिआय लागल। पलक झपकल कि नहि, हम चोट्टे घूमि गेलहुँ। ओकर चिकड़ब सुनाइ द' रहल छल। धड़कैत करेज संग पैजामा पहीरिलहुँ। केबाड़ खोलि बाहर आबि गेलहुँ। डरेँ सकदम भ' गेल रही। एक मोन भेल जे पड़ा जाइ। मुदा सोचलहुँ जे पड़ेनाइ ठीक नहि होयत। युवती नीक जकाँ देखि लेने अछि पड़ायब त' ओकरा संदेह भ' जेतैक। अपराध भ' जायत। शिकायत क' सकैत अछि। एहिसँ नीक जे ओकरा हिम्मतिसँ फेस करी। किछु कहत त' माफी मांगि लेबैक।

गलती भेल। ई सभ सोचि ओहीठाम ठाढ़ भ' गेलहुँ। युवतीक बाहर निकलबाक प्रतीक्षा करैत।

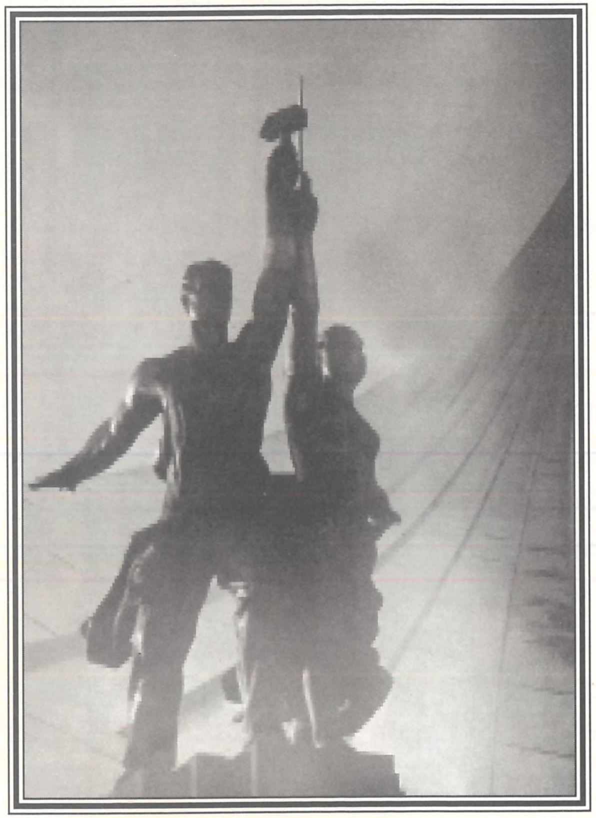
कनीकालक बाद ओ युवती बाहर निकलल। हम पतिया-प्रायश्चित सन ओकरा दिस तकलहुँ। ओ हमरा दिस ताकि मुसकुराक' आगू बढ़ि गेल। किछु नहि बाजल। जेना किछु भेले नहि होइ। कोनो घटना नहि घटल होइ। हम ओकरा जाइत देखैत रहलहुँ। जानमे जान आयल। तकरबाद जा क' खूब नहाइत रहलहुँ। बड़ीकाल धरि...।



होस्टलक आगू ललन सिंहक संग

चारि

सभ दिन खा-पीबिक' हमरा लोकनि मास्को शहर घुमबाक लेल निकली। घुमैत रही...देखैत...बौआइत रही...। शुरुमे जहिया ओभरकोट भेटल रहय, ओकर तेसर दिन श्रीकान्त सिंहक संग निकलल रही। सभ



श्रमिक स्त्री-पुरुष

प्रशिक्षणार्थीकेँ गरम कपड़ा भेटबाक व्यवस्था रहैक इन्स्टीच्यूट दिससँ। एक सए पचास रूबलमे जे कपड़ा खरीद सकी। अपन पसिन्नसँ खरीद लिअ'। उन्तीस मार्च उन्नैस सय पचासीकेँ कपड़ा लेल हम सभ गेल रही, बससँ। एहिसँ पूर्व गरम कपड़ाक अभावमे कतहु निकलि नहि सकलहुँ। अपन कपड़ा त' ओहि ठंडमे बेकार भ' गेल जेना। चारूकात बर्फ देखाइ द' रहल छल आ दूर-दूर धरि जंगल। घर सभ काठ आ सीसाक बनल रहैक। ई सभ पुरान घर रहय। घरक ऊपर चिमनी रहैक। धुआँ निकलबाक लेल। गाड़ी दहिना कातसँ चलबैत देखलियैक। सभ गाड़ी 'राइट हैंड ड्राइभ'। दोकानमे हम एक सए छत्तीस रूबलमे एकटा ओभरकोट लेलहुँ। कोट बेस भारी छल। खूब गर्म। भीतरमे अस्तर ऊनीए कपड़ाक रहैक। खूब काज देलक ओ ओभरकोट ओतय। आइयो हमरा लग ओ कोट मौजूद अछि। मुदा अपन देशमे ओकर प्रयोग बहुत कम होइत अछि। कहियो जखन जाड़मे पाला पड़ैत छैक, तापमान एकदम नीचाँ चलि जाइत छैक त' ओ कोट पहीरि लैत छी। लोक देखियेक' चीन्हि जाइये जे ई रूसी कोट थिक। कोटक संग तहिया दू टा टोपी सेहो लेलहुँ। एकटा फर बला। खूब मोलायम। एकटा हैट। पहीरिक' निकली त' एकदम रसियन सन लागी।

बर्फक कारणे कतेककेँ बड़ असुविधा होइन चलबामे। हमर कतोक संगीकेँ जूता नब कीन' पड़लनि। हमरा कोनो तकलीफ नहि भेल, धन्य मंत्रेश्वर बाबू। ओ कनिये दिन पहिने इंग्लैंडसँ वापस आयल रहथि। बर्फक अनुभव छलनि। ओ हमरा बाटाक एम्बेसेडर जूता ल' क' जयबाक लेल कहलनि। कहने रहथि जे बर्फपर एम्बेसेडर काज करत। हम पटनामे कीनि लेने रही। दू सए सात रुपैयामे देने रहय ओहि समय। एम्बेसेडर जूतासँ बड़ सुविधा भेल रूसमे। हमर कतेक मित्रकेँ नब जूता कीन' पड़लनि ओतय। अपन देशसँ आनल जूतामे बर्फ घूसि जाइन। तकलीफ होनि। बर्फ गड़' लगैत छलनि। पैताबा भीजि जाइत छलनि। नब जूता कीनलनि त' उसाँस भेलनि। ओहिठामक बर्फ छारल रस्तापर घूमि-फीरि सकला।

ओभरकोट पहीरि, फरवला टोपी लगाक' अयनामे अपन छवि निहारने रही। एकदम्मे रूसी लोक सन भ' गेल रही।

प्रसन्नता भेल रहय जे आब एहिठामक लोक संग मीलि गेलहुँ। फराक नहि लगैत छी। घूम'-फिर' लगलहुँ। कियो कहने रहय जे दू स्टेशनक बादक कस्बामे हिन्दी सिनेमा चलि रहल छैक। पता लगब' विदा भ' गेल रही, श्रीकान्तक संग। हमर सभक होस्टलसँ एक्के फर्लांग दूर छै रेलवे स्टेशन प्रेलोसकाया। होस्टल भोलसीना स्ट्रीटमे रहय। प्रेलोसकायासँ बिजलीक ट्रेन जकरा ओहिठामक भाषामे इलेक्टीचिया कहैत छैक, भेटैत रहैक। ओत'सँ मास्को पहुँचबामे करीब बीस मिनट लागय। दूरी पैंतीस-चालीस कि.मी. रहैक। ओहिठामक यातायात व्यवस्थाक सम्बन्धमे की कहल जाय? हरेक दू मिनटपर मास्को दिस जेबाक लेल ट्रेन उपलब्ध छल। एकटा ट्रेन आँखिसँ ओझल हुअय कि नहि, दोसर आबि जाय। ऑटोमेटिक सिगनल सिस्टम रहैक। मास्को शहरमे कतहु जेबाक लेल ट्रॉली बस, बिजलीक बस, साधारण बस आदिक अतिरिक्त धरतीक भीतर चल' बला मेट्रोक जाल बिछल छलैक। सरजमीनसँ बहुत नीचाँ चल'बला मेट्रो। ई मेट्रो उन्नैस सय पैंतीसमे बनल रहय। ओहि समयमे जे भाड़ा निश्चित कएल गेल रहैक से तहिया धरि कायमे रहैक। आब पता नहि की भेलैक अछि? आबक स्थिति हमरा नहि बूझल अछि। मुदा जेना आब सोवियत संघ नहि रहल आ ग्लासनोस्त आ पेत्रोइस्का ओत' लागू भेल अछि त' भाड़ा अवश्ये बढ़ि गेल हेतैक। तहिया मेट्रो स्टेशनमे प्रवेश करबासँ पूर्व पाँच कोपेकक सिक्का प्रवेश द्वारमे खसब' पड़ैत रहैक। पाँच कोपेकक सिक्का भजेबाक लेल फराक-फराक कैकटा मशीन राखल रहैक। जेना हमरा लग यदि पच्चीस कोपेकक सिक्का अछि त' पच्चीस कोपेक वला सिक्का मशीनमे खसा देबैक। पाँच-पाँच कोपेकक सिक्का निकलि आओत, पाँचटा। एहिसँ बड़ सुविधा होइ। प्रवेश द्वारमे पाइ खसेलाक बाद हरियर बत्ती भ' जाइत छलैक। पुनः लाल बत्ती। लालबत्ती हेबासँ पूर्व द्वारिसँ निकलि जेबाक चाही। अन्यथा दू टा लोहाक छड़ दुनू दिससँ आबिक' रस्ता रोकि देत। ई व्यवस्था बिना

पाइये निकलबाक चेष्टा कयनिहारक लेल छलैक। मुदा कतहु एहन चेष्टा करैत ककरो नहि देखलियैक।

श्रीकान्त सिंह एक-दू दिन पहिनहुँ बाहर घुमबा-फिरबा लेल निकलल रहथि। तैं हुनका अनुभव किछु भ' गेल रहनि। मुदा स्टेशन सभक पहिचान नहि भेल रहनि। रूसी भाषामे लिखल रहबाक कारणे स्टेशन आदिक नाम पढ़ल नहि जा सकैत छल। हम सभ कोनो चिन्ह-ठेकान क' काज चलायब शुरु केने रही। जेना स्टेशन परक कोनो चित्र। कोनो विशेष प्रकारक पुल। कोनो दोकान। कोनो सुरंग। पहिल दिन हम आ श्रीकान्त प्रेलेसकायासँ ट्रेन पकड़ि दू स्टेशन जा उतरि गेलहुँ। स्टेशनसँ बाहर अयलहुँ। एम्हर-ओम्हर घुमलहुँ। रस्ता लेकिन ठेकान रखबाक प्रयास करी। एकटा सिनेमा हॉल भेटल रहय। मुदा ओहिमे हिन्दी सिनेमा नहि चलैत रहैक। एही ठामक पता देने रहय। तैं सिनेमा देखबाक, खास क' हिन्दी सिनेमा देखबाक उल्लास खतम भ' गेल। आपस अपन डेरा दिस विदा भेलहुँ। आहि रे बा, रस्ता बिसरि गेलहुँ। एम्हर-ओम्हर घूम' लगलहुँ। रस्ता कातमे पिघलैत बर्फ हमरा सभक बौयेनाइ-भोतियेनाइ देखैत रहल चुपचाप...। आखिरकार स्टेशन भेटल। आब ई दिशांस लागि गेल जे कोम्हर जायब? कोम्हर अपन होस्टल अछि? कहुनाक' ठेकान क' विदा भेलहुँ। दू स्टेशनक बाद उतरि गेलहुँ। उतरलापर देखलहुँ जे ई स्टेशन प्रेलोसकायासँ नहि मिलैत अछि। वास्तवमे उल्टा दिशामे चलि आयल रही हम सभ। आब की करी। दुनू गोटे स्टेशनसँ बाहर अयलहुँ। घूम'-फिर' लगलहुँ। श्रीकान्तकेँ एकटा मेट्रो स्टेशन देखाइ पड़लनि। ओ देखने रहथि दू-चारि दिन पहिने। हमर त' पहिल अवसर छल। मेट्रो स्टेशन नहि देखने रही। धरतीसँ नीचाँ उतरलहुँ, प्रवेश द्वारसँ भीतर गेला पर चकबिदोर जकाँ लागि गेल। धरतीक भीतर एहन कलात्मक व्यवस्था! बिजलीक झाड़-फानूशसँ सजल भव्य मेट्रो स्टेशन...। वाह रे मनुक्ख! तों किछु की, सभ किछु क' सकैत छह! एकोरती साँस लेबामे तकलीफ नहि। खूब जोरसँ साँस लेलहुँ। लागल जेना एकदम ताजा हवा नाकमे भरि गेल अछि। पता नहि कतहुसँ हवाक सिहकी देहमे लागल। सुख आ आश्चर्यक

अपूर्व अनुभूति...। मनुक्खक उद्दाम जिजीविषा आ दुनियाकेँ सुन्दर बनेबाक यत्नपर मोहित होइत रहलहुँ। अनवरत श्रमक उपलब्धिसँ चकित होइत रहलहुँ। एम्हर अपन कलकत्तामे, आब कोलकातामे सेहो देखलहुँ मेट्रो। मोन गद्गद भ' गेल। मेट्रो त' आब दिल्लियोमे भ' गेल अछि। कलकत्तामे देवाल सभपर रवीन्द्र नाथ ठाकुरक पाँती सभ जीवन-सौन्दर्यक हुलास भरैत रहय। मास्को मोन पड़ि आयल।

मास्कोमे मुदा स्टेशनमे चलैत सीढ़ी 'एसकेलेटर' पर चढ़बाक पहिल अवसर आयल त' नर्भस भ' गेलहुँ। एकदम धकचुका गेलहुँ। कनीकाल त' चढ़ले नहि भेल। हुअय जे खसि ने पड़ी, दू सीढ़ीक संधिपर ने पैर पड़ि जाय! एकदम थकमका गेल रही ओहि क्षण। यात्रीक सुविधा लेल एसकेलेटरक व्यवस्था कएल गेल रहैक ओहिठाम। सीढ़ी हरदम चलैत रहैत छलैक। शुरुमे थोड़ेक दूर सीढ़ीक रूप ल' लैत रहैक। आब एतहु भारतोमे कतेक ठाम, खास क' बड़का डिपार्टमेंटल स्टोर सभमे ई व्यवस्था भ' गेल छैक। लोक एहीपर चढ़िक' एक महलसँ दोसर महल जाइत अछि। कलकत्ताक मेट्रो स्टेशन सभमे त' एसकेलेटर छैके। रूसमे लोककेँ किताब पढ़ैत, गप्प करैत, चढ़ैत-उतरैत देखलियैक। मुदा हमरा त' डर भ' गेल छल। संधि स्थलेसँ सीढ़ीक रूप बनैत रहैक। ओहिपर पैर पड़लासँ खसबाक डर। संगहि कोनो चलैत वस्तुपर पैर रखबामे सेहो दिक्कत बुझायल रहय। हिम्मति क' केँ चढ़ि गेल रही। कलेजा धकधक कर' लागल रहय। मुदा किछु भेल नहि। जखन देखलहुँ जे साबूत बचि गेल छी त' आनन्द आब' लागल। बिना कोनो आयासकेँ चलैत सीढ़ीसँ ऊपर पहुँचि गेलहुँ। फेर ऊपरसँ नीचाँ अयलहुँ। वाह, खूब आनन्द भेल। थोड़ेक दिनक बाद त' अभ्यास भ' गेल। कोनो दिक्कत नहि होइत छल।

मेट्रो स्टेशनमे घूमिक' हम दुनू गोटे बाहर निकलल रही। कहुना फेर स्टेशन पहुँचलहुँ। लोककेँ किछु पूछि नहि सकैत छलियैक। लोक किछु कहि नहि सकैत छल। भाषा ज्ञानक अभाव घुमनाइकेँ रोमांचक बना देलक। टूटल-फूटल शब्द आ इशारासँ काज चलाबी। स्टेशनक पता सेहो तहिना लागल। मुदा लोक सभ सहायता करबा लेल उद्यत रहय। से

बुझायल। पता नहि लोक सभ केना हमरा सभकेँ चीन्हि जाइत छल। इन्डस्की...इन्डस्की..। क्रमशः ई बात स्पष्ट हुअ लागल रहय जे भारतक प्रति, भारतीय लोकक प्रति बड़ आकर्षण छैक ओहिठामक लोकमे। एकदम सहज मित्र बुझैत अछि हमरा सभकेँ। जे भेटय, मारिते रास गप्प करय लागय। खूब गप्प करबाक चेष्टा करय। मुदा हाय, हम सभ किछु नहि बूझि पाबी। भाषाक अज्ञानता हमरा सभकेँ जकड़ि लैत छल। भाषा नहि बूझियोकेँ भाव त' बूझिये जाइ। प्रेम बुझबामे आबि जाय। ठीके कहल गेलैक अछि, प्रेमक फराके भाषा होइत छैक। ओकर अभिव्यक्ति लेल शब्दक कोनो दरकार नहि।

अन्हार भ' गेल रहैक। रातिक दस बाजि गेल रहय। प्रेलोसकाया स्टेशनक दिशा पूछि ट्रेनमे चढ़ि गेलहुँ। आब आश्वस्त जकाँ भ' गेल रही। मुदा, आहि रे बा, ट्रेन प्रेलोसकाया स्टेशनपर रुकबे नहि कयल। आगू बढ़ल जा रहल छल। झक...झक...झक...झक। श्रीकान्त सिंह कहलनि,



भोजमे

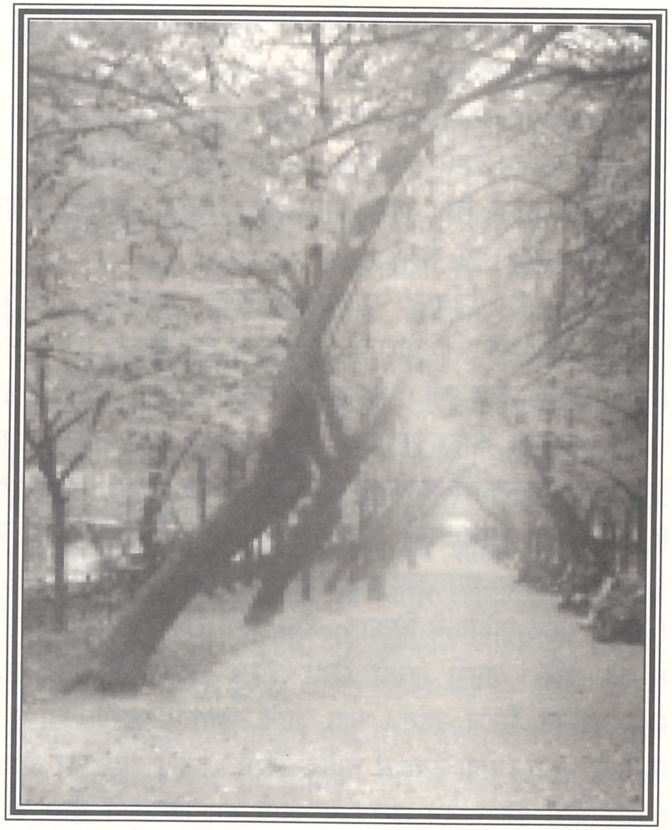
'हमरा सभ गलतीसँ एक्सप्रेस ट्रेनमे बैसि गेलहुँ अछि।' हमरा फेर ठकमुड़ी लागि गेल रहय। ट्रेन जखन अगिला स्टेशनपर रुकल त' हम सभ उतरि गेल रही। फेरसँ वापस प्रेलोसकाया दिसक ट्रेनपर चढ़लहुँ। प्रेलोसकाया पहुँचि होस्टल अयलहुँ। रातिमे भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित रहय। जाहिमे अफगान, यमन, रसियन आदि देशक कलाकार साज-बाजक संग भाग लेलनि। बहुत थाकि गेल रही। मुदा तैयो कार्यक्रम एहन सुन्दर छल जे देखैत रहि गेलहुँ बहुत राति धरि। ओहिठामक परंपराक अनुसार ओहि दिन अपन घड़ीकेँ एक घंटा आगू क' देलियैक। ई नियम एक अप्रीलसँ एक अक्टूबर तक रहैत छैक। ओहि दिन एकतीस मार्च छल। बारह बजे रातिक बाद एक अप्रील...।



लेनिनग्राद

पाँच

मेट्रोसँ चलब बहुत सस्त रहैक ओहिठाम। पाँच कोपेकमे जत' तक चाही जा सकैत छी। बाहर निकलिक' पुनः अन्दर जायब तखने फेर पाइ दिअ' पड़त। मात्र पाँच कोपेक। ओना समस्त सार्वजनिक यातायात ओत' खूब



सड़कक बीचमे पार्क

सस्त रहैक। टैक्सी सेहो रहैक मुदा कने महग। टैक्सीसँ कमे यात्रा केलहुँ। जखनि कोनो आन सवारी नहि भेटय अथवा भोतिया जाइ त' थाकि-हारिक' टैक्सी पकड़ी। पीयर रंगक टैक्सी खूब दौड़य। मास्कोक सड़क सभ खूब चौड़ा। दुनू कात सड़क। बीचमे पैदल चलबाक लेल रस्ता। एकदम बहुत दूर धरि पार्क सन बनल। गाछ-वृक्ष रोपल। ठाम-ठाम प्रसाधन बनल। बैसबाक, सुस्तेबाक लेल बेंच सभ...। सिमेंटक।

गाछ-वृक्ष बहुत रहैक मास्कोमे। एकदम प्रदूषणमुक्त शहर अछि मास्को। चाकर प्रशस्त सड़क। एक सड़कपर एके दिसुका यातायात। वन वे ट्रैफिक। दुनू सड़कक बीचमे दूर-दूर धरि पार्क बनल। फुलवारी सजल। पैरे चलबाक लेल छायादार वृक्षक छाँह। ठाम-ठीम खेबाक-पीबाक वस्तुजात भेटैत रहैक। हम सभ बहुधा आइसक्रीम खाइ। बेस चौड़गर पैघ सन के आइसक्रीम भेटय। अट्ठाइस कोपेकमे। तीस कोपेकमे। एकटा खा लिअ' त' पेट भरि जायत। देहमे तागतोक अनुभव करब। हड़ारतो मेटा जायत। हम सभ जाड़ो लागय, तैयो आइसक्रीम खाइ। वस्तुतः जड़ाइतो आइसक्रीम खेबाक मजा मास्कोयेमे लेलहुँ।

दिनमे खा-पीबिक' घुमबा-टहलबाक कार्यक्रम शुरु हुअय। प्रेलोसकाया स्टेशनसँ इलेक्ट्रीचिया (इलेक्ट्रिक ट्रेन) पकड़ी। भरि महीनाक रेलवे पास बनबा लेने रही। एक मासक किराया एक रूबल। एक रूबल माने ताहि दिनुका चौदह रुपैया। मुदा डालरक संग रूबलक सम्बन्ध अदभुत रहय। जानकारी भेटल रहय जे बैंकमे एक डॉलर भजायब त' एक रूबल नहि देत। मात्र नब्बे कोपेक देत। सरकारी मूल्य एक डॉलरक खाली नब्बे कोपेक। एक रूबल सय कोपेक के। मुदा ब्लैकमे एक डॉलर चारि रूबल साठि कोपेकमे बिकाइ। हमर संगी सभ होस्टलेमे बैसल डॉलर ब्लैक क' लेथि। हमरो लगमे किछु डॉलर रहय। दिल्लीमे एक सय डॉलरक परमिट भेटल रहय। मुदा शनि रहबाक कारणे खाली पचास डॉलर भेटल रहय। सेहो ट्रेवलर्स चेकक रूपमे। हवाइ अड्डापर आकस्मिक खर्च लेल बीस डॉलर देने छल। मास्कोमे हम होस्टलमे बीस डॉलर त' रूबलमे बदलि लेलहुँ मुदा ट्रेवलर्स चेक ब्लैकसँ भजेबाक साहस नहि

भेल। सोचल गेल जे मास्कोक कोनो डॉलर शॉपसँ कमे दाममे किछु कीनिक' ट्रैवलर्स चेक भजा लेल जाय। तकरबाद ओकरा ब्लैकसँ रूबलमे बदलि लेल जाय। मास्कोमे डॉलर शॉप फराकसँ खुजल रहय ठाम ठीम। एहिमे डालरेक माध्यमसँ कोनो वस्तु कीनल जा सकैत छल। फिरतामे सेहो डॉलरे भेटैक। दोकान सभ खूब सजल-धजल रहय। ओहिठाम लहक-चहक बला वस्तु सभ आ स्कॉच, शैम्पेन आ व्हिस्की आदि भेटय। बुझू त' सख-सेहन्ताक सामान सभ। एक दिन हम पहुँचि गेल रही डालर शॉपमे। ओत' मौगियाही घड़ी किनबाक मोन बनेलहुँ। कनियाँक लेल सनेश रहतनि से सोचलहुँ। जे घड़ी पसिन्न भेल से पन्द्रह डालरमे देलक। खर्च योजनासँ बेसी भ' गेल। मुदा खुशी भेल जे सख बला नीक वस्तु कनियाँ लेल कीनलहुँ। पन्द्रह डॉलर खर्च केलाक बाद जे पैंतीस डॉलर बचल तकरा बादमे ओहिना रूबलमे बदलि लेलहुँ। ओहि रूबल सभसँ बादमे धिया-पूता लेल, इष्ट मित्र लेल सनेश-बारी कीनने रही।

धिया-पूता लेल सनेश-बारी किनबाक लेल डेस्की मीर मे गेलहुँ। ओत' बच्चा सभ लेल समान सभ भेटैत छल। सभ किछु। खेलौनासँ ल' क' कपड़ा-लत्ता, जुत्ता धरि। खेलौनाक विभागमे गेलापर एकटा ट्रेन देखलियैक। ई ट्रेन बैटरी पर चलैत रहय पटरीपर। सिग्नल डाउन होइक। फेर गार्ड सीटी बजाबय। ट्रेन चलि पड़ैक। स्टेशन आबिक' रूकय। ट्रेन देखिक' हमरा अपन नेनपन मोन पड़ि आयल। बनारसमे रहैत रही। भरिसक पचमा-छठमा किलासमे पढ़ैत रही। हमर एकटा दोस छल परेश। दैनिक 'आज' केँ पूर्व सम्पादक दिनेश दत्त झाक जेठ बेटा। ओकरा ओकर पीसियौत भाइ रिजर्व बैंकक पूर्व गर्वनर लक्ष्मीकान्त झा जापान सँ आनल खेलौना बला ट्रेन सनेशमे देने रहथिन। ओहो ट्रेन एहिना सीटी बजाबय। हम मुग्ध भावसँ ट्रेनकेँ चलैत, सीटी बजबैत देखल करी। हमरो इच्छा हुअय जे ट्रेनकेँ चलबितहुँ। मुदा परेश हमरा छूब' नहि देलक। से बात हमरा अकस्मात मोन पड़ि आयल। हम बारह रूबलमे ओ ट्रेन खरीद लेलहुँ। गाममे अपन जेठ बेटा प्रवीणकेँ सनेशमे देलिअनि। ओ ट्रेनकेँ चलाबथि। हम दूरसँ देखल करी।

हमरा सभकेँ एक सय पचास रूबल प्रतिमास छात्रवृत्तिक रूपमे सेहो भेटैत रहय। साठि-सत्तरि रूबलसँ बेसी कहियो खर्च नहि भेल। खर्चमे खर्च रहय खेबा-पीबाक सामान कीनब। किछु वस्तुजात जेना दालि, मसल्ला आ चाह, अँचार आदि त' संग ल' गेल रही। संगहि पान पराग आ पीला पत्ती जर्दा ल' गेल रही। पान नहि ल' जा सकलहुँ। ओत' बहुधा चाउर, दूध-दही, सूर्यमुखीक तेल, तरकारी सभ कीनी। हँ, बीयर सेहो कीनी हम सभ। श्रीकान्त सिंहक कोठलीमे एकटा शीशाक जार राखल रहैक। ओहिमे दस-बारह बोतल बीयर राखि सकैत रही। निर्णय भेल रहैक जे एहि जार के खाली नहि हुअ' देल जाय। जखन खाली हुअ लागय त' दोकानसँ आनिक' भरि दी। मोन पड़ैत अछि जे भोरमे हम सभ पावरोटी संगे स्मिताना दही खाइ। चीनी मिलाक'। तखन एक गिलास क' बीयर पीबि क्लास करबा लेल जाइ। मोन खनहन रहय। खेबाक-पीबाक व्यवस्था श्रीकान्त-ललनक कोठलीमे चलय। ओहिमे ओहि दूनूक अतिरिक्त उड़ीसाक दलसिंहराय आ दिल्लीक अनिलक सेहो रहबाक व्यवस्था रहैक। हमर अधिकांश समय ओही कोठलीमे बीतय। अपन कोठलीमे त' राति क' सूतबे टा करी अथवा मोन भेल त' पढ़ी-लिखी। कोठली मुदा हमर सजल-धजल बेसी रहय। कोठली कने छोट छल। ओहिमे झाड़-फानुश लटकल रहय। रंगीन चमकौआ फीता सभ। सुन्दर लागय कोठली। एक दिन वेंजामिन, हमर रूम पार्टनर अपन गर्ल फ्रेंड के निमंत्रण देलक। हमरासँ अनुरोध केलक जे दू-तीन घंटा लेल कोठली अजबारि दिअ'। दिनक बात रहैक, हम श्रीकान्त-ललनक कोठलीमे जा' क' दोपहरिया बितेलहुँ। बादमे अपन कोठलीमे अयलहुँ त' देखने रही जे बेंजामिन वस्तुजात सरिया रहल अछि। लागल रहय जे कोठलीमे खूब उधम मचल अछि।

एक दिन दिल्लीक अनिल सेहो हमरासँ अनुरोध केलक, 'एक राति लेल अपन कोठली हमरा उधार दिअ'।'

'कोन काज अछि?' हम पुछलियैक।

'एकटा छौड़ी संग राति बितेबाक अछि।' ओ निधोख जवाब देने रहय। हमरा कोनो बहाना नहि सूझल। खाली पुछलियै, 'अनिल अलबेदा

आ बेंजामिनसँ सेहो बात कर' पड़त। ओ सभ मानत तखन ने?' अनिल हँसैत कहने रहय, 'ओकर सभक चिंता नहि करू। ओकरा सभसँ बात क' लेने छी। अहाँटा खाली अनुमति दिअ।' हम सकारि लेने रहियैक। अनिल रहरहाँ नीक-नीक शराब पियबैत छल। फ्रांसक, इंगलैंडक शराब सभ। स्कॉच, ब्लैक लेभल व्हिस्की। दूतावासमे ओकर परिचय रहैक। ओही माध्यमसँ ओ सनगर शराब सभ जुटबैत छल। हमरो सभकेँ पियाबय। ओहि दिन हम भरि राति अनिलक बिछानपर ओकर कोठलीमे सुतलहुँ। अनुमति देबाकाल खाली एकटा शर्त रखने रहियैक, 'हमर बिछानपर किछु नहि करब।' ओ सकारि लेलक। भिनसर भेल त' हम अपन कोठलीमे अयलहुँ। सभसँ पहिने अपन बिछान दिस तकलहुँ। अनिल अपन वचनक पालन केने रहय। मुदा ई नीनासँ परिचय के पूर्वक घटना रहय। नीनासँ परिचयक बाद अनिल हमरासँ कोठली उधार नहि लेलक। मुदा तैं की ओकर भँवरा मोन कोनो एके फूलपर एकाग्र भ' सकल रहय? भरिसक नहि। मुदा ओ बादमे तकर कोशिश अवश्य कर' लागल रहय। ई कोशिश ओकरामे नीनाक साहचर्यसँ शुरु भेल रहैक। नीनाक स्वभाव ओकरामे परिवर्तन आनब शुरु केलकै।

हम आ श्रीकान्त सिंह शुरुहेसँ जे घूमब-फीरब शुरु केलहुँ, तकर कारण रूस आ रूसक लोकसँ परिचयक उत्कंठे छल। भारतीय दलक आन सदस्य सभमे ई उत्कंठा भरिसक तेहन जोरगर नहि छलनि। ओ सभ बेसी दिन कतहु नहि निकलथि। निकलथि त' कोनो ने कोनो काजसँ। कोनो ने कोनो प्रयोजनसँ। बेसीकाल किछु किनबाक लेल। ओ सभ डॉलरो बेस परिमाणमे अनने रहथि। तैं डालर वा ओकर बदलेन रूबलक उपयोग हुनका लोकनिक चिंतामे प्रमुख रहैत छल। ओना रूस अथवा मास्को एहि उद्देश्यसँ कोनो नीक वा आदर्श जगह नहि छल। भारतक लोक जे सभ अपन विदेश भ्रमणक उद्देश्यमे बहुधा घूमब-फिरब, मस्ती करबाक संग इम्पोर्टेड माल किनबाक, बेसाहबाक मनोरथ पोसने रहैत अछि, तकर पूर्ति रूसमे नहि भ' पबैत छैक। कदाचित एही कारणे हाउसिंग फेडरेशनक प्रबन्ध निदेशक धीरेंद्र कुमार सिन्हा हमर रूस जेबाक प्रस्ताव सुनि हमरा

कहने रहथि, 'रूस की करै लेल जायब? ओत' किछु छैक? अहाँके विदेशे जेबाक इच्छा अछि त' जापान जाउ, अमरीका, फ्रांस, इंगलैंड जाउ। हम व्यवस्था क' देब।' हमरा त' रूस जेबाक इच्छा उत्पन्न भ' गेल रहय। रूस देखबाक इच्छा कतहु भीतरसँ जोर मारि रहल छल। दोसर ईहो कारण भ' सकैये जे तत्काल वैह प्रस्ताव संस्था के प्राप्त भेल रहैक। फेर कहिया आ कोन रूपेँ प्राप्त हेतैक से भविष्यक गर्भमे छल। हाउसिंग फेडरेशनक वातावरण सेहो तहिया हमर अनुकूल छल। अरुण जी (अरुण कुमार झा, उप सचिव) मास्कोसँ दू वर्ष पूर्वहि भ' आयल रहथि। सर्वोपरि रूपसँ सोवियत यूनियनमे प्रशिक्षण लेल संस्था वा सरकार के कोनो वित्तीय भार नहि पड़ैत रहैक। दिल्लीसँ मास्को जेबाक आ अयबाक खर्च, ओहिठाम रहबाक खर्च सोवियत यूनियनक सरकार उठा रहल छल। जे सुविधा आन देशमे प्रशिक्षण लेल कदाचिते सम्भव होइत छलैक। अहाँ अपने खर्च करू वा संस्था अथवा सरकार खर्च करय। ई सभ ओझराहटि रूसमे प्रशिक्षण लेल नहि रहैक। तैं हम प्रबन्ध निदेशककेँ मास्कोये पठेबाक अनुरोध केलियनि। ओ मानि गेल रहथि। वस्तुतः हुनकासँ पूर्वहि संस्थाक अध्यक्ष विजय कुमार मिश्र हमर अनुरोधकेँ स्वीकार क' चुकल रहथि। ओ ओहि समयमे नबे नव सांसद भेल रहथि दरभंगासँ। हुनका हमरा प्रशिक्षणमे पठेबाक लेल दिल्लीमे, खास क' तपेश्वर सिंह लग बेस प्रयास कर' पड़ल रहनि।

ई तथ्य हमरा तपेश्वर बाबूसँ दिल्लीमे भेंटक बाद बूझल भेल रहय। हम मास्को प्रस्थान करबासँ दू दिन पूर्व श्रीकान्त आ ललनक संग हुनकर आवासपर हुनकासँ भेंट केने रहियनि। तपेश्वर बाबू ओहि समयमे एन.सी.यू.आई.क अध्यक्ष रहथि। मास्कोमे अथवा कतहु विदेशमे प्रशिक्षण आदि लेल हुनकर सहमति अनिवार्य छल।

त' हम दुनू गोटे जे घूमल-फिरल करी त' ओहि क्रममे एक दिन एकटा नव सिनेमा हॉलपर नजरि पड़ल। ई सिनेमा हॉल प्रेलोसकायेमे छल। हमरा सभक होस्टलसँ दू टीशन दूर। ओहि हॉलमे हिन्दी सिनेमा लागल रहय। सिनेमाक नाम रहैक 'एक ही भूल'। जितेन्द्र आ रेखा रहय ओहिमे। ई गप थिक चारि अप्रील उन्नैस सय पचासीक। हमरा सभकेँ

बड़ खुशी भेल। एत्ते दूर मास्कोमे अपन भारतक सिनेमा। बूझल रहय जे रूसी जनताकेँ हिन्दी सिनेमा आ गीत परम्परेसँ बड़ प्रिय छैक। राजकपूर ओत' बड़ लोकप्रिय रहथि। एकर प्रत्यक्ष अनुभव सेहो मास्कोमे भेटल। ओहिठामक लोक सभसँ गप्प हुअय त' ओ राजकपूरक चर्च करथि। आनो हीरो सभक चर्च करथि। सुनील दत्त, बलराज साहनी आदिक बेसी। एक बेर कोनो सांस्कृतिक कार्यक्रममे हमरा सभक चीफ डीन श्री ओलेग बहुत आबेस आ उल्लाससँ राजकपूरक गीत सुनौने रहथि, 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिशतानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी।' खूब आनन्द भेल रहैक।

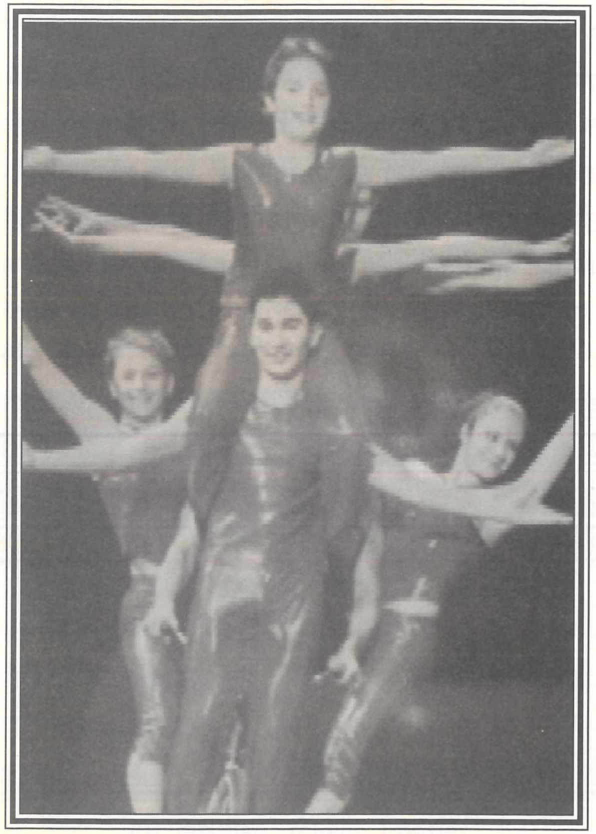
हम दुनू गोटे सिनेमा हॉलक भीतर जा क' पूछताछ केलहुँ। पता चलल जे एक घंटाक बाद शो शुरु हैत। टिकट भेटि रहल छैक। हम सभ टिकट कटाक' फेर एम्हर-ओम्हर बौआइत रहलौं। देखैत-सुनैत रहलहुँ। एक घंटा बीतलै त' हॉलमे अपन सीट धेलहुँ। सिनेमाक संवाद रसियन भाषामे डब रहैक। मुदा गीत सभ हिन्दीमे भ' रहल छल। हॉलमे बेस भीड़ रहैक। लोक सभ खूब आनन्द ल' रहल छल। मास्कोमे मास्कोवासी सभक बीचमे बैसिक' अपन भारतीय सिनेमा देखबाक अनुभव अपूर्व सुख देलक हमरा दूनूकेँ।



होस्टलमे श्रीकान्त, देशमुखक संग

छौ

ओहि दिनसँ फासिज्मपर विजयक चालीसम वर्षगांठ मनायब शुरु भेल रहय। एहि अवसरपर भारत-सोवियत मैत्री समारोह मेडिकल इन्स्टीच्यूटमे आयोजित छल। तारीख रहय नौ अप्रील। हम सभ भिनसरेमे क्लास खतम क' हबड़-हबड़ भानस-भात क', खा-पीबि ओत' गेलहुँ। भारतसँ



एक डेलीगेशन सेहो आयल रहय। हुनका सभसँ भेंट भेल। डेलीगेशनमे पटना विश्वविद्यालयक कुलपति गणेश बाबू, दिल्ली म्यूनिस्पल कांउसिलक अध्यक्ष गोयल आदि रहथि। ओ सभ ओहि अवसरपर भाषण केने छला। सभ वक्ता लोकनि सोवियत-भारत मैत्रीकेँ चिरायु हेबाक कामना केलनि। संगहि विश्वशांति ओ युद्धक विभीषिकाक अन्त लेल दुनू देशक सहयोगपर बल देलनि। भाषण सभक बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित छल। गीत सभ गाओल गेल। सोवियत नर्तकी लोकनि भारतक कुचीपुड़ी, भरत नाट्यम आ कत्थक नृत्य प्रस्तुत केलनि। सभसँ बेसी आकर्षक लागल कत्थक नृत्य। कार्यक्रममे जादू आ सर्कस सेहो देखाओल गेल। कार्यक्रमक बाद सभ गोटे होस्टल आपस अयलहुँ। इन्स्टीच्यूट द्वारा भारतीय छात्र सभक लेल अयबा-जयबाक सुविधा उपलब्ध कराओल गेल छल। खूब मोन लगलैक।

पढ़ाइ-लिखाइक अतिरिक्त इन्स्टीच्यूट द्वारा हमरा सभकेँ विभिन्न कार्यक्रम आ म्यूजियम आदि देखेबाक व्यवस्था सेहो बहुधा होइत रहैत छल। अगिले दिन अर्थात् 10 अप्रीलकेँ रसिया होटलमे भव्य कन्सर्ट देखाओल गेल। रसिया होटल रेड स्क्वायर लग छैक। कन्सर्ट हॉल बेस भव्य। होटलो खूब आकर्षक। एकदम परीलोक सन बुझाइत छलैक। कन्सर्टमे बेस भीड़ रहैक। संगीत आ नृत्यक भव्य कार्यक्रम प्रस्तुत भेल। एक संगीत नाटक सेहो देखाओल गेल। जाहिमे द्वितीय विश्वयुद्धक त्रासदीक झलक मोनकेँ डोला देलक। प्रकाश व्यवस्था, दृश्य परिवर्तन, गतिशीलता उत्कृष्ट कोटिक रहय। भाषाक ज्ञानक अभाव रहितो कार्यक्रम बहुत आकर्षक ओ नीक लागल। कथ्यपूर्ण, कलापूर्ण। ओहि कार्यक्रम लेल तीन रूबल साठि कोपेकक टिकट रहय। टिकटक अग्रिम व्यवस्था कयल गेल छल। ज्ञात भेल जे ई कार्यक्रम एहिठामक बहुतो लोक नहि देखि सकल अछि। हमर सभक शिक्षिका मैडम कीरा कहलनि जे 'हमहूँ सभ नहि देखने छी।' रातिमे 12 बजे हम सभ आपस भेल रही कन्सर्ट देखिक'।

सत्तरह अप्रीलकेँ हम सभ लेनिन हिलपर गेलहुँ। लेनिन ओहिठाम अपन अन्तिम तीन वर्ष बितौने छला। ओ स्थान जे एक पहाड़ी सन छल, करीब अस्सी कि.मी.क दूरीपर रहय। ओहि भवनकेँ जाहिमे लेनिन अपन समय बितबैत छला, एक संग्रहालयक रूप द' देल गेल छलैक। ओहि स्थानकेँ गोर्की-लेनिस्की कहल जाइत छैक। ओहि भवनमे ओ सभ वस्तु राखल छैक जे लेनिन वा हुनक परिवारक लोक प्रयोग करैत छल। लेनिनक रहबाक कोठली छोट-छिन रहय। सुतबाक पलंग आ ओछाओन सभ एकदम साधारण लोकक बिछाओन-ओछाओन सन। विलासिताक कोनो आभास ओहिमे नहि देखाइ देलक। लेनिन सात युरोपीय भाषा तथा करीब 21-22 गोट भाषा जनैत छला। हुनक सम्पूर्ण काजक अनुवाद कार्य 55 भौल्यूममे प्रकाशित अछि। संगहि लेनिनक सम्बन्धमे विश्वक 134 भाषामे प्रकाशित पुस्तक ओत' संगृहीत अछि। ज्ञात भेल जे लेनिन प्रतिदिन करीब 500 पेज पढ़ैत छला। अंतिम समयमे जखन ओ पढ़ि नहि सकैत छला त' सिनेमाक प्रोजेक्टर देखाओल जाइत छल।

19 अप्रैलकेँ क्लासक बाद 2 बजे अपराह्नमे तैयार भ' कार्ल मार्क्स म्यूजियम गेलहुँ। ओहि ठाम मार्क्स एवं एंगेल्सक पूरा जीवन चरित्र एवं हुनका लोकनिक क्रियाकलापक विस्तृत वर्णन आ ब्यौरा सुरक्षित छैक। मार्क्सक लिखल लेख सभक अंश, कैपिटल पोथीक पहिल संस्करण, कैपिटलक विभिन्न भाषामे अनुवाद संगृहालयमे देखलहुँ। मार्क्सक जन्म 1818 ई.मे तथा एंगेल्सक 1820 ई.मे भेल छलनि।

हमरा सभकेँ जनतब देल गेल जे मार्क्स एक सिद्धान्तकारेटा नहि छला, व्यावहारिक जीवनमे सेहो अनेक क्रांति केलनि। ओ पैघ अर्थशास्त्री रहथि। एंगेल्स एक व्यवसायी, सिपाही, कानून विशेषज्ञ ओ भाषाक नीक ज्ञाता रहथि।

म्यूजियममे मार्क्सक बैसबाक कुर्सी तथा प्रयोग कयल बर्तन-बासन, थारी-बाटी, काँटा-चम्मच, सिगार आदि सुरक्षित राखल रहय।

हमरा सभकेँ घुमबा-फिरबामे, कतहु अयबा-जयबामे, अध्ययन

आदिमे भानस-भातक कारणे बेस दिक्कत होइत छल। भिनसर साढ़े आठसँ क्लास, तकर बाद स्नान आदिक संग भानस करब, बर्तन माँजब समस्या बनि जाइत रहय। ताहूमे भानसक काजमे चारू-पाँचो गोटाक बीच स्पष्ट कार्य विभाजन नहि रहय। सभ एक दोसराक बारेमे सोची जे ई आगू बढ़ता, ओ बर्तन माँजता। फल ई होइत छल जे काज गड़बड़ा जाइत छल। आपसमे मनोमालिन्य सेहो बढ़' लागल रहय। तैं हमरा सभ बैसिक' निर्णय केलहुँ जे काजक बंटवारा क' लेल जाय। किछु गोटे भानस करता त' किछु बर्तन माँजता। हम आ ललन सिंह एक टीममे रहलहुँ त' श्रीकान्त सिंह आ दलसिंहराय दोसर टीममे। अनिलक कोनो ठेकान नहि रहैत छल। ओ सभ दिन खाइतो नहि रहय सझिया भानसमे। ओ जहिया क' रहय, उपरसहकियाक काज करय। हमरा आ ललन सिंहकेँ मंगल, बृहस्पति आ शनि क' भानस करबाक पार रहय। दोसर टीम बर्तन माँजय। तहिना श्रीकान्त सिंह आ दलसिंहराय सोम, बुद्ध आ शुक्रकेँ भानस करय आ हम दुनू बर्तन माँजी। रविकेँ छुट्टी रहैक। ओहि दिन सभ मीलि-जुलिक' करी। एहि प्रकारक व्यवस्थासँ काजक उत्तरदायित्व सुनिश्चित भ' गेल। आब मनोमालिन्यक कोनो प्रश्न नहि छल। एहि व्यवस्थासँ हम सभ सुखद अनुभव केलहुँ। मुदा दू बेर क', दिन आ रातिक भानस क' केँ खेनाइ समस्या बुझाइते रहल। दुनू समय भात खेलासँ ई अनुभव केलहुँ जे पेट सेहो बढ़' लागल अछि। मुदा टीमक आन सदस्यकेँ भरि पेट्टा भातक बिना गुजर नहि चलनि। तैं हमरो टीमक एक सदस्य रूपमे, नहि चाहितो ओहि व्यवस्थामे संग रह' पड़ल।

त' ओहि दिन अर्थात् 24 अप्रीलकेँ भोजन-भातक बाद हम सभ थ्री डी फिल्म देखबाक लेल गेलहुँ। थ्री डी फिल्म एक विशेष प्रकारक चश्मा पहीरिक' देखल जाइत छैक। सभ दर्शककेँ सिनेमा हॉलमे चश्मा देल गेल। थ्री डी फिल्म देखबा काल लागल जे कोनो दृश्य एकदम लग आबि गेल अछि। जेना कोनो घोड़ा वा ट्रेन सोझाँसँ आबि रहल अछि अपन पूरा गतिमे त' लागल जे आब ओ पर्दासँ बाहर भ' क' देहेपर चढ़ि

जायत। अहाँकेँ डर भ' जायत। एहि प्रकारेँ थ्री डी फिल्म बहुत रोमांचक होइत अछि। ओहि दिन जे हम सभ फिल्म देखलहुँ ओहिमे कथा जारक समयक छल। फिल्म मंद रहय। कथा एक डॉक्टरक छल। डाक्टर एकदम वैद्य सन रहय। फिल्म एक घंटाक छल।

घूरिक' अयलहुँ होस्टल त' रविन्द्रन केशवक पत्र देलक। दू टा पत्र। पटनासँ हमर पितियौत केशव लिखने रहथि। बहुत प्रसन्न भेलहुँ। अपन देशसँ ई पहिल पत्र रहय। मास्को अयलाक एक मासक बाद पहिले पहिल दू टा पत्र एक संगे भेटल। एक मासक अवधिमे हम किछुए दिनक बादसँ चिट्ठी लेल छटपट कर' लागल रही। सभक चिट्ठी अबैत रहैक। भारतीय दूतावासक माध्यमसँ। एक दिन दूतावासो गेल रही। भारतीय दूतावास प्रेलोसकायासँ दूर रहैक। प्रेलोसकायासँ मास्को। मास्कोक बाद मेट्रोसँ किरोस्काया तथा ओत'सँ ट्रॉली बस द्वारा दूतावास पहुँचल जा सकैत छल। दूतावासमे सभक चिट्ठी आयल रहैक मुदा हमर एकोटा नहि छल। बहुत दुख भेल। कतेको लोककेँ चिट्ठी लिखने रहियनि। भाइकेँ, अरुणजी, भोगेन्द्रजी, केशव, जयधारी बाबू, नन्दू, शिवशंकरकेँ। कनियाँके। मुदा ककरो उत्तर नहि आयल छल। बादमे सभक आब' लागल। चिट्ठी नहि पहुँचबाक पाछू एक मनोरंजनक कारण रहय। हमर पत्र सभ पीपुल्स फ्रेंडस् यूनिवर्सिटीमे पढ़ैत दोसर अशोक कुमार झा लग पहुँचि जाइत छल। ई बात तखन बुझलियैक जखन एक दिन एकटा लिफाफमे राखल हमर पत्र डाक द्वारा प्राप्त भेल। लिफाफपर ओहि दोसर अशोकक नाम-पता लिखल रहय। लिफाफ खोलिक' देखलहुँ त' पत्र कनियाँक छल। बहुत बादमे पाँच जूनकेँ हमर बहुत रास पत्र हमरा भेटल। ओ सभ पत्र हुनके लग पहुँचि गेल छलनि। भरिसक दूतावाससँ हबड़-हबड़मे ओ पत्र सभ ओ अपने अथवा हुनक कोनो संगी गलतीसँ अपना संग ल' गेल हेता। एहि बीचमे हम दुश्चिंतामे पड़ल रहलहुँ। बहुतो शुभ-अशुभ बात सभ सोचाइत छल। खास क' केँ अपन पिताक मादे जे बेस बूढ़ रहथि। कहीं हुनका त' नहि किछु भ' गेलनि! यदि किछु भ' गेलनि त' एत'सँ कोना जायब?

ओहि सभ क्षणमे बुझाय जे अपन देश, लोक-वेद, गामसँ कत्ते दूर आबि गेल छी। जत'सँ गाम पहुँचब सहज नहि अछि।

जखन चिट्ठी सभ भेटल त' एक्के साँसमे सभटा पढ़ि गेलहुँ। कनियाँ आन अनेक बातक संग लिखने रहथि जे, 'मझिला बाबू (केशव) कहैत रहथि जे ओत' छौंड़ी सभ ओहिना बौआइत रहैत छैक। कोनो भारतीय पुरुषकेँ देखैत छैक त' पकड़ि लैत छैक। अशोक भाइ कहीं ककरोसँ बियाह ने क' लेथि। ओत'सँ कोनो मेमकेँ ने लेने आबथि। हमरा मुदा विश्वास नहि भेल। ओ फूसि कहैत छथि। अहाँ से नहि क' सकैत छी।' पाँती पढ़ि खूब हँसी लागल। कनियाँकेँ उत्तरो देलियनि। ताबत् भारत घुरबाक सेहो समय आबि रहल छल। हम अपन नामधारी ओहि अशोक कुमार झाकेँ धन्यवाद देलियनि मोने मोन। बेचारे सभटा पत्र हमरा भेटि जाय तकर यत्नपूर्वक व्यवस्था केने रहथि। इच्छा भेल रहय जे हुनकासँ भेंट होइतय। मुदा से सम्भव नहि भ' सकल। पता नहि ओ एखन कत' हेता? की करैत हेता?

हमरा सभकेँ इन्स्टीच्यूट द्वारा फुटबॉल मैच, सर्कस आदि देखेबाक व्यवस्था सेहो कयल गेल छल।

फुटबॉल मैच दू मइकेँ देखलहुँ। सर्कस तीन मइकेँ। मुदा ओहिसँ पूर्व एक मइकेँ 'मइ दिवस'क अवसरपर मार्च पास्टमे भाग लेलहुँ। मार्च पास्ट डीन आफिससँ शुरु भेल। ओत'सँ हम सभ आ हमरा सभक संग हजारो लोक झंडा, बैनर आदि ल' क' कतारमे चलल। निश्चित जगहपर जिला पदाधिकारी सभ सैल्यूट लेलनि। लोक सभ रंग-बिरंगक कपड़ामे सजि-धजिक' घूमि रहल छल। मार्च पास्टक समयमे पानि बरिस' लागल मुदा लोकक उत्साहमे कोनो कमी नहि आयल। अनुशासन बनल रहल।

मार्च पास्टसँ वापस अयलाक बाद कतहु नहि गेलहुँ। पानि पड़िये रहल छल। सुनलहुँ जे रेडस्क्वायर बेस राति धरि बिजलीक रंग-बिरंगी रोशनीसँ जगमग करैत रहल। खूब धूमधाम भेल। अजुका दिनकेँ

ओहिठामक लोक खूब हर्षोल्लाससँ मनबैत अछि। छुट्टी सेहो छल। अगिलो दिन छुट्टी रहय। खा-पीबिक' आराम क' रहल छलहुँ कि ओहिठामक लुलुम्बा यूनिभर्सिटीक दू टा भारतीय छात्र हमरा सभसँ भेंट कर' अयला। उमेश तिवारी आ श्याम नारायण सिंह। बेस अपनत्व भरल वातावरणमे गप-सप भेलैक।

ओहि दिन बेरखन तीन बजे हम सभ फुटबॉल मैच देखबाक लेल गेलहुँ। मैच ओलम्पिक स्टेडियममे आयोजित छल। ओहि स्टेडियममे एक लाख लोककेँ बैसबाक व्यवस्था रहैक। मैच रूस आ स्वीटजरलैंडक बीच रहैक। रूस चारि गोलसँ जीतल रहय। ओलम्पिक स्टेडियमसँ घूमैत-फिरैत हम सभ रेडस्क्वायर आयल रही। ओत' थोड़ेक काल रोशनी सभ आ आतिशबाजी आदि देखल। बेस मनोहारी दृश्य सभ देखबामे आयल। ठीक अगिला दिन अर्थात् 3 मइकेँ हम सभ सर्कस देखबा लेल गेलहुँ। सर्कस पक्का हॉलमे होइत रहय। ई सर्कस ओल्ड सर्कस छल। एहिसँ पूर्व हम सभ न्यू सर्कस देखने रही। दुनूमे अन्तर स्पष्ट रहय। ओल्डमे शारीरिक करतबपर जोर बेसी रहय मुदा न्यूमे बिजलीक तकनीकसँ प्रभाव उत्पन्न करबापर जोर बुझना गेल। ओल्डमे शारीरिक कार्यमे पहलमानक भारोत्तोलन, झूला, संतुलनक प्रदर्शन आदि कमाल के रहय। मुदा जोकरक कार्य बढ़िया नहि रहय। न्यू सर्कसमे जोकरक अभिनय, प्रदर्शन उच्च कोटिक रहय। स्वाभाविक रूपसँ न्यू सर्कसमे चमक-दमक बेसी छल।

रूसमे सर्कस बहुत लोकप्रिय बुझना गेल। एकर लोकप्रियताक पाछू मनोरंजनक संग-संग शारीरिक सौष्ठव, मजबूतीक मानसिकता सेहो विद्यमान लागल। जाहि कोनो रूसी नागरिकसँ भेंट भेल तकर देह-दशा, कद-काठी बेस बलगर ओ सुडौल बुझायल। होस्टलोमे जे लोकनि रहथि, हुनकर कोठलीमे शरीरकेँ तन्दुरुस्त रखबाक लेल कसरतक सामान सभ मौजूद भेटल। जिनका सभसँ हाथ मिलेबाक अवसर भेटल ताहिमे वृद्ध किएक नहि होथि हुनकर हाथ आ कलाइ बहुत कड़गर आ बलगर लागल। एहन दमगर बलगर हाथ अपन देशमे खाली रमानन्द तिवारीक

देखने रही। छूने रही। तिवारीजी एक बेर सरिसव गाममे भाषण देबाक लेल आयल रहथि। समाजवादी नेता छला ओ। बिहार सरकारमे मंत्री सेहो बनला। स्वतंत्रता सेनानी रहथि। पुलिसक नोकरी सेहो केने रहथि। हमर जेठ भाइ प्रो. सुशील झा सभाक अध्यक्षता केने रहथि। हमरे ओहिठाम तिवारीजी दुपहरियाक भोजन केने रहथि ओहि दिन। हम सभ धिया-पूता रही। भोजन क' जखन ओ आराम कर' लगला त' हमरा ओ अपन हाथ दबाब' लेल कहलनि। हुनकर कलाइ बहुत चौड़गर छल। ओहेन हाथ आ कलाइ फेर मास्कोयेमे जा क' देखलहुँ। व्यक्तिगते स्तरपर नहि, सामूहिक स्तरपर सेहो स्वस्थ शरीर ओहिठामक संस्कृतिक अंग बनि गेल अछि। एहि दिशामे सुनियोजित प्रयास सेहो कयल जाइत अछि। हमरा लोकनि जनैत छी जे खेलकूद एहिठामक सामाजिक जीवनक अंग थिक। जानकारी भेल जे ओत' 2, 32, 000 शारीरिक संस्कृति-समूह गठित अछि जाहिमे 6 करोड़ 36 लाख लोक एकताबद्ध छथि। हुनका लोकनिक लेल 3500 स्टेडियम, 74000 जिमनेजियम, 1750 स्वीमिंग पूल, 108000 फुटबॉलक मैदान आ करीब 400000 वॉलीबॉल आ बास्केटबॉलक खेलक मैदान उपलब्ध अछि। लोकक मनोरंजन लेल सेहो ओत' पर्याप्त व्यवस्था कयल गेल अछि। करीब 1, 53000 सिनेमा हॉल, 604 थियेटर, 1520 म्यूजियम, 132000 पब्लिक पुस्तकालय, 138000 क्लब आ करीब 1100 राजकीय पार्क बनल अछि जकर उपयोग लोक सभ करैत छथि। शारीरिक विकास लेल खेलकूदक अतिरिक्त मानसिक विकासक लेल पोथी पढ़बाक हिस्सक जेना ओहिठामक लोकक खूनमे मीलि गेल अछि। घुमबा-टलहबाक क्रममे जखन कोनो ट्रेन, मेट्रो वा बसमे चढ़ी त' लोककेँ किछु ने किछु पढ़िते देखियैक। से मोटगर-मोटगर पोथी सभ। रहरहाँ ट्रेनमे देखियैक जे सीटपर बैसलाक बाद लगले लोक अपन बैगसँ कोनो मोटगर पोथी निकालिक' पढ़' लागय। पोथी पढ़बाक एहन आबेस रूसमे जत' गेलहुँ, जकरा देखलहुँ, एकदम अद्‌भुत लागल। रूसमे शारीरिक आ मानसिक विकासक ई उपक्रम ओहिठामक संस्कृतिक अभिन्न अंग बनि

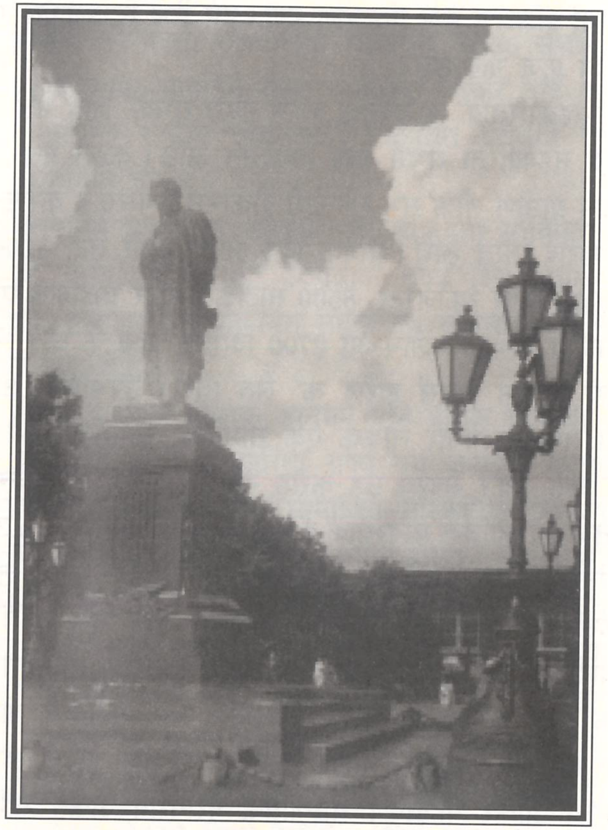
गेल अछि। संस्कृतिक एहि विकासमे सामूहिक चेतनाक विकास एकदम एकमेत भ' चुकल अछि। व्यक्तिवादिताक मानसिकताक विरुद्ध एहि तरहक सुनियोजित डेग सभ परम्पराक अंग बनि गेल अछि। ई रूसक राष्ट्र रूपमे विकासक एक विलक्षणता थिक। एहि दृष्टिसँ अपना देशक फूट-फूट जीबाक व्यक्तिवादी चलनिक बढ़ैत चल जायब त्रासद लागि सकैत अछि। त्रासद ईहो लागि सकैत अछि जे हम सभ अपन राष्ट्रीयताक खानामे भारतीयता लिखियोक' कतेक प्रतिशत भारतीय बनि सकलहुँ अछि? एही संग ईहो तथ्य सोचबाक लेल विवश करैत अछि जे सोवियत संघक विघटनक बाद आब की स्थिति अछि ओहिठामक? हमरा लगैत अछि जे स्थितिमे जेहेन परिवर्तन आयल हो, ओहिठामक समाज एहि दिशामे जतेक आगू बढ़ि गेल अछि ताहिमे पटरीसँ एकदम नीचाँ उतरि जायब सम्भव नहि अछि।



भवन आ मूर्ति

सात

मास्को पहुँचलाक बाद सहकारिताक अध्ययनक क्रममे हम अपन प्रथम क्लास 25 मार्च 1985 केँ शुरु केलहुँ। क्लासक बाद ओहि दिन हम सभ चिकित्सा जाँच लेल गेलहुँ। निबन्धन लेल फार्म भरिक' सेहो देलियैक।



लैम्पपोस्ट आ स्टैच्यू

फार्ममे अपन भाषाक रूपमे मैथिली लिखलहुँ। चिकित्सा जाँचमे सभ ठीक रहय। खाली कने ब्लड प्रेशर बढ़ल छल। कहल गेल जे कोनो बात नहि। एना होइ छै। खाली ब्लैक कॉफी नहि पीयब।

हमरा सभकेँ क्लासमे कृषि साख, उपभोक्ता सहकारिता, सहकारिताक सिद्धांत, उत्पादक सहकारिता, हाउसिंग को-ऑपरेटिवक संग, सहकारिताक प्रबंधन, राजनीतिक अर्थशास्त्र ओ वर्तमान सोवियत संघक सम्बन्धमे जानकारी देल गेल। क्लासमे पढ़ाइ 15 मइक पूर्व धरि होइत रहल। 15 मइकेँ हम सभ सहकारिताक व्यावहारिक अध्ययन लेल मास्कोसँ स्ट्राब्लोपोल गेलहुँ। भारतीय टीमकेँ दू भागमे विभाजित क' व्यावहारिक प्रशिक्षण लेल पठाओल गेल। हम सभ स्ट्राब्लोपोल गेलहुँ त' दोसर टीम फ्रुंज गेल छल।

सहकारिताक अध्ययनक क्रममे हमरा सभकेँ ज्ञात भेल जे रूसमे उपभोक्ता सहकारिता सभसँ बेसी विकसित अछि। कहल गेल जे केवल एक घंटामे ग्रामीण लोक सभ सहकारी दोकानसँ लगभग दू करोड़ रूबलक सामान खरीद करैत छथि। प्रत्येक दिन 5600 टीभी सेट, 5100 रेडियो सेट, 3000सँ ऊपर रेफ्रीजरेटर, 8500 साईकिल-मोटर साईकिल एवं मोटर, 3600 कपड़ा धोबाक मशीन आ 2700 विभिन्न प्रकारक घड़ी आ देवाल घड़ी एही दोकान सभसँ खरीद क' लैत छथि। उपभोक्ता सहकारिता सोवियत संघमे कामगार लोकक एक सामूहिक, सामाजिक ओ आर्थिक संगठन थिक जकर सदस्य छह करोड़ नागरिक छथि। सोवियत राज्यक राजनीतिक ओ आर्थिक व्यवस्थाक ई एक महत्वपूर्ण कड़ी थिक। उपभोक्ता सहकारिताक उद्भव एहिठाम एक सय वर्ष पूर्वहि भेल। शुरूहेसँ ई पूँजीवादसँ संघर्षमे श्रमिक जनताक सहायक बनि गेल अछि। महान समाजवादी क्रांतिक बाद त' उपभोक्ता सहकारिता युवा सोवियत राज्यकेँ जनताक बीच भोजन सामग्रीक आपूर्तिमे बेस सहायता केने छल। सोवियत राज्य आ कम्यूनिस्ट पार्टीक संस्थापक बी.आइ. लेनिन सहकारिताक उच्च मूल्य ओकर महत्वपूर्ण सांस्कृतिक परम्परामे अँकैत रहथि जेकर उपयोग समाजवादी समाजक स्थापनामे कयल जा सकैत अछि। राज्यक

सर्वांगीण सहायतासँ उपभोक्ता सहकारिता एत' राज्यक व्यापार संगठन सभक संग मीलि आर्थिक प्रतियोगितामे निजी क्षेत्रकेँ एकदम बाहर क' देलक। ओकर वर्चस्व एहि प्रकारेँ थोक एवं खुदरा व्यापारपर पूर्ण रूपेँ स्थापित भ' गेल। एही संग दोसर महत्वपूर्ण काज ओ ई केलक जे कृषक लोकनिकेँ एहि प्रकारें शिक्षित केलक जे ओ लोकनि सामूहिकताक भावनाक संग अर्थ व्यवस्थाक संचालनमे सामूहिक प्रयत्नक महत्वकेँ बूझय लगला। फल ई भेल जे शनैः-शनैः छोट आ मध्यम श्रेणीक उत्पादक लोकनिक एक सामूहिक संगठन बनि गेल जे सहकारितामे सामूहिक कृषिक नामे जानल जाय लागल। सामूहिक कृषि व्यवस्थाक स्थापनाक बाद उपभोक्ता सहकारिता सोवियत सैनिक सभकेँ भोजन सामग्री आ कपड़ाक आपूर्तिमे सहयोग केलक। तकर बाद फासिज्मक पराजयक उपरान्त राष्ट्रीय अर्थतंत्रकेँ विकसित करबामे ओ अपन महत्वपूर्ण योगदान देलक।

वर्त्तमानमे उपभोक्ता सहकारिताक सक्रियता सोवियत जनताक भौतिक ओ सांस्कृतिक स्तरकेँ उठयबाक लक्ष्य दिस अग्रसर अछि। सहकारिताक बढ़ैत भूमिका सोवियत संघक नब संविधानमे विभिन्न रूपें प्रतिध्वनित भेल अछि।

सोवियत संघक मौलिक कानूनमे एहि बातक व्यवस्था अछि जे जनताक संगठनक रूपमे सहकारिता राज्य एवं जनताक कार्यकलापमे, संगहि राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक निर्णयमे अपन नियमावलीमे निहित उद्देश्यक अनुरूप सहभागी होयत। भारतक संविधानमे आब सेहो एक संशोधन द्वारा सहकारिताक सम्बन्धमे एक परिच्छेद जोड़ल गेल अछि। रूसमे राज्य सहकारी सम्पत्तिक सुरक्षा करैत अछि तथा ओकर वृद्धि हेतु प्रयत्नशील रहैत अछि। सहकारी सम्पत्ति ओहिठाम समाजवादी सम्पत्तिक रूपमेसँ एक रूपक प्रतिनिधित्व करैत अछि। राष्ट्रीय व्यापारक सम्पूर्ण कारबारमे उपभोक्ता सहकारिता एक तिहाइक योगदान दैत अछि। सहकारी व्यापारक विकास रूसमे वैज्ञानिक ढंगसँ कयल गेल अछि। एक दिस जत' ओ लोकक निवास स्थानक नजदीक धरि जा क' उपभोक्ता

सामानक आपूर्त्ति करैत अछि, ओतहि दोसर दिस परिष्कृत तकनीकी सामान, घरेलू सामग्री फैशनेबुल वस्तु सभक बिक्री व्यापक क्षेत्रमे केन्द्रित करैत अछि। विक्रय केन्द्र, पैघ विभागीय भंडार तथा विशिष्ट प्रकारक भंडार सभ ग्रामीण क्षेत्रमे स्थापित कयल गेल। कियो ग्रामीण क्षेत्रमे एहि प्रकारक भंडार सभकेँ बच्चाक दुनियाँ, उपकरण एवं घरेलू वस्तु तथा किताबक दोकानक रूपमे सहजेँ देखि सकैत अछि। आब ग्रामीण लोककेँ अपन जरूरी समान किनबाक लेल शहर नहि जाय पड़ैत छनि। देशमे सहकारी विक्रय केंद्रक संख्या तीन लाख सत्तरि हजारसँ बेसी अछि। एकर अतिरिक्त हजारो चलंत दोकान ग्रामीण लोकक सेवा करैत अछि। चलंत दोकानक द्वारा उपभोक्ता सामग्री छोट-छोट जगहपर, पहाड़ी गाम सभमे, पशुपालन क्षेत्र सभमे, कैम्प सभमे दूर दूर धरि वितरित कयल जाइत अछि।

उपभोक्ता सहकारिताक एक विशेषता ओत' कृषि उत्पादनसँ नजदीकी सम्बन्धक सेहो अछि। उपभोक्ता सहकारिता साठि प्रकारक कृषि उत्पाद एवं कच्चा मालक खरीद करैत अछि। मुख्य खरीदमे ऊन, मधु, खरबूजा, तरबूज आ विशेष प्रकारक वस्तु सभ अछि। आलूक सम्पूर्ण खरीदमे उपभोक्ता सहकारिताक हिस्सा तकरीबन पचास प्रतिशत, तरकारीक चालीस प्रतिशत, फलक पच्चीस प्रतिशत एकट्ठा करबामे आ भंडारणमे अछि। जंगली फल बेरी, मशरूम आ औषधीय वनस्पति कच्चा मालक रूपमे सेहो व्यापक स्तरपर खरीद कयल जाइत अछि। सहकारी उद्योग पाँच अरब रूबलसँ अधिकक खाद्य सामग्री उत्पादित करैत अछि। एहि सामग्री सभमे परिरक्षित फल आदि, मिष्ठान, साउस, बीयर आ कोमल पेय पदार्थ सभ, सूखल, नमकीन एवं मशालेदार खाद्य पदार्थ आदि अछि। स्थानीय कच्चा मालक उपयोग क' उपभोक्ता सहकारिता स्मृति चिन्ह, लकड़ीक सामान सभ, व्यापारिक ओ तकनीकी उपकरण, वस्त्र आ जूता आदिक निर्माण सेहो करैत अछि। अन्य समाजवादी देश सभक संग सेहो एकर व्यापार-विनिमय चलैत छैक।

उपभोक्ता सहकारितामे तीस लाख लोककेँ रोजगार भेटल छैक।

एहि कर्मचारी लोकनिकेँ शिक्षण-प्रशिक्षणक व्यवस्था व्यापक स्तरपर कयल गेल छैक। एहि कर्मचारी लोकनिक परिश्रमकेँ जनता द्वारा खूब सराहल जाइत अछि। 1968मे सोवियत सरकार द्वारा उपभोक्ता सहकारिताकेँ उच्चतम अलंकरण 'ऑर्डर ऑफ लेनिन'सँ सम्मानित कयल गेल छल। हजारो सहकारी कर्मचारीकेँ सोवियत ऑर्डर आ मेडल सभसँ अलंकृत कयल गेल अछि। सहकारी सदस्य अपन सहकारी संस्थाक वास्तविक मालिक होइत छथि। जनताक व्यापक सहभागिता सहकारी कार्यमे लोकतांत्रिक सिद्धांतपर आधारित अछि। प्रत्येक काज केनिहार पुरुष ओ स्त्री सहकारी संस्थाक सदस्य भ' सकैत अछि। सदस्य लोकनिक सहभागिताक आधारभूत स्वरूप संस्थाक प्रबंधन लेल सदस्यक अथवा हुनकर प्रतिनिधि लोकनिक आम सभामे देखल जा सकैत अछि। अद्यतन प्रतिवेदनक अनुसार देश भरिमे सहकारी संस्थाक दू लाख बीस हजार आम सभा आयोजित भेल अछि। करीब तीस लाख लोक निर्वाचित प्रबंधनमे काज करैत छथि। उपभोक्ता सहकारिताक सदस्य ओ कर्मचारी लोकनि ग्रामीण सोवियतसँ ल' क' सुप्रीम सोवियत तकमे, जे सोवियत संघक शासन व्यवस्था चलबैत अछि, मे निर्वाचित भ' सकैत छथि। देशमे उपभोक्ता सहकारिताक संगठन पाँच स्तरीय संरचनाक रूपमे कार्यरत अछि। सभसँ निचला स्तरपर प्राथमिक समिति, तकर बाद जिला उपभोक्ता यूनियन वा समिति, ताहिसँ ऊपर क्षेत्रीय उपभोक्ता यूनियन आ ओहिपर गणतंत्रीय उपभोक्ता यूनियन आ सभसँ ऊपर पन्द्रह गणतंत्रक सेन्ट्रोसोयूस (CENTROSOYUS)। सभ स्तरपर निर्वाचित ओ नियुक्त सदस्यक सम्मिलित प्रबन्ध परिषद् अछि। उपभोक्ता सहकारिता व्यापार, उत्पादनक कार्य संग होटल आदि सेहो चलबैत अछि।

सोवियत संघमे चारि प्रकारक सहकारी संस्था कार्यरत अछि। कृषि लेल सामूहिक फार्म, जेकरा कोलखोज कहल जाइत अछि। दोसर, उपभोक्ता सहकारिता, तेसर मत्स्य पालनक सामूहिक फार्म तथा हाउसिंग आ गेराज निर्माण सहकारिता। रूसमे अक्टूबर क्रांतिसँ पूर्व खेतपर निजी अधिकार रहय। खेत व्यक्तिगत स्वामित्वक अधीन छल। बेसी खेत

अल्पसंख्यक अभिजात वर्गक हाथमे रहय। तीस हजार जमींदारक हाथमे जतबा खेत रहय, ओतबे खेत एक करोड़ कृषकक हाथमे छल। ग्रामीण क्षेत्रमे सामंती व्यवस्थाक अवशेष कृषि समस्याक एक विशिष्ट कारण रहय। ओना कृषिदास प्रथा ओत' 1867मे समाप्त भ' गेल रहय, मुदा कृषक अपन जमींदारपर निर्भर रहबे करथि। एकर अतिरिक्त समुदाय आधारित काश्तकारी अवधि प्रक्रिया अस्तित्वमे रहबे करय। एहि व्यवस्थामे खेतक विभाजन-पुनर्विभाजन कृषकक बीच लगातार भ' रहल छल। सावधिक काश्तकारीक एहि व्यवस्थामे जमीनक उर्वरा शक्ति आ उपज कम भ' रहल रहय। बीसम शताब्दीक प्रारम्भमे सभ मिलाक' बीस करोड़ कृषक परिवारमे 65 प्रतिशत गरीब कृषक, बीस प्रतिशत मध्यम कृषक तथा 15 प्रतिशत धनीक कृषक रहथि जिनका लग खेत रहय। एहि प्रकारेँ बहुसंख्यक कृषक एकदम गरीब रहथि। तीस प्रतिशत कृषक लग अपन घर नहि रहय। खेत आदिकालीन काठक बनल हरसँ जोतल जाइत छल। जारशाही द्वारा कृषि समस्याक समाधानक दिशामे कोनो कोशिश नहि कयल गेल रहय। एहि सभ स्थितिक आकलनक बाद लेनिन खेतक राष्ट्रीयकरणपर जोर देलनि। 1917मे अक्टूबर क्रांतिक तुरन्त बाद लेनिन खेतपर डिक्री पारित केलनि जे खेतकेँ एक राष्ट्रीय सम्पत्तिक रूपमे वर्गीकृत क' देलक। कृषकक इच्छापर खेत हुनका उपयोग लेल देल गेल। लेनिन सावधिक काश्तकारी सम्बन्धी समतावादी व्यवस्थाक विरूद्ध छला। लेकिन जमीनपर पारित डिग्रीक अनुसार कृषकक हित देखब जरूरी रहय। लेनिन लिखलनि जे छोट-छोट खेत गरीबी खतम करबामे अक्षम अछि। समाजीकृत खेत पैघ स्तरपर खेतीक विकास करबाक आवश्यकता उत्पन्न क' देलक। मुदा ओहिकालमे कृषकलोकनि एहि विचारकेँ खारिज क' देलनि। तकरा बाद लेनिन कृषिक प्रश्नपर नव कार्यक्रमक मादे विचार करब शुरु केलनि। ओहि कार्यक्रमकेँ सोवियतक पहिल कांग्रेसमे 1919मे अंगीकृत कयल गेल। मुदा ओ कार्यक्रम ओहिकालमे लागू नहि कयल जा सकल किएक त' देशमे असैनिक युद्ध आ विदेशी सैनिकक हस्तक्षेप शुरु भ' गेल। ई उल्लेखनीय थिक जे अक्टूबर क्रांतिमे भाग लेनिहार बेसी

लोक कृषक रहथि। तेँ कृषक लोकनिक एहि योगदानक परिप्रेक्ष्यमे हुनका लोकनिककेँ पारिश्रमिक स्वरूप जमींदार लोकनिक स्वामित्ववला पन्द्रह करोड़ हेक्टेयर खेत देल गेलनि। एकर अतिरिक्त बैंक तथा जमींदार लोकनिक द्वारा प्रदत्त लाखों-हजारों करोड़ रूबलक कर्ज चुकेबासँ सेहो कृषक लोकनिकेँ मुक्त क' देल गेल।

लेनिनक सहकारी योजना, सहयोगक आधारपर कृषिक समाजवादी रूपान्तरणक योजना छल। लेनिनक परीक्षण सारांश रूपमे सम्भावित तरीका आ सहयोग विकासक सिद्धांतपर ग्रामीण क्षेत्रमे भेल। हुनकर अनुसार सहयोगक पूर्वापेक्षाक आधार एहि प्रकारेँ छल :

1. सर्वहाराक हाथमे शक्तिक केंद्रीकरण।
2. कृषिमे राजकीय क्षेत्रक अस्तित्व।
3. कामगार आ कृषकक मैत्री।
4. कृषि उत्पादनक साधनक निर्माण लेल पैघ उद्योगक विकास।

एकसँ अधिक बेर लेनिन कृषिमे पुआर-भूसा, भौतिक आ तकनीकी आधारक महत्वकेँ रेखांकित केलनि। सहकारितामे कृषकक संलग्नताक लेल लेनिन आधारभूत सिद्धांत बनौलनि। हुनकर कहब छल जे कृषककेँ सहकारितामे योगदान लेल हुनका लोकनिक संग जोर-जबर्दस्ती नहि कयल जेबाक चाही। सहकारितामे सदस्यता स्वैच्छिक रहय। सहकारिता तखने जीवित रहि सकैत अछि जखन ओकर स्थापना कृषक लोकनिक द्वारा स्वयं कयल जाय। लेनिन स्पष्ट केलनि जे प्रशासन द्वारा जर्बदस्ती कृषककेँ सहकारी संस्थाक सदस्य बनेबाक कोशिशक नकारात्मक प्रभाव होयत। दोसर महत्वपूर्ण सहकारी सिद्धांत जे लेनिन अपनेबाक लेल कहलनि से सहकारिताक विभिन्न रूपक क्रमिक विकासक मादे छल। ओ ई अनुशंसित केलनि जे सहयोगक प्रक्रिया आसान आ सुलभ सहकारिताक माध्यमे, उदाहरणस्वरूप आपूर्ति, पणन साख आदिक क्षेत्रमे शुरु कयल जेबाक चाही। एहि सहकारिता सभक माध्यमे कृषक लोकनि सामूहिक कृषि आ संयुक्त व्यापार सम्बन्धी कार्य सीखि सकैत छथि। एहि सभ कार्यक बादे कृषि उत्पादक सहकारिता शुरु कयल जाय।

1920मे सोवियत संघमे मुख्य रूपसँ तीन प्रकारक आसान कृषि सहकारिता अस्तित्वमे रहय। पहिल, एहन समुदाय (कम्यून) जे सभ किछु खेत, उपकरण, पशुधन आदिक समाजीकरण केने रहय मुदा व्यक्तिगत श्रमक गणना नहि क' उपजक वितरण समान रूपेँ करय। एहि प्रकारक सहकारिता सक्षम साबित नहि भेल। शीघ्रे किछु कम्यून छिन्न-भिन्न भ' गेल आ किछु दोसर प्रकारक सहकारिताक रूपमे रूपान्तरित भ' गेल। दोसर, संयुक्त खेतीक संघ जे केवल श्रमक समाजीकरण खेतीक मौसममे केलक। साल-दर-साल सहकारिताक ई रूप आर जटिल होइत गेल। एहेन संघ खेत आ उत्पादनक अन्य साधनक समाजीकरण शुरु केलक। तेसर, कृषि सहकारी संघ जे सहकारिताक अधिक जटिल रूपक प्रतिनिधित्व करैत छल। ई श्रम, खेत आ अन्य आधारभूत उत्पादनक साधन सभक समाजीकरण केलक। प्रत्येक व्यक्तिक श्रम खर्चक गणना केलक आ तकरा टीमक नेता द्वारा लिखल जाय लागल। सहकारी संघक सदस्य लोकनिकेँ उपजक वितरण हुनकर श्रम सहयोगक अनुसार कयल गेल। जे जतेक मेहनति केलनि तिनका ताही परिमाणमे उपजमे हिस्सा भेटलनि। 1928क अन्त धरि विभिन्न प्रकारक सहकारिता दू करोड़ आठ लाख लोककेँ एकताबद्ध केलक। कृषि सहकारी संघक संख्यामे वृद्धि भेल। 1923मे बारह हजारसँ बेसी कृषि सहकारी संघ छल जे 1928मे अठारह लाखसँ बेसी भ' गेल। एहि अवधिमे सहकारी संघक सदस्यता दू गूना भ' गेल। तथापि ओ 1927क वर्ष रहय जहिया पार्टी कृषिक सुदृढ़ सामूहिकीकरणक प्रस्ताव अंगीकृत केलक। ई निर्णय सामाजिक, आर्थिक ओ राजनीतिक रूपक एक पूर्व शर्त छल। राजनीतिक रूपसँ सामूहिकीकरण समाजवादक निर्माण प्रक्रियाक तहत जरूरी भ' गेल छल। ओहि समय धरि उद्योग, परिवहन, संस्था आ व्यापार आदि उत्पादन साधनक समाजीकरण भ' गेल रहय। मुदा कृषिक समाजीकरण पूर्ण नहि भेल छल। ई तथ्य कामगार आ कृषकक मैत्रीकेँ मजबूती प्रदान करबामे बाधक रहय। सामाजिक रूपसँ सामूहिकीकरण कृषकक स्तर विन्यास लेल पूर्व शर्त छल। क्रांतिसँ पूर्वक अवधिमे एक करोड़ सात लाख कृषि फार्म रहय जे

क्रांतिक बाद दू करोड़ पच्चीस लाख भ' गेल। मुदा खेतक क्षेत्रफल जे कृषि हेतु उपयोग होइत छल से समाने रहल, ओहिमे वृद्धि नहि भेल। एही संग धनीक कृषक जिनका कुलक कहल जाइत छल, विद्यमान रहथि आ हुनक एक करोड़ एक लाख कृषक फार्म रहय।

आर्थिक रूपसँ कृषिक सामूहिकीकरण औद्योगीकरणक पूर्व शर्त रहय। औद्योगीकरणक लेल बहुत पूंजी निवेशक आवश्यकता छल। जेँ कि सोवियत रूस एक कृषिपर आधारित देश छल तेँ निधिक स्रोत प्रमुख रूपसँ कृषि उत्पादने रहय। विदेशी राज्यसँ कोनो सहायता सोवियत देश नहि पाबि सकैत छल। वर्ष 1929मे सोवियत संघमे सामूहिकीकरण शुरु भेल। 1930 धरि कुल कृषकक चौबीस प्रतिशत सहकारिताक सदस्य भ' गेल। 1932मे सदस्यता साठि प्रतिशत भेल आ 1937 धरि बेरानवे प्रतिशत कृषक सहकारिताक सदस्य भ' गेला। सामूहिकीकरणक प्रक्रियामे अंतिम शोषक वर्ग कुलक समाप्त भ' गेल।

सोवियत संघमे सामूहिक कृषि फार्म आ राज्य कृषि फार्मक अतिरिक्त व्यक्तिगत सहायक खेती व्यवस्था सेहो लागू अछि। एहि प्रकारक खेती सामूहिक ओ राज्यक फार्ममे काज केनिहार कृषक फूटसँ करैत छथि। राज्य द्वारा तीन प्रतिशत खेती योग्य जमीन एहि लेल हुनका लोकनिकेँ देल गेल छनि। व्यक्तिगत सहायक खेती व्यवस्था आ निजी खेती व्यवस्थामे फर्क ई अछि जे ओहिमे कियो बोनिपर जन ल' क' काज नहि क' सकैत अछि। व्यक्तिगत सहायक खेती ओ खेतिहर क' सकैत छथि जे सामूहिक अथवा राज्य फार्ममे काज करैत छथि आ दूनूमे अपन योगदान द्वारा निकट अन्तर्सम्बन्ध स्थापित केने छथि। सामूहिक आ राज्य फार्म एहिमे विभिन्न प्रकारेँ हुनकर सहायता करैत अछि। सोवियत संघमे तीन करोड़ दू लाख कृषक परिवार व्यक्तिगत सहायक खेती अपन आवंटित भूमिमे करैत छथि जाहिमे एक करोड़ चारि लाख कृषक परिवार सामूहिक कृषक छथि। एहि प्रकारक खेती द्वारा विशेष रूपसँ आलू, तरकारी सभ, माँस आ दूध, अंडा, ऊन, सूर्यमुखीक बीया आदि उत्पादित कयल जाइत अछि। एकर सभक

अस्सी प्रतिशत खपत ग्रामीण क्षेत्रमे भ' जाइत छैक।

रूसमे हाउसिंग को-ऑपरेटिव सेहो काज करैत अछि। हमरा सभ आठ अप्रैलकें एक हाउसिंग को-ऑपरेटिव देखबा लेल गेलहुं। ओत' को-ऑपरेटिवक उपाध्यक्षसँ भेंट भेल। ओ विस्तृत रूपसँ गृह निर्माण सहकारिताक सम्बन्धमे हमरा सभकें जानकारी देलनि। ओ कहलनि जे एत' हाउसिंग को-ऑपरेटिव तथा स्टेट हाउसिंगक व्यवस्था छैक। राज्य द्वारा देल गेल फ्लैट आदि किरायापर भेटैत छैक। को-ऑपरेटिवमे मुदा स्वामित्व भेटैत छैक। सरकार को-ऑपरेटिवक घर लेल लोककें 70 प्रतिशत अनुदानक रूपमे दैत छैक जेकरा पच्चीस बरसमे वापस कर' पड़ैत छैक। ओहिपर कोनो सूद नहि लगै छै। ओहि समयमे प्रति वर्ग फीट निर्माण व्यय 170सँ190 रूबल पड़ैत रहैक। हाउसिंग को-ऑपरेटिव ओत' सरकारक पूर्ण सहायतासँ चलैत रहैक। मास्कोमे एकर संघ कार्यरत छैक जे सभसँ पैघ संस्था छैक। हमरालोकनि ओत' सहकारिता क्षेत्रमे बनल गेराज को-ऑपरेटिव सेहो देखबा लेल गेलहुं। गेराज को-ऑपरेटिवक पाँच मंजिला विशाल भवनमे मोटर सभकें रखबाक व्यवस्था छलैक। करीब एक हजार मोटर ओत' राखल जा सकैत छल। विभिन्न मंजिलपर घुमैत मोटर सभकें देखिक' अद्भुत लागल। वस्तुतः एहि को-ऑपरेटिवक आवश्यकता एत' बहुत छैक से अनुभव भेल। विभिन्न ठाम खुलामे सैकड़ो मोटर राखल देखलियैक। एहन गेराज को-ऑपरेटिवक बनि गेलासँ मोटरकें खुलामे अथवा सड़कक कातमे नहि राख' पड़तैक।

सोवियत संघक संविधानक अनुच्छेद 44मे एहि ठामक नागरिककें घर सम्बन्धी अधिकार देल गेल छैक। एहि अधिकारकें सुनिश्चित करबाक लेल राज्य एवं सामाजिक स्वामित्वक गृहक विकास आ रख-रखावक व्यवस्था कएल गेल छैक। को-ऑपरेटिव एवं व्यक्तिगत आवासक सुविधा द' क' वितरणक स्वच्छ व्यवस्था क' क', कम किराया, कम खर्च पर उपयोगी सेवा प्रदान क' नागरिककें आवासक सुविधा प्रदान कएल जाइत अछि।

एत' एपार्टमेंट आवासक लेल देवाल एवं अन्य जरूरी वस्तु सभ

भारी उद्योगमे पूर्वे निर्मित क' लेल जाइत अछि। उदाहरणस्वरूप भनसाघर अथवा स्नान गृहक देवाल पाइप एवं बिजलीक तार आदि लगाक' पूर्वे बना लेल जाइत अछि। तखन देवाल सिलिंग अथवा फर्शकें ट्रक द्वारा भवन निर्माण स्थल धरि पहुँचा देल जाइत अछि। ओहिठाम विशाल क्रेनक द्वारा यथास्थान राखिक' हाथसँ ओकरा परिष्कृत कयल जाइत अछि। एहि प्रकारें कोनो मकान लगले तैयार भ' जाइत छैक।



लेनिनक अथक श्रम

आठ

पन्द्रह मइ उन्नैस सय पच्चासीकेँ हम सभ स्ट्राब्लोपोल जेबाक तैयारी भिनसरेसँ शुरु क' देलहुँ। ओहिठाम सहकारिताक व्यावहारिक प्रशिक्षण पयबाक छल। करीब पन्द्रह दिन ओहि इलाकामे रहबाक छल। भिनसरसँ बटखर्चा लेल आलू चौप बनब' लगलहुँ सभ मीलिक'। हमरा सभकेँ दू भागमे बाँटिक' व्यावहारिक प्रशिक्षण लेल पठाओल गेल। पहिल बैच हमरा सभसँ पहिने, दू घंटा पूर्वहि फ्रुंज लेल चल गेल। हम सभ मास्को आबिक' एक बाजिक' पैंतालिस मिनटपर ट्रेनसँ स्ट्राब्लोपोल लेल प्रस्थान केलहुँ। हमरा सभ संग चीफ डीन श्री ओलेग तथा दुभाषिया श्रीमती तानिया



स्ट्राब्लोपोलमे भारतीय दल

रहथि। अपेक्षाकृत ट्रेन बेस मंद गतिसँ चल'बला बुझायल। ज्ञात भेल जे एकर औसत गति 50सँ 55 कि.मी. प्रतिघंटा रहत। बौगी हमरा सभक मुदा नीक रहय। ट्रेनमे चढ़लाक बादसँ यात्रा खूब मनलग्गू रहल। रस्तामे ट्रेनसँ बाहरक परिदृश्य देखैत रहलहुँ। गाछ-वृक्ष, गाम-घर, एकपेरिया रस्ता, पोल सभ खसल। मिला जुला क'भारतीय गाम सन अहूठामक गाम सभ लागल। एक ठाम इनारसँ सेहो पानि निकालैत देखलियैक। इनार झाँपल रहय। रस्ता सभ कच्ची छल बेसी। खेती-पथारी भ' रहल छल। मकान सभ बहुत दूर-दूर रहय। बेसी टीनक छत बला मकान। अलग-अलग। मुदा प्रत्येक घरमे टीवीक एन्टेना। ट्रेनमे किताब पढ़ैत रहलहुँ। बाहरक दृश्य देखैत रहलहुँ। एहि ठामक मैदानी भागमे खेती तथा ऊँच-नीच भागमे घर आदि देखलहुँ। रस्तामे दोन नदी सेहो भेटल। बड़ी दूर धरि करीब पन्द्रह मिनट धरि ट्रेन लाइनक समानान्तर बहैत नदी एक दिस आ दोसर दिस घर सभक सिलसिला। मिखाइल शोलोखोवक प्रसिद्ध उपन्यास 'शांत बहैत दोन' मोन पड़ल। नदीमे लोक सभ बंशी खेलाइत छल। स्टीमर चलैत छल। एकर बादक विराम बेस पैघ रहय। ट्रेन बड़ी काल धरि सुस्ताइत रहल। शहरक नाम रोस्टोभ कहल गेल।

दोसर दिन राति करीब 9.30 बजे स्ट्राब्लोपोल पहुँचलहुँ। ओहिठामक टेरीटोरियल कन्जूमर यूनियन द्वारा पठाओल बसक संग अधिकारी हमरालोकनिक स्वागत केलनि। स्ट्राब्लोपोलक उपभोक्ता संघक निदेशक भेलेनटिना बहुत आबेससँ हमरा सभकेँ अरियाइत क' ल' गेली। स्ट्राब्लोपोलक होटल काफेकेजमे ठहराओल गेल।

सत्तरह मइसँ कार्यक्रम शुरु भ' गेल। भिनसरे आठ बजे तैयार भ' क' एक स्कूलक कैंटीनमे जमिक' जलखै भेलैक। टमाटरक सलाद भेटबाक कारणे बेस प्रसन्नता भेल सभकेँ। तकर बाद कन्जूमर यूनियनक अध्यक्षसँ गप-सप भेल। दिनुका भोजनक बाद कन्जूमर यूनियनक उपाध्यक्ष जे व्यापारक प्रभारी रहथि, हुनकासँ भेंट भेल। ओ व्यापार प्रक्रियाक सम्बन्धमे हमरा सभकेँ जनतब देलनि। तकर बाद हमरा सभ थोक बिक्रीक डिपो देखबा लेल गेलहुँ। ओत' विभिन्न विभागक काज देखलहुँ। काज करैत

लोककेँ देखलहुँ। श्रीमती तानियाक माध्यमसँ हुनका सभ संग गपो-सप केलहुँ। ओहिठाम लोक सभ रसियनमे गप करय। श्रीमती तानिया हमरा सभकेँ तकर अनुवाद अंग्रेजीमे सुनाबथि। रूसक लोककेँ अंग्रेजी नहि अबैत छैक। ज्ञात भेल जे मात्र दू प्रतिशत लोक एत' अंग्रेजी बाजब जनैत छथि। एहिठामक लोक अपन देशी भाषामे पढ़ैत-लिखैत अछि। ज्ञान-विज्ञान लोक अपन देशी भाषामे अर्जित करैत अछि।

स्ट्राब्लोपोल अयलाक बादसँ एक अपूर्व अनुभव क' रहल छलहुँ। लगैत छल जेना आँखि, मोन, देह सभटा बदलि गेल अछि। नव भ' गेल अछि। सभ किछु पहिनेसँ सुन्दर लागि रहल छल। मास्कोमे लागय जे ठंढायल-कठुआयल सन छी। ठंढ जेना दबने अछि। देहमे एहिठाम जकाँ बिनबिनी नहि रहय। मोन एतेक खनहन नहि लागय। सुन्दर वस्तु एतेक सुन्दर नहि लगैत छल। चारूकात जेना अपूर्व मादकता पसरल लागय। अनुभव भेल जे एतुका मौसम उत्फुल्ल क' देलक अछि। भारतक वसंत ऋतु सन लागि रहल छल। मौसमे सन सम्पूर्ण संसार, मनुक्ख सभ बेसी सुन्दर लागि रहल छल। कोनो सुन्दर युवती आर बेसी सुन्दर लगैत रहय। ध्यान गेल जे अपन आँखि जेना बदलि गेल अछि। ई सभ अनुभव कोनो पहिल अनुभव नहि रहय। मुदा ई बोध पहिले-पहिल भेल रहय। ई ज्ञान स्ट्राब्लोपोलमे भेल। तापमानक परिवर्तन कतेक असरि करैत छैक से ओतहि जाक' बुझलहुँ। ई शहर, गाछ-वृक्ष, फूल-पत्तीसँ भरल-पूरल शहर छल। फूलवारीक शहर एकरा कहल जा सकैत अछि। मकानो सभ जे छल से फूल-पातसँ झँपायल लगैत छल। स्ट्राब्लोपोलमे भोजनो बदलल सन भेटल। लगैत छल जेना भारतीय भोजनकेँ ध्यानमे राखिक' खेबाक वस्तु सभ बनाओल गेल अछि। भोजनो बढ़िया जुटैक, खास क' रातिकेँ।

अट्ठारह मइकेँ स्ट्राब्लोपोलक अनेक दर्शनीय स्थल सभक भ्रमण केलहुँ। सर्वप्रथम ओहिठामक सेन्ट्रल एभेन्यू देखलहुँ जत' लेनिनक पैघ स्टेच्यू अछि आ म्यूजियम अछि। तकरबाद अज्ञात सैनिकक सम्मानमे निरंतर जरैत ज्योति देखलहुँ। विशाल भित्ति चित्र देखलहुँ। जत' तीन मनुक्खक भित्ति चित्र छल। एक असैनिक युद्ध (सिविल वार)मे भाग लेनिहार

सैनिकक, दोसर देशभक्तिपूर्ण युद्ध (पैट्रोनिक वार)मे भाग लेनिहार सैनिकक आ तेसर मातृभूमिक। ओहिठाम प्रत्येक नव विवाहित जोड़ा विवाहक बाद फूल चढ़ेबा लेल अबैत अछि। एक विवाह समारोह सेहो देखलहुँ। विवाह स्थलपर लेनिनक स्टेच्यू रहय। विवाह बहुत सादा-सादी ढंगसँ भेल। कानूनी ढंगक विवाह। किछु बाजा सभ सेहो बाजल। तकर बाद नव विवाहित जोड़ा ओहिठामक लेनिनक स्टेच्यूपर फूल चढ़ौलनि।

ओहिठाम एक कमान्डरक समाधि सेहो अछि। लड़ाइमे शहीद भेल सैनिक सभक प्रति बहुत सम्मान अछि ओत'। एकरे संग साहित्यकार लोकनिक प्रति सम्मान-भाव सेहो अछि ओहिठामक जनतामे। ठाम-ठाम मूर्ति आ म्यूजियम भेटत। हमरा सभकेँ बताओल गेल जे तोल्सताय आ पुश्किन एत' आबि चुकल छथि। जहिना अपन सांस्कृतिक विरासतकेँ जोगाक' रखबाक कौशल जनैत छथि ई लोकनि, तहिना गाछ-वृक्ष, फूल-पात आ हरीतिमा जोगाक' रखबाक हुनर सेहो खूब जनैत छथि। एहि शहरक 9000 आदमी जाहिमे 100 बच्चा रहय, देशभक्तिपूर्ण युद्धमे शहीद भ' गेल। एकरा बचेबाक लेल एक पुरान किलाक देवालकेँ सेहो देखलहुँ। जत' करीब 13 मीटरक एक सिपाहीक स्टेच्यू अछि। ई शहर 200 वर्ष पुरान थिक।

उन्नैस मइकेँ ओहिठाम एक जर्मन सर्कस देखाओल गेल। सेन्ट्रल एभेन्यूमे बैंड पार्टी सभक परेड देखलहुँ। बीस मइकेँ टेक्नीकल स्कूलमे भिनसर जलखै क' हमरा लोकनि ओहिठामसँ 35-40 कि.मी. दूर प्रासपेरिटी जिलामे गेलहुँ। ओत' जिला को-ऑपरेटिव कन्जूमर्स सोसाइटीक कार्यकलाप देखलहुँ। अध्यक्षसँ भेंट भेल। अनेक विशेषीकृत तथा अन्य तरहक दोकान सभ सेहो देखाओल गेल। एक डायनेमो बला टार्च, पेंटिंग कार्ड सभ खरीद केलहुँ, ओही दोकानसँ। जिला को-ऑपरेटिवक दिससँ हमरा सभकेँ शानदार पार्टी देल गेल। खूब आत्मीयतासँ खुऔलक-पीऔलक। एत' हरेक भोज आदिमे भोजनसँ पहिने टोस्ट प्रपोज कएल जाइत अछि। टोस्टक संग शराबक प्याला उठाक' भारत-सोवियत मैत्री अक्षुण्ण रहय, तकर उद्घोष होइत अछि। एहि प्रकारेँ टोस्ट प्रस्तावित केलाक बादे भोजन शुरु करबाक विधान छैक। भोजनक क्रममे कैक गोटे खूबे पीबि

लेलनि। हमरा सभक संग तीनटा बंग्लादेशी बन्धु रहथि। घुरतीमे बसमे ओ लोकनि पीबिक' भावुक भ' गेला। शेख मुजीबकेँ मोन पाड़िक' कान' लगला। बंग्लादेशक संस्थापक शेख मुजीबक प्रति बहुत श्रद्धा आ प्रेम छनि हिनका सभक मोनमे। हमरो सभ भावुक भेलहुँ। मुजीबक प्रति भारतोक लोककेँ बहुत श्रद्धा आ प्रेम छैक।

ओहिठामक भोज सभमे गोमांस, सुअरक माँस आ बकराक माँस आदि खूब परसल जाइत अछि। माँसक भरमार रहैत अछि। एहिसँ हमरा सन किछु लोककेँ बहुत दिक्कत होइत छलैक। पेटो भरबापर आफत। रातिमे करीब आठ बजे स्ट्रोब्लोपोलक होटल कोफेकेज वापस आयल रही।

एक्कैस-बीस मइकेँ भिनसरे तैयार भ' क' एत'सँ 200 कि.मी. दूर एसेन्तुकी स्थानक लेल बससँ हम सभ विदा भेलहुँ। ई स्थान एकदम पहाड़ीपर रहय। रस्तामे रूकिक' एकठाम जलपान आदि कएलहुँ। एहि यात्राक क्रममे गाम सभकेँ देखबाक अवसर भेटल। बहुत दूर-दूरपर कोनो गाम देखाइ देलक। एक-एक परिवारक लेल व्यक्तिगत खपड़ैल, टीन आदि छत बला मकान सभ। लकड़ीक चारूकात बेस प्रयोग कएल गेल छल। एसेन्तुकीमे एक अधिप्राप्ति केन्द्र देखलहुँ। ई कैन्केसस माउन्टेन रिजन एरिया डिस्ट्रीक्ट कन्जूमर्स को-ऑपरेटिव यूनियनक एक शाखा छल। ओहिठामसँ विभिन्न व्यक्तिसँ अनेक प्रकारक वस्तु अधिप्राप्ति अभिकर्ता द्वारा एकट्ठा कयल जाइत अछि तथा पुनः आनठाम पठाओल जाइत अछि।

एहि यात्राक क्रममे सभसँ महत्वपूर्ण रहल कवि एम. भी. लरमेंटोवक समाधिक दर्शन। बेस ऊँच पहाड़ीपर अछि ई स्थान। ओहि स्थानपर एक मूर्ख पुलिस अफसर द्वारा हुनकर हत्या कएल गेल। लरमेंटोवक जन्म 1814मे आ मृत्यु 1841मे भेलनि। पहाड़ीपर रस्तामे मेघ सभसँ सेहो भेंट भेल। मेघकेँ एतेक नजदीकसँ देखबाक ई पहिल अवसर छल। ओहि दिन राजीव गांधी, भारतक प्रधानमंत्री, मास्को आयल रहथि। से हमरा सभकेँ जानकारी भेटल।

बाइस मइकेँ स्ट्राब्लोपोलसँ 25 कि.मी. दूर एक जिला इपाटोवामे गेलहुँ। ओतुका वाइस चेयरपरसन जे एक महिला छली, हमरालोकनिक

स्वागत केलनि। ओत' बेकरी तथा प्रोसेसिंग फैक्टरी देखलहुँ। सभठाम अपन उत्पादन द्वारा हमरा सभक स्वागत भेल। बेरखन वाइस चेयरपरसन द्वारा हमरा सभकेँ शानदार भोज देल गेल। विभिन्न प्रकारक भोज्य पदार्थ परसल गेल। विभिन्न प्रकारक जैम जूस आदि। ओहि दिन कदीमाक जूस सेहो पीअल। ओहि संस्थामे महिलालोकनिक संख्या बेसी छल। ओना को-ऑपरेटिवमे ओत' महिला सभक संख्या बेसी सभठाम बुझाइत छल। रातिमे देशमुखक कोठलीमे बड़ी राति धरि ताश खेलाइत रहल छलहुँ। देशमुख बहुत नीक लोक रहय। पता नहि आब कत' हैत!

तैइस मइकेँ भिनसर स्ट्राब्लोपोल यूनियनक आफिस गेलहुँ। ओत' कैपिटल कन्सट्रक्शनक प्रमुखसँ वार्ता भेल। ओहिठाम को-ऑपरेटिव कन्सट्रक्शन ट्रस्ट नामसँ संस्था अछि जे को-ऑपरेटिवमे विभिन्न प्रकारक निर्माणक काज करैत अछि। को-ऑपरेटिव यूनियन मात्र ओकरा आदेश दैत छैक। वार्ता आदिक बाद बगलक एक गाममे पैघ सन के डिपार्टमेंटल स्टोर देखलहुँ। ओत'सँ 86.28 रूबलमे एक सूट खरीद केलहुँ।

दिनुका खेनाइक बाद किछु निर्माण स्थल देखबा लेल हम सभ गेलहुँ। एकटा कैफेक अपूर्व निर्माण भ' रहल छल। सम्पूर्ण काठक निर्माण। दोसर, किलानुमा निर्माण। ई सभ भवन निर्माणमे कलात्मकताक बेस ध्यान राखि रहल अछि। पुरान स्मृति सभकेँ जोगाक' रखबाक सेहो प्रयास करैत अछि। पहिलुका किलाक नकल क' रेस्टरां, विशेष प्रकारक दोकान तथा बार आदिक सुविधा प्रदान केनाइ बेस कलात्मक अभिरुचिक परिचायक थिक। ओहि दिन मास्को रेडियोसँ हिन्दी गीत सुनलहुँ। ज्ञात भेल जे राजीव गांधीक आगमनपर एखन बेसीकाल हिन्दी गीत बजैत रहैत अछि।

चौबीस मइकेँ स्ट्राब्लोपोलक को-ऑपरेटिवक दोकान सभ देखलहुँ। संगहि स्कूलमे यूथ फेस्टिवलक हेतु तैयार कयल गेल गीत नाट्य आदि सेहो देखलहुँ। एकरा ओ सभ राजनीतिक गीत कहलनि। ओहिमे अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता, शांति आदि लेल कहल गेल छल। ओहिठामक नवयुवक आ नवयुवतीकेँ नेनेसँ शांति तथा मित्रताक पाठ पढ़ौल जाइत अछि। ओहि दिन अधिप्राप्तिक मुख्य अधिकारीसँ सेहो वार्ता केलहुँ। प्राकृतिक वस्तु सभक

अधिप्राप्ति बला दोकान सभ देखलहुँ।

ओहि दिन साँझमे जार्जियाक एक नवयुवक श्री गोचासँ भेंट भेल। ओ हमरा सभकेँ डेस्कीमीर ल' गेला। डेस्कीमीर बच्चा सभक उपयोगक वस्तुजातक दोकान थिक। श्री गोचा संग वार्तालापमे भाषा एक समस्या रहय। ओ रूसी भाषामे बाजथि। दू-चारि शब्द अंग्रेजीक जनैत रहथि। हम सभ दू-चारि शब्द रूसी भाषाक जनैत रही। मुदा गप बढ़ियाँ जकाँ भेल। अद्भुत अनुभव रहल। ओ कहलनि जे हुनका भारतमे घुमबा-फिरबाक बहुत सेहन्ता छनि। ओ ईहो कहलनि जे जार्जियन आ रसियनमे भीतरे-भीतर ईर्ष्या-द्वेष छैक। रसियन सभ हमरा सभकेँ दबब' चाहैत छथि। श्री गोचासँ बहुत आत्मीयता पूर्वक दू घंटा धरि गप-सप होइत रहल। हमरा सभकेँ अनुभव भेल जे भाषाक समस्याक बावजूद ओहिठामक लोकमे भारतीयक प्रति प्रेम उभरिक' समक्ष आबि जाइत अछि। कतेकोकेँ भारत देखबाक इच्छा छनि। भारतीयक सहज मित्र छथि ओ लोकनि। विश्व बन्धुत्वक भावकेँ बुझबाक लेल रूसक ई यात्रा लगैत अछि सदैव स्मरणीय रहत।

पच्चीस मइकेँ हमरा सभकेँ स्ट्राब्लोपोल को-ऑरपेटिव ट्रेनिंग कॉलेजक निदेशकसँ भेंट भेल। हमरा लोकनि प्रशिक्षु सभक प्रशिक्षण लेल चलाओल जा रहल नियमित दोकान सभ सेहो देखलहुँ। क्लास सभ देखलहुँ। व्यावहारिक कक्षामे विषयक हिसाबसँ विभिन्न वस्तु ओ सामान सभ रहय। विक्रेता सभक क्लासमे पाछू दिस छोट-छीन दोकान सभ बनल छल। राजनीतिक अर्थशास्त्रमे टेलीविजन आ स्लाइड आदि देखेबाक व्यवस्था रहय। ओहिठाम प्रशिक्षण दू वर्षक होइत छलैक। एकर बाद साधारणतया को-ऑपरेटिव संस्थानमे ई सभ काज करैत छथि। स्कूलमे म्यूजियम देखलहुँ जे मिलिटरीक महत्तासँ परिचित करबैत छल। को-ऑपरेटिव यूनियनक म्यूजियम सेहो देखलहुँ जत' आरम्भसँ ल' क' अद्यतन गतिविधि आ सक्रियताक सम्बन्धमे चित्र, पत्र, वस्तु सभक माध्यमसँ कथा कहल गेल रहय।

अगिला दिन रवि रहय। ओहि दिन स्ट्राब्लोपोलक नजदीकमे प्राकृतिक सुषमा देखबा लेल गेलहुँ। पहाड़ आ झील देखल। झीलसँ उठैत

मेघक दृश्य बहुत मनोहारी छल। थोड़ेक कालक बाद मेघसँ पूरा वातावरण भरि गेल। चारूकात मेघे मेघ। स्ट्राब्लोपोलक ओ अंतिम राति रहय।

सत्ताइस मइकेँ शहरमे घुमलहुँ-फिरलहुँ। स्ट्राब्लोपोलक टेरीटोरियल यूनियनक उपाध्यक्षसँ भेंट भेल। साँझमे विदाइक अवसरपर नीक पार्टी देल गेल। ओहिठामक ओ अंतिम दिन छल। फेर जिनगीमे सोवियत संघ अयबाक सम्भावना नहिएँ जकाँ अछि। तखन स्ट्राब्लोपोलक मादे की कहल जाय!

साँझमे आठ बजे होटलसँ विदा भ' स्टेशन अयलहुँ। ट्रेन 8.40 बजे रहय। मास्कोक लेल वापस ट्रेनसँ विदा भेलहुँ। विदा स्ट्राब्लोपोल। ट्रेनमे हम अनिल, ललन आ श्रीकान्त एक कम्पार्टमेंटमे रही। सभक नजरि एक किशोरीपर लागल रहल। अपूर्व आकर्षण रहय ओहि किशोरीमे। भरि दिन आ राति ट्रेनमे बीतल। खाइत-पीयैत, गप करैत समय कटैत गेल। ट्रेन धीरे-धीरे चलैत रहल। मास्को दिस बढ़ैत रहल। जँ-जँ मास्को नजदीक अबैत गेल तँ-तँ उत्कंठा बढ़ैत गेल जे मास्को पहुँचलापर देशसँ आएल चिट्ठी-पतरी भेटत। अपन लोकक हाल-चाल बूझब।



भारतीय दल संग श्री ओलेग आ श्रीमती भेलेनटिना

नौ

चौबीस मार्चक भोर छल ओ। सोवियत संघक राजधानी मास्कोक विशाल हवाइ अड्डापर जखन उतरल रही। मोनमे उत्कंठा आ कौतूहलक हिलकोर मचल छल। वातानुकूलित गाड़ीक शीशासँ देखाइत भागल जाइत बिन



मायक छवि

पातक गाछ सभ। रस्ता कात आ दूर-दूर तक पसरल बर्फक अम्बार। खेतमे बर्फ, गाछ पर बर्फ, बर्फक नदी...। उज्जर धवल। बाँहि पसारिक' बजबैत सन। मोन साल भरिक नेना जकाँ किलोल कर' लागल रहय। नमस्कार। हम अहाँ सभक स्वागत करैत छी। होस्टलक रिसेप्शन काउंटरपर बैसल बुजुर्ग सन स्त्री स्नेह भरल आँखिक संग अपन भाषामे स्वागत क' रहल छली। लगले हमरा सभक रहबाक व्यवस्थामे लागि गेली। मोट-सोट शरीर मुदा चुस्ती हुनकर देखबा जोगर। ओहि होस्टलमे तीन मास रहलहुँ। कतहुसँ आबी, कतहु बाहर जाइ, कोनो संदेश, कोनो समाद निधोख हिनका सभकेँ कहि दिअनि। छोट-पैघ सभ समस्याक समाधान लेल ई सभ तत्पर रहल करथि। हम सभ अपन प्रवासक क्रममे जतेक अपन किछु प्रोफेसर आ दुभाषिया सभक नजदीक भेलहुँ, ओतेक ककरहु नहि। एहन प्रोफेसर सभमे श्रीमती एस. कीरा सभ दिन मोन रहती। कोनो जबदाह अप्रिय क्षणक बाद कोना ओ अपन ठोरपर मुस्की लादि लैत छलीह से आश्चर्यक विषय रहय। भव्य व्यक्तित्वक स्वामिनी श्रीमती कीराक स्नेह आ मातृत्व अपूर्व छल। हरदम संग रहनिहारि दुभाषिया सभमे श्रीमती जेनी, श्रीमती तानिया, श्रीमती लुडमिला आ स्ट्राब्लोपोलक भेलेनटीना आदिक संग बीतल छोट-छोट हँसी-ठठ्ठाक भावुकता भरल, अपनत्व भरल क्षण सभ एखन धरि हमर सभक पछोड़ धेने अछि। स्मृति पटल पर ससर' लगैत अछि नहूँ-नहूँ...। हुनकालोकनिक तत्परता व्यक्तिगतसँ ल' क' समूहक समस्याक समाधान लेल उत्सुकता, मेहनति देखबा जोगर रहय। वैह सभ हमरा लोकनिक शब्द आ स्वर रहथि। हुनके माध्यमे ककरोसँ गप कयल जा सकैत छल। अजीब-अजीब अनुभव सभ भेल रहय ओहि सभ क्षणमे। कोनो पार्टी चलि रहल अछि। कोनो शिष्टाचारक निर्वाह करबाक अछि। सभ ठाम हुनका सभक सहयोगसँ हम सभ आह्लादित होइत रहलहुँ। भारतीय चाहक ओ सभ बेस प्रशंसक। हम सभ चाह पीबाक लेल आमंत्रित करियनि। ओही समय चलि पड़य गप। एक दोसराकेँ चिन्हबाक-बुझबाक क्रम। एहि सभमे श्रीमती जेनी बेस

बोल्ड आ फ्रेंक छली। चाह पीबासँ पहिने ओकर सुंगधि अपन नाकमे खूब जोरसँ भरथि। अपन साधल अंग्रेजीमे भारतीय चाहक प्रशंसा करथि आ सुआदि-सुआदिक पीअथि इंदीयन ची। हम सभ सभठाम अपन जिज्ञासा शांत करबाक लेल कतेक तरहक पैघ, छोट प्रश्न क' हिनका सभकेँ परेशान क' दिअनि। मुदा, कखनो कहियो तामस नहि। हरदम ठोरपर मुसकी, आँखिमे स्नेह। अपन तीन मासक प्रवासक दौरान सोवियत नारीक जे पहिल रूप उभरल हमर मोनमे ओ छल अलमस्त, शिक्षित, आत्मविश्वाससँ भरल अपन माटि-पानिसँ जुड़ल एक नीक दोस्त, एक नीक सखाक रूप। बहुत नीक लागय। देखिक', गप क'केँ। भाषाक समस्या सभ दिन बनल रहल। मुदा एक दोसराक भाषासँ अपरिचितो रहला पर कोना गप भ' सकैत छैक, से ओहीठाम बुझलियैक। ककरो संग संवादहीनताक स्थिति नहि आयल। काज चलि जाइत छल। ई बात बहुत बादमे जाक' बुझलियैक जे एहि संतुष्टि, आत्मविश्वास आ अलमस्तीक पाछू एक सम्पूर्ण इतिहास आ एक दृढ़ निश्चयात्मक प्रयास नुकायल छैक। विकासक योजनाबद्ध आ कालबद्ध कार्यक्रम। नारीक रूपमे पहिने एक हजार स्त्रीगणमे आठ सय तिरसठि अशिक्षित रहथि। मात्र अपन घरक काज-उदम करथि। मुदा आब सम्पूर्ण स्त्रीगण समाजक बिरानबे प्रतिशतसँ बेसी स्त्री या त' काज करैत छथि अथवा पढ़ि रहल छथि। मात्र सात प्रतिशतसँ बेसी स्त्रीगण सम्पूर्ण रूपसँ खाली घरक काज करैत छथि। मतलब हाउस वाइफ छथि, घरबाली छथि। नारी लोकनिक जनसंख्यो एत' पुरुषसँ बेसी अछि। सम्पूर्ण कार्यशक्तिक आधासँ ऊपरक भार स्त्रीगणेलोकनिक कान्हपर छनि। एहि देशक कुल चौदह सय जीवन-वृत्तिमेसँ नौ सय चालीसमे स्त्रीलोकनिक भागीदारी छनि आ एहिमे ओ लोकनि प्रशिक्षिता छथि। किछु काज सभमे त' हुनका लोकनिक जेना एकाधिकार छनि। दोकान सभमे काज करैत कोनो पुरुषकेँ हम कतौ नहि देखलियैक। छोट-छोट फैक्टरी सभमे बेसी नारीये काज करैत छथि। ओना हम बसो चलबैत नारीकेँ देखलहुँ मुदा कम। उपभोक्ता सहकारिताक काजमे सेहो बेसी स्त्रीगणे

लोकनिक संख्या। कतेक ठामक जिलास्तरक उपभोक्ता सहकारी संगठनमे अध्यक्षतासँ ल' क' छोट कर्मचारीक रूपमे काज करैत सभ स्त्रीगणे। स्ट्राब्लोपोल क्षेत्रक जिला इपाटोवाक उपभोक्ता सहकारी समितिक उपाध्यक्षक अतिथि सत्कार आ भव्य व्यक्तित्व एखनहुँ मोन पड़ि रहल अछि। अपन व्यावहारिक प्रशिक्षणक क्रममे संग रहनिहारि स्ट्राबलोपोलक उपभोक्ता संघक निदेशक श्रीमती भेलेनटिनाक दयाद्र, मासूम आ सजग चेहरा स्मृतिमे हुलुक-बुलुक कर' लागल अछि। वापस विदा हेबाक काल सभक नोर भरल झलफलाइत आँखिक दृश्य...। फेर कहिया हिनकासँ भेंट हैत? कोनो ठेकान नहि। जीवनमे कहियो भेलेनटिना भेटती ताहिमे संदेह अछि। मुदा पन्द्रह दिनक ओहि कार्यक्रममे ओ जेना जिनगी भरिक परिचिता भ' गेली। लगैये जेना कहियो अनायास फेर भेंट भ' जायत। ओ ओहिना आबेससँ कोनो वस्तु खेबाक आग्रह कर' लगती। ई एहि क्षेत्रक विशेष भोजन थिक। खढ़ियाक माँसक सूप...। अवश्य खाउ...। कोनो पेय पीबाक अनुरोध करती। ई एहि क्षेत्रक फल आ जड़ी-बूटीसँ विशेष रूपेँ तैयार कयल शराब छी, कने चीखिक' देखियौक। से कोना हेतै जे अहाँ कनियो नहि पीबैक? कनियो पीबू। कनियो खाउ। बेस आयाससँ नीक जकाँ खेबाक-पीबाक ममत्व भरल आग्रह। चमकैत आँखि, स्मित हास्य...।

कोनो-कोनो क्षेत्र आ काज विशेषमे नारीवर्गक संख्या पुरुष वर्गसँ बेसी अछि। जेना चिकित्सा, अध्यापन, स्कूलक निदेशक आदिमे। वैज्ञानिको सभमे एक तिहाइसँ बेसी नारी लोकनि छथि। मतलब, जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे सोवियत नारी पुरुषक समाने एक रंग आगू बढ़ि रहल छथि। ई कोना सम्भव भेल अछि? कोना एहन स्थिति प्राप्त केलक ई देश? नियम-कानूनक त' अपन स्थान छैक। मुदा केवल कानूनसँ की होइत छैक। आन देशक संग अपनहुँ देशमे त' अनेक सामाजिक कुरीति लेल कानून अछि, मुदा कतेक पालन होइत अछि समाज द्वारा? बिना सामाजिक जागरण, सामाजिक चेतनाक खाली कानून की करतैक? कानून त' छैक सोवियत संघमे। अवश्य छैक। मुदा कानूनक संग चेतना छैक, जागरूकता

छैक। स्त्री आ पुरुषकें समान अधिकार छैक। कानून लग पुरुष आ स्त्री एकदम बराबर। कानूनक अनुसार एक तरहक काज लेल एक वेतन। स्त्री पुरुष दुनूकें समाने। पति-पत्नी दुनू कमाइत। दुनू मीलिक' गृहस्थीक गाड़ी खींचैत। कियो एक दोसरापर आर्थिक रूपसँ निर्भर नहि। एक समझौतापर टिकल दाम्पत्य जीवन। कोना? पुरुषक पारम्परिक उच्चताक भावना कोना समाप्त भेलैक अछि ओत'? पुरुषक अहं कोना बरदास्त करैत छैक? मुदा ई एक तथ्य छैक जे अक्टूबर क्रांतिक बाद मात्र दू-तीन पीढ़ीमे साल-दर-सालसँ चलि अबैत उच्चताक भावना आ समाजमे पुरुषक प्रधानता एकदमसँ समाप्त नहि त' समाप्तप्राय अवश्य भ' गेलैक अछि। हमरा लगैये जाबत तक प्रत्येक पुरुषक मोनमे स्त्रीगणकें आगू बढ़ेबाक, बढ़' देबाक भावना नहि आयल हेतैक तावत् स्त्रीगण एहि समाजमे कोना आगू बढ़ल होयत! स्त्रीगणक प्रति सम्मान आ आदरक भावना होयब सभसँ पहिने आवश्यक भ' गेल हेतैक एत'। सोवियत संघक नियमानुसार कोनो पुरुष अपन पत्नीक परिवारक नाम उपाधि (सरनेम)कें धारण क' सकैत अछि।

सामाजिक उन्नति आ स्त्रीगण लोकनिक सामाजिक स्थितिक उच्चताक एहि क्रममे किछु नव समस्या सभ सेहो एहि समाजमे उत्पन्न भ' रहल अछि। जेना नवयुवती सभमे शराबखोरीक बढ़ैत मोह। उन्मुक्त जीवन बीतेबाक उद्याम लिप्सा। सभसँ बढ़िक' समाजमे बढ़ि रहल तलाकक संख्या। विशेष कोनो सामाजिक बंधन सभ नहि छैक। यौन-स्वातंत्र्य सेहो छैक ओहिठाम। मुदा एहि सभ सुविधा आ स्वतंत्रताक प्रभाव निश्चित रूपसँ सभटा समाजपर नीके नहि पड़ि रहल छैक। तलाकक त' ई स्थिति अछि जे प्रत्येक एक सय बियाहमेसँ तैंतीस बियाहक परिणति तलाकमे भ' जाइत अछि। शहरमे तलाक बेसी होइत अछि, गाममे कम। निश्चित रूपसँ नारी सभक आर्थिक निर्भरताक अतिरिक्त शहरीकरण, प्रारम्भहिमे प्राप्त यौन प्रौढ़ताक प्रभाव आदि तलाकक कारण बनि रहल अछि। साधारणतः बहुत दिन तक अलग-अलग निवास, बाँझपन आ बेसी

शराब पीनाइ सेहो तलाकक कारण रहैत अछि। हमरा मोन पड़ि रहल अछि एहि क्रममे एक परित्यक्ता सोवियत नारीक उदास चेहरा आ सुन्न-मशान आँखि। केहेन ममतामयी रहथि ओ। हमर मित्र अरशद जमाल दुखीत भ' गेल रहथि। अस्पतालमे भर्ती छला। हम सभ हुनका देख' गेलहुँ। ओहि वार्डमे अरशदक बगलबला बेडपर एक स्त्रीकें देखलहुँ। बयस करीब चालीसक। अरशद कहलनि जे ई स्त्री हुनकर बहुत खोज-खबरि रखैत छथिन। ओ इहो कहलनि जे एक किशोरीक माय एहि नारीकें हुनकर पति छोड़ि देने छथि। कोनो आन स्त्रीक संग रह' लागल छथि। पैंतीस-चालीसक बयस भेलापर कोनो सोवियत नारीकें अक्सरहाँ ई संताप भोग' पड़ैत छनि। हमरा आइयो धरि ओ स्त्री नहि बिसरल छथि। हुनकर उदास-उदास, सुन्न-मशान आँखि कलेजाकें बेधैत रहैत अछि।

मुदा एहि समस्या सभपर सरकार अथवा समाजक नजरि नहि छैक से बात नहि। एक जून 1985सँ लागू मद्यक आंशिक निषेधक कानून एहि दिशामे एक डेग थिक। सरकार लोकमे बढ़ल जाइत मदक्कीपनकें कम कर' चाहैत अछि। कोनो सार्वजनिक स्थलपर पीनाइ आब बंद क' देल गेल अछि। एहि कानूनकें पारित करबासँ पूर्व एकर प्रारूप विभिन्न संस्था सभकें पठाओल गेल रहय। सेन्ट्रोसोयूसमे सेहो आयल रहय। कोनो कानूनक बिल प्रारूपपर ओत' देशक विभिन्न संस्था सभसँ मत तथा अनुशंसा प्राप्त कयल जाइत अछि तखन बिल संसदमे पेश होइत अछि। विलेज सोवियतसँ सुप्रीम सोवियत धरि एहि प्रक्रियाक पालन होइत अछि। हमरा सभ पहिनहि बूझि गेल रही जे ई बिल पारित होअ' बला अछि। एक जूनक बाद कानूनक असरि तुरंते देखलहुँ। पार्टी सभमे शराब परसब बंद भ' गेल। पार्क सभमे बैसिक' पीनाइ कठिन भ' गेल। पीबाक अछि त' घरमे पीबू। सुनलहुँ जे वोदकाक उत्पादन घटि गेल अछि।

तहिना नवविवाहित लोकनिक व्यावहारिक तथा सैद्धांतिक प्रशिक्षण लेल विश्वविद्यालय तथा पारिवारिक सलाह केन्द्रक संचालन सेहो तलाकक समस्याकें कम करबाक एक नीक प्रयास अछि। अपन एक दुभाषिया

श्रीमती तानियाकेँ पुछने रहियनि त' ओ कहने रहथि जे हम दुनू गोटे पति पत्नी घरोक काजमे एक दोसराक हाथ बँटबैत छी। एक दोसराकेँ सहयोग करैतं छी। सुविधानुसार काजकेँ आपसमे बाँटि लैत छी। एकटा समझौता अछि। नीक जकाँ चलि रहलये। सोवियत नारीक संग सोवियत पुरुष डेगमे डेग मिलाक' चलबाक प्रयास क' रहल अछि।

सोवियत नारीक माय रूप बड़ विलक्षण। बेसी लोककेँ एक्केटा संतान। ओना ओत' बेसी संतान लेल सम्मानित कयल जाइत छैक। मुदा बहुसंख्यक दम्पति पालन-पोषण नीक जकाँ करबाक लेल एकेटा संतानकेँ जन्म दैत छथि। से बेटा हो वा बेटी, कोनो अंतर नहि। बेटा नहि हेबाक कोनो संताप नहि। बेटा हो वा बेटी, ओकरा नीक, बलशाली, बुद्धिमान, मेहनती आ निडर बनेबाक कामना बहुत गहीरसँ भरल अछि ओहिठामक माय-बापमे। विशेष क' मायमे। एहि कामनाक अद्भुत झलक देखबामे आयल एक दिन। हम आ श्रीकान्त सिंह अपन होस्टलसँ कतहु टहलै लेल जाइत रही। प्रेलोसकायामे ओहि दिन पानि पड़ल रहैक। एकपेरिया सन रस्तापर कंक्रीट वा अलकतरा नहि बिछल रहय। लाल माटिक रस्ता बरखाक पानिसँ भीजल छल। हम सभ सम्हरि-सम्हरिक', पैर जमाक' बढ़ैत रही। रस्तामे देखलहुँ एकटा पुलियापर एकटा माय अपन एक-डेढ़ बरखक बेटाकेँ चलब सीखा रहल अछि। ओकरा पुलियापर एहि दिससँ ओहि दिस चलिक' जेबाक लेल प्रेरित क' रहल अछि। छौंडा लड़े-लड़े चलबाक क्रममे धुंइ द' खसि पड़ैत छल। हाथ-पैर-मुँहमे माटि लागि जाइत छलैक। मुदा ओ माय आवेगी बनि अपन हाथसँ बच्चाकेँ उठबैत नहि छल। दूरेसँ बाजिक' जोश द' क' उठिक' चलबाक लेल ललकारा दैत छल जेना। बच्चा अपनेसँ उठैत छल फेर आगू दिस बढ़ैत छल आ एहि क्रममे खसि पड़ैत छल। फेर उठिक' ठाढ़ होइत छल। एहिना कोशिश करैत ओ अंततः ओहि पुलियाकेँ पार क' गेल लड़े-लड़े चलैत। हम सभ ई दृश्य देखबाक लेल ठमकि गेलहुँ। ठाढ़ भ' देख' लगलहुँ। अपूर्व दृश्य रहय। बच्चाकेँ एना चलब सिखबैत अपन देशमे नहि देखने रही। अद्भुत

लागल सोवियत नारीक ई रूप।

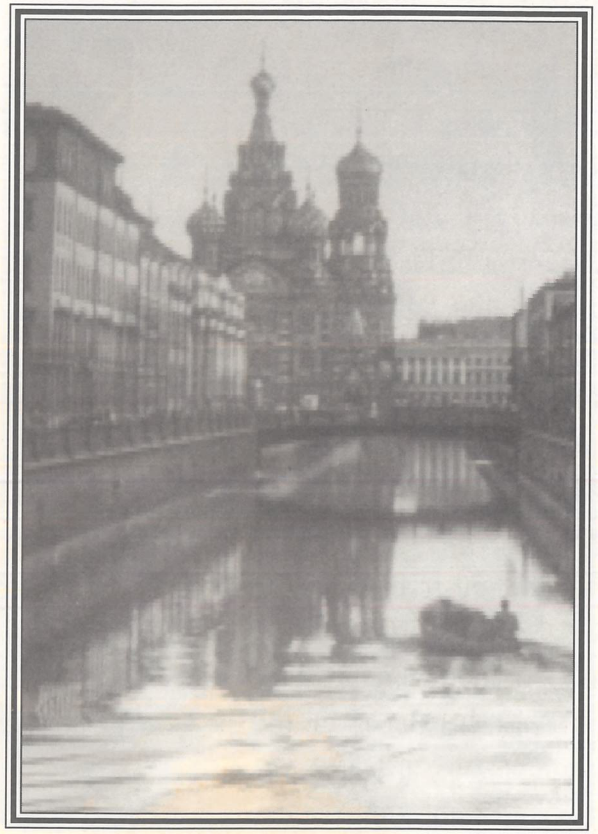
फेरसँ मोन पड़ली स्ट्राब्लोपोलक भेलेनटिना। हुनकर कहल गप मोन पड़ल। एक दिन अपन एकेटा संतानकेँ सम्पूर्ण दुलार दैतं श्रीमती भेलेनटिना कहने रहथि, 'हमरा सभकेँ दोहरा कर्तव्य भ' जाइत अछि संतानक प्रति। एक अपन खूनक तथा दोसर राष्ट्रक। राष्ट्र लेल दू टा हाथ, श्रम कर' बला हाथ तैयार करैत छी हम सभ...।' आ गौरवसँ भरल हुनकर आँखि हम तकिते रहि गेल रही। बड़ मोहक लागल रहय।



हँसैत-खिलखिलाइत दाम्पत्य

दस

सात जूनकेँ हमरा सभकेँ डिप्लोमा देल गेल। एक समारोह एहि अवसरपर आयोजित कयल गेल रहय। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थीकेँ बजाक' सेन्ट्रोसोयूसक रेक्टर श्रीमती बरतानोवा डिप्लोमा बहुत सम्मानपूर्वक प्रदान



लेनिनग्रादक बीचमे बहैत नदी

केलनि। एकर बाद एक चाय पार्टी भेल।

एहिसँ पूर्व स्ट्राब्लोपोलसँ अयलाक बाद भारतीय दूतावास गेल रही। भारतसँ आयल चिट्ठी-पतरीक खोजमे। मुदा ओहि दिन एकोटा नहि भेटल। बादमे कैकटा चिट्ठी भेटल रहय। आनन्द भेल। आब ओहिठाम मोन नहि लागि रहल छल। होइत रहय जे जल्दीये अपन देश घूरि जाइ। ओत' खेबाक-पीबाक कष्ट आब अनुभव कर' लागल छलहुँ। ओना आब पतकोबी आ टमाटर भेट' लागल रहय। मुदा कहियोकाल आलू आ प्याज निपत्ता भ' जाय। ओहिठाम सरकारी आपूर्तिक कारणे एके सामान सभठाम भेटैत रहैक। मोन माफिक खेबाक सामान कतहु नहि भेटय। जे भेटय से खाय पड़य। एहेन विकसित देशमे तरकारी आ अन्य खेबा-पीबाक सामानक आवश्यकतासँ कम आपूर्तिक कारणे बेस दिक्कत।

ओहीठामक मदिरापानक स्थिति देखिक' सेहो हम चिन्तित भेल रही। एक दिन एक गोटाकेँ किताब बेचिक' शराबक बोतल कीनैत देखलहुँ। पी क' झगड़ा करैत देखलहुँ। सूचना भेटल रहय जे सरकारो एहिसँ चिन्तित अछि बहुत दिनसँ। एक जूनसँ मदक्कीपनक विरुद्ध रोक लगेबाक निर्णय भेल अछि। वोदकाक उत्पादन कम कयल जा रहल अछि। सार्वजनिक स्थलपर पीयब आ पी क' बहकबापर रोक लगा देल गेल अछि। ई बहुत नीक डेग ओहिठामक सरकारक रहय। एहिसँ समाजवादी व्यवस्थाकेँ कालांतरमे हानि पहुँचबाक निश्चित संभावना छलैक। लोक अपराध करब प्रारम्भ क' दैत। कियैक त' कोनो हिसाबसँ नशाक व्यवस्था हेबाके चाही। मुदा मदक्कीपनकेँ खतम वा कम होयब बेस मुश्किल काज अछि। टोस्ट प्रपोज करब ओहिठामक भोजक एक वैशिष्टय थिक। ई कर्मकांड ओहिठामक संस्कृतिमे मीलि गेल अछि। तैं एहिमे कठिनाइ त' छैके।

सरकार द्वारा लोककेँ विभिन्न सेवा, लगभग मुफ्तमे प्राप्त हेबाक कारणे आमदनीक पाइ बचि जाइत छैक। बचल पाइसँ को-ऑपरेटिवक घर छोड़िक', कोनो स्थायी सम्पत्ति खरीद नहि सकैत छी। सेहो घर बहुत

सस्त। बिना सूदक दीर्घ अवधिक अनुदानपर। पाइ द' क' ककरोसँ, कोनो लोकसँ श्रम नहि ल' सकैत छी। बैंकक अलावा कतहु पूंजी बढ़ेबाक लेल निवेश नहि क' सकैत छी। तैं जे कमाइ छी तकरा जीवनयापनेमे खर्च कर' पड़त। अपने खाउ, पीबू, गुजर करू, लोककेँ, इष्ट मित्रकेँ खुआउ-पीआउ। पार्टी दिऔ। जीवनमे एकटा शांतिक अनुभव करू। एहि व्यवस्थाक ई एक नीक नीति थिक। केवल दरमाहा बढ़बैत रहलासँ समस्याक समाधान नहि होइत छैक। मुदा उपभोक्ता सामान सभ आवश्यकताक अनुरूप भेटब सुलभ नहि छैक। खेबा-पीबाक सामान सस्त छैक। ओहि समयमे अंडा एक रूबल तीस कोपेकमे दसटा, मुर्गा दू रूबल तीस कोपेकमे एक किलो, माँस दू रूबलमे एक किलो, दूध सोलह कोपेकमे एक लीटर, टमाटर चारि रूबल अस्सी कोपेकमे, अखरोट चारि रूबल साठि कोपेकमे, मूंगफली चारि रूबल नब्बे कोपेकमे, पतकोबी साठि कोपेकमे, खीरा दू रूबल साठि कोपेकमे भेटैत रहय। ओत' लोक माँसाहारी बेसी छल। तैं वैष्णवकेँ बड़ कष्ट। कपड़ा ओत' बेस महग छल। लोककेँ लाइन लगाक' कपड़ा, शर्ट आदि कीनैत देखलियैक। पाइक समस्या नहि रहैक मुदा वस्तुक अभाव रहैक।

हमरा सभकेँ एहि बीचमे एक दिन भारतीय भोजन करबाक सुअवसर भेटि गेल। भारतीय दूतावासक काउंसिलर श्री नायर अपन डेरापर भोज देलनि। इन्स्टीच्यूट आ सेंट्रोसोयूसक अधिकारी लोकनिकेँ सेहो बजाओल गेल रहनि। श्री एवं श्रीमती नायर दुनू बेकती पाहुन सभक आव-भगतमे बहुत पटु रहथि। ओहि भोजमे तीन मासपर बुझू त' भारतीय भोजन सभक खूब आनन्द लेल। ओत' मास्कोमे एक भारतीय द्वारा एहि प्रकारक प्रेम एवं सद्‌भावना देखायब नीक लागल रहय।

आठ जूनक साँझमे हम सभ लेनिनग्राद लेल प्रस्थान केलहुँ। ओहिसँ पूर्व मास्कोमे वोरोजीना पेनोरामा देखलहुँ जत' 1812 ई.मे रूस आ नेपोलियनक संग भेल लड़ाइक वर्णन कएल गेल रहय। पेनोरामा अपूर्व छल। कृत्रिम वस्तु एवं फोटो प्रकाश आदिक प्रभावसँ लड़ाइक स्पष्ट तथा

वास्तविक दृश्य उत्पन्न करबामे कार्यक्रम सफल रहल।

लेनिनग्राद जकरा पहिने पेट्रोग्राद वा पीटर्सवर्ग कहल जाइत छल, अपूर्व शहर अछि। ओहिठाम सभसँ पहिने कलात्मक वस्तु सभक संग्रहालय देखलहुँ। ओहिमे सुन्दर-सुन्दर चित्र, मूर्त्ति सभ देखबाक अवसर भेटल। ओहि संग्रहक पेंटिंग सभमेसँ एक पेंटिंग आइयो धरि मोन अछि। पेंटिंगमे अंधकार सघन रहैक मुदा पूरा गोल चन्द्रमा जेना बाहर निकलि चमकबापर उतारू छल। तकर बाद सम्पूर्ण शहर मोटर वोटपर घुमलहुँ। ई शहर बीचमे बहैत नदीक दुनू कात बसल अछि। एकदम कलात्मक भवन सभसँ भरपूर। एहन व्यवस्थित आ कलात्मक शहर एहिसँ पूर्व नहि देखने रही। क्रांतिक पूर्वक भवन सभकेँ ओहिना ओही रूपमे सुरक्षित राखल गेल अछि। ओहि समयमे ओत' राति नहि होइत छल। चौबीसो घंटा दिने रहैत छल। होटलमे जत' हम सभ टिकल रही, बारह बजेक बाद मोटका करिया पर्दा खींचिक राति केलहुँ। बाहरमे सूर्यक रोशनी ओहिना जगमग करैत रहय। एकदम तेज, दोबर, तेबर, चाँदनी सन छिटकल। लेनिनग्रादक यात्रा एके दिनक छल। रातियेमे हम सभ मास्को लेल प्रस्थान क' गेलहुँ ट्रेनसँ। भिनसर मास्को पहुँचि गेल रही।

पन्द्रह जूनकेँ अपन देश वापस अयबासँ पूर्व हम सभ मास्कोमे घूमैत-फिरैत रहलहुँ। मास्कोकेँ देखैत-सुनैत रहलहुँ। तीन मासक समय कोनो स्थान वा देशकेँ बुझबाक लेल बेसी नहि होइत छैक। संवादक समस्या सभ दिन बनल रहल। रूसी भाषा अबैत रहितय त' कने बेसी सुविधा होइतय। ताहिपरसँ मोनमे एकटा डर सेहो बनल रहय, खुल्लम-खुल्ला गप-सप ककरोसँ करबाक मादे। तैयो सड़कपर, ट्रेनमे, बसमे, मेट्रोमे खूब घुमलहुँ। सभ ठाम देखलहुँ लोक सभकेँ एकदम शांत भ' क' यात्रा करैत। एम्हर-ओम्हर जाइत-अबैत। पर्याप्त भीड़ मुदा कोनो हल्ला-गुल्ला नहि। ट्रेनमे, मेट्रोमे, बसमे चढ़बाक लेल कुश्तम-कुश्ता नहि। सभ लाइनसँ तुरंत चढ़ि-उतरि जाय। पंक्तिबद्ध भ' क' कोनो काज करब ओहिठामक लोकक अद्‌भुत विशिष्टता रहय। यात्रामे कतहु कोनो बस्तुजात

कीनबा-बेसाहबामे, टिकट आदि कटेबामे लोकक आत्मानुशासन अपूर्व छल। एही क्रम सभमे बुझलहुँ जे एहिठामक लोक कतेक पुस्तक प्रेमी अछि। समयक सदुपयोग केनाइ जनैये। ट्रेनमे चढ़लाक बाद करीब अस्सी प्रतिशत लोक अपन बैगसँ किताब अथवा पत्रिका निकालिक' पढ़' लगैत छल। मोट-मोट किताब। किताबक दोकानपर लोकक लाइन लागल देखि बहुत खुशी भेल रहय। ओहिठामक लोक किताब खूब कीनैत अछि। सरकारक दिससँ लाइब्रेरीक सेहो पर्याप्त सुविधा सभठाम देल गेल छैक। ओहि समयमे करीब एक लाख बत्तीस हजार पब्लिक लाइब्रेरी पूरा देशमे लोक सभकेँ पढ़बाक सुविधा प्रदान क' रहल छल। किताबक दाम सेहो बहुत कम रहैत छैक ओहिठाम। मोट-मोट नीकसँ छपल किताबक दाम दू-तीन रूबल देखलियैक। किताबसँ बेसी त' टमाटरक दाम रहय।

कोनो राष्ट्रक निर्माण तथा विकास हेतु ओहि देशक नागरिककेँ स्वस्थ एवं बलशाली रहब कतेक आवश्यक छैक से हम ओहिठाम गेलाक बादे नीक जकाँ बुझलहुँ। ओहिना ओ देश शक्तिशाली नहि भेल छल। ओहि देशकेँ शक्तिशाली बनेबामे ओहि देशक नागरिकक स्वस्थ रूधिर, बलशाली अस्थि, फुर्तीसँ भरल माँसपेशीक योगदान बिसरल नहि जा सकैत अछि। कोनो देशक वास्तविक पूंजी ओहि देशक शारीरिक एवं मानसिक रूपसँ स्वस्थ ओकर नागरिक होइत अछि। एहिमे कोनो संदेह नहि जे दुनियाक सर्वप्रथम समाजवादी देशक सभसँ पैघ पूंजी ओहि देशक अट्ठाइस करोड़ नागरिके अछि। ई दू टा काज कर' बला हाथकेँ स्वस्थ ओ बलशाली रहब बहुत आवश्यक छैक। ओहि देशक सरकार एहि लेल खूब प्रयत्नो करैत अछि। ओना ई कहल जाइत रहल अछि जे समाजवादी व्यवस्थामे व्यक्तिक महत्व कम भ' जाइत छैक। मुदा हम देखलहुँ जे वस्तुतः व्यक्तिये समाजवादी व्यवस्थाक पूंजी भ' गेल अछि। स्वस्थ, बलशाली श्रमिक व्यक्ति। एहि पूंजीकेँ सम्हारिक' राखब व्यवस्थाक काज भ' गेल छैक। एहि दुआरे ओहिठाम व्यक्तिक महत्ता घटलैक अछि नहि। आर क्रमशः बढ़िये रहल छैक। मुदा एक सीमा तक...। जत' धरि

व्यक्तिक समाजमे आवश्यकता छैक। जत' तक समाजकेँ कोनो व्यक्ति जरब देबाक सामर्थ्य नहि अर्जित क' सकय। कहलो गेलैक अछि जे समाजवादी समाजक सभसँ पैघ लक्ष्य व्यक्तिक सर्वांगीण विकास अछि। तैं वास्तविक समाजवादी समाजमे व्यक्ति गौण नहि भ' सकैत अछि। कोनो व्यक्तिक विकासक दायित्व पूरा समाजक भ' जाइत छैक।

ई देश अपन क्षेत्रफलक हिसाबसँ विश्वमे सर्वप्रथम स्थान रखैत अछि। जनवरी 1985क अनुमानित जनगणनाक अनुसार एहि देशक जनसंख्या करीब अट्ठाइस करोड़ भ' गेल अछि। जनसंख्याक आधारपर चीन आ भारतक बाद विश्वमे एकर स्थान तेसर अछि। प्रत्येक एक हजार व्यक्तिपर जन्मदर अस्सी आ मृत्युदर दस अछि। राष्ट्रीय वृद्धि आठ प्रतिशत प्रतिवर्ष औसतन कहल जा सकैये। ओहि देशमे पुरुषसँ बेसी स्त्री लोकनिक संख्या अछि। समूचा जनसंख्याक 46.09 प्रतिशत पुरुष तथा 53.01 प्रतिशत स्त्री छथि। ओहि देशक विशाल क्षेत्रफल मुदा जनसंख्या कम रहलाक कारणे औसतन एक कि.मी.मे केवल बारह व्यक्ति रहैत अछि। भारतसँ विपरीत ओहिठाम आब शहरमे रहनिहारक संख्या सम्पूर्ण जनसंख्याक पैंसठि प्रतिशत एवं गाममे रहनिहारक पैंतीस प्रतिशत अछि। ई वृद्धि समाजवादी क्रांतिक बाद भेल अछि। ओहि देशमे करीब पच्चीसटा पैघ शहर अछि। जाहि मे पहिल मास्को अछि, जकर जनसंख्या पचासी लाख, तकर बाद लेनिनग्राद जकर जनसंख्या सैंतालिस लाख अछि। ई दुनू शहर रसियन फेडरेशन गणराज्यमे पड़ैत अछि। तेसर स्थान यूक्रेन गणराज्यक राजधानी किव (जनसंख्या पचीस लाख) चारिम उजबेकिस्तान गणराज्यक राजधानी ताशकंद अछि। प्रत्येक गणराज्यकेँ ई अधिकार छैक जे ओ संघसँ अलग भ' सकैत अछि। सभक अपन अलग-अलग झंडा छैक। प्रत्येक गणराज्यक सीमा अन्य देशक सीमाकेँ छुबैत अछि। ओहि देशक चरित्र संघ राज्यक अछि। सभसँ पैघ गणराज्य रसियन फेडरेशन अछि जकर जनसंख्या चौदह करोड़सँ बेसी छैक। ओहि देशक एक विशेषता ईहो अछि जे ओ देश यूरोप तथा एशिया दुनू महाद्वीपमे पड़ैत अछि। तैं

दुनू महाद्वीपक संस्कृतिक प्रभाव ओहि देशपर देखल जा सकैत अछि। ओहि देशमे सैकड़ो भाषा बाजल जाइये। सयसँ ऊपर राष्ट्रीयता अछि। लोक विभिन्न जीवनवृत बला अछि। सभकेँ अपन जीवन अपना ढंगसँ जीबाक अधिकार छैक। विभिन्न भाषा, विभिन्न राष्ट्रीयता, विभिन्न संस्कृतिबला ओहि देशक सम्बन्धमे कहल जाइत अछि जे यदि एहि देशकेँ एक जीवित प्राणी मानल जाय त' कम्यूनिस्ट पार्टी एकर स्नायुतंत्र, राज्य एकर ढाँचा एवं लोक एकर माँस अछि। ई तीनू आवश्यक तत्व मीलिक' परस्पर निर्भरतासँ एक सामूहिक उद्देश्यक पूर्तिक दिशामे आगू बढ़ि रहल अछि। ओहिठामक लोककेँ धर्ममे विश्वास लेल संविधान सम्मत अधिकार प्राप्त छैक। यदि ओ चाहय त' कोनो धर्मकेँ मानि सकैये वा यदि चाहय त' नहियो मानि सकैये। अद्यतन आँकड़ाक अनुसार ओहि देशमे धर्ममे विश्वास कयनिहारक संख्या वयस्क जनसंख्याक नौ सँ दस प्रतिशत अछि। धार्मिक स्थान सभपर घृणा अथवा अवज्ञा प्रकट केनाइपर रोक लागल अछि। अपन विभिन्न स्थानक यात्राक क्रममे कतेक गाममे चर्च आदि देखि चुकल छी। एहिसँ ओहि धारणाक खंडन होइत अछि जे ई प्रचार करैत रहल अछि जे समाजवादी समाजमे धर्म समाप्त क' देल जाइत छैक। मुदा ओहि देशमे धार्मिक विद्यालयक स्थापनापर रोक अवश्य अछि। शिक्षा या त' पब्लिक स्कूलमे भ' सकैये अथवा घरमे। पब्लिक स्कूल माने पब्लिक स्कूल, प्राइवेट स्कूल नहि। धार्मिक स्थान यथा चर्च, मस्जिद आदि राज्य व्यवस्थासँ अलग अछि। ओहि देशमे मुस्लिम, ईसाइ तथा ज्यू धर्मावलम्बी लोक सभ छथि। जहिना ओहिठाम धर्मकेँ नहि मानबाक अथवा मानबाक अधिकार छैक तहिना ओहिठामक लोकक इच्छानुसार ओकरा अपन राष्ट्रीयता चुनबाक सेहो अधिकार छैक। ओ जाहि राष्ट्रीयताकेँ चाहय, अंगीकार क' सकैत अछि। प्रत्येक सोवियत व्यक्तिकेँ ओकर सोलहम वर्ष पूरा भेलापर एक आन्तरिक पासपोर्ट देल जाइत छैक, जाहिमे व्यक्ति द्वारा चुनल राष्ट्रीयता अंकित रहैत अछि। ई सभ बात हम 1985 ई. क कहि रहल छी। आब सोवियत संघ कहाँ रहल!

तहिया हमरा सभकेँ अपन देश घुरबाक दिन नजदीक आबि रहल छल। अपन देश, अपन समाज-परिवारसँ भेंटक उत्कंठा बढ़ि रहल छल। तहिना ओहि देशमे बिताओल तीन मासक अवधि सेहो बेर-बेर स्मृतिमे अबैत-जाइत छल। एकटा बिछोह आ एकटा मिलनक भाव मोनकेँ छेकने रहय सदिखन। अन्ततः ओ दिन आबि गेल जहिया हमरा सभकेँ रूससँ विदा लेबाक छल। भोरेसँ अजीब गुनधुन लागल रहल। अंतिम तीन-चारि दिनमे अन्ततः हम एकटा जेनिथ कैमरा सेहो कीनबाक ब्योंत क' लेलहुँ। मुदा ओहि कैमरासँ ओत' कोनो फोटो आदि नहि खीचि सकलहुँ। से कहू त' भारतोमे आबिक' नहि खींचि सकलहुँ। आइयो ओ कैमरा हमरा लग अछि। मुदा आब खराब भेल पड़ल अछि। ओकर फ्लैशगन हेरा गेल अछि। शटर खराब भ' गेल अछि। से सभ अपन मित्रलोकनिकेँ फोटो खींचबाक लेल कैमरा देबाक कारणे भेल अछि। ओहिठाम कीनल ओभरकोट मुदा एखन धरि ओहिना राखल अछि। जहिया कहियो बहुत जाड़ पड़ैत छैक, पाला खस' लगैत छैक त' ओभरकोट पहीरिक' निकलैत छी। ओभरकोट पहीरिक' लगैत अछि जे रूसमे पहुँचि गेल छी। लोककेँ सेहो हमर रूस यात्रा मोन पड़ि अबैत छैक। अपनो मोनमे स्मृति सभ बुल'-टहल' लगैत अछि। मुदा बिना ओभरकोट पहीरनहुँ ओत'सँ विदा हेबाक दिन हमरा ओहिना मोन अछि। एरोड्रोमपर अयलाक बाद हम, श्रीकान्त, ललन सिंह, अनिल आ दलसिंहराय एरोड्रोमक बारमे बैसिक' शराब पीब' लागल रही। हवाइ जहाजकेँ उड़ान भरबामे एखन समय छल। हम सभ लगातार पेगपर पेग ढारने चल जा रहल छलहुँ। शराबक निशामे भरिसक अपनाकेँ गोंतिक' राखि देब' चाहैत छलहुँ। ने पाछू छूटल अतीत मोन रहय, ने आगू आब' बला भविष्य। हम सभ जेना समयक एहि संधिकेँ पकड़िक' राखि लिअ' चाहैत छलहुँ। ओहि क्षणकेँ एकदम रोकि दिअ' चाहैत छलहुँ। से कोना सम्भव छल? मुदा हम सभ समयकेँ बिसरि गेल रही। से मोन पड़ल तखन जखन श्रीमती लुडमिला हमरा सभकेँ तकैत बारमे अयली।

कहलनि जे आब अहाँ सभ चलू। जहाज छुटबाक समय भेल जाइत अछि। हम सभ लड़खड़ाइत पैरे विदा भेल रही। एरोड्रोमक चिक्कन फर्शपर एक गोटे लड़खड़ाक' खसियो पड़ला। हुनका लुडमिला उठाक' सम्हारलनि। तखने एकटा अदभुत दृश्य भेल। अनिलक प्रेमिका नीना हकासल-पीयासल जकाँ दौड़ल आयल। ओकरा हाथमे एकटा चित्र रहैक। कागजसँ नीक जकाँ झाँपल एकटा पेंटिंग। ओ पेंटिंगकेँ अनिलकेँ भेंट करबाक लेल अनने रहय। पेंटिंग द' क' ओ अनिलसँ बेछोह लिपटि गेल। ओकरा भरि पाँजकेँ पकड़ि लेलक। ओकर दुनूक आँखिसँ अविरल नोर बहि रहल छल। ओह, अद्भुत दृश्य रहय। दुनू अलगे नहि होइत छल। कहुना ओहि दुनू प्रेमीकेँ फराक कयल गेल। अनिल आ हम सभ जहाज दिस विदा भेलहुँ। एक बेर पाछू घूरिक' तकलहुँ। नीना ओहिना निनिर्मेष अनिलकेँ देखि रहल छल। आँखिसँ नोर टघरि रहल छलैक। हम सभ जहाजमे जा क' बैसि रहलहुँ। जहाज आब भारत लेल उड़ान भरब शुरु केलक।

हवाइ जहाजमे अपन सीटपर बैसल निशांमे मातल हमर मोनकेँ नीना आ अनिल छेकने रहल। नीना आ अनिलक विदा हेबा कालक आलिंगन दृश्य जेना एकदम फ्रीज भ' गेल रहय। बेर-बेर उभरिक' समक्ष आबि जाय। लागल जेना एहि प्रेममे आर सभ किछु बिला रहल अछि। देश, भाषा, संस्कृति, सभक सीमा टूटि रहल अछि। भेल जेना सभ किछु फूसि थिक। सत्य थिक त' खाली मनुक्ख। मनुक्खक प्रेम। आपसी राग-भाव। पारस्परिक भैयारी। मनुक्खक शांत, सहज, प्रेमपूर्ण आ गरिमापूर्ण जीवन। एहने जीवन जीबैत मनुक्खक समाज।

विदा रूस। विदा मास्को। दसबिदानियाँ...।

****



चिरनिद्रामे लेनिन

नामावली

जनिका लोकनिक चर्च एहि पोथीमे भेल अछि–

लेनिन
विभूति आनन्द
भेलारिन
आर. भेलू
प्रभात झा
विजय कुमार मिश्र
अरशद जमाल
मीना घटगे
अरुण कुमार झा
केशव झा
महेन्द्र कामति
नीतिरंजन झा
मंत्रेश्वर झा
रामानुज प्रसाद सिंह
दिनेश दत्त झा
रमानन्द तिवारी
अनिल अलवेदा
बेंजामिन
ललन सिंह
श्रीकांत सिंह
भोगेन्द्र झा
जयधारी सिंह
नेत्रनाथ झा
शिवशंकर श्रीनिवास
अशोक कुमार झा
भेलेनटिना
तानिया
एम. भी. लरमेंटोव
गोचा
लुडमिला
वरतानोवा
उमेश तिवारी
श्याम नारायण सिंह
एस. एन. लाल
परेश दत्त झा
लक्ष्मीकान्त झा
श्री एवं श्रीमती नायर
एलेक्जेंडर
ए. बी. देशमुख
अनिल
दलसिंहराय
धीरेन्द्र कुमार सिंहा
रेखा
राज कपूर
सुनील दत्त
बलराज साहनी
ओलेग
गणेश बाबू
प्रवीण झा
जी. एन. भट्ट
रवीन्द्र नाथ ठाकुर
कार्ल मार्क्स
एंगेल्स
के. के. रविन्द्रन
नंदा देवी
उमापति झा
सुशील झा
पूर्णकला झा
नीना
गोयल
तपेश्वर सिंह
एस. कीरा
जितेन्द्र



इंडिका इन्फोमीडिया
नई दिल्ली

मूल्य : ₹ 150/-

ISBN : 978-81-89450-21-2